KARYA GRANTHA NO 3



ut- 20056
25-03-13

कुमारसम्भवः

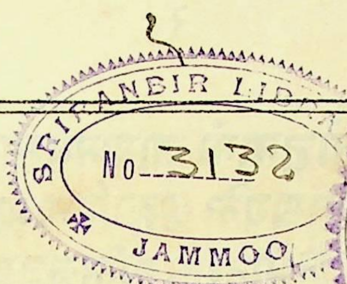
महाकवि कालीदास कृत
और उसका
हिन्दीभाषा मे अनुवाद पण्डित
श्रीसुख दयाल शास्त्री कृत ॥
सप्तम सर्ग पर्यन्त ॥

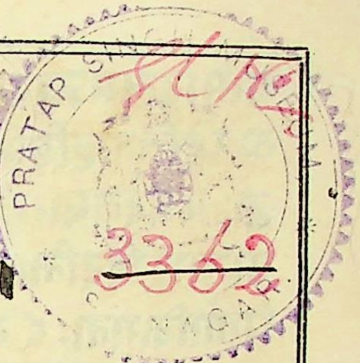
The
Kumára Sambhava
by Kalidása
with its Hindi translation by
Pandit Sukhdyál Shástri
Published under the auspices of the
Punjab University College
1882.

पञ्जाब महाविद्यालय के निमित्त
सन् १८८२ ईसवी
अञ्जुमन इ पञ्जाब प्रेस मे मुद्रित ॥

6256.

Price R: /4/ —





ॐ तत्सत ॥

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः १ यं सर्वशैलाः परिकल्प्य वत्सम् मेरौ स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे भास्वन्ति रत्नानि महौषधीश्च पृथूपदिष्टां दुदुहुर्धरित्रीम् २ अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य हिमं न सौभाग्यविलोपि जातम् एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः ३ यश्चाप्सरोविभ्रममण्डनानां सम्पादयित्रीं शिखरैर्बिभर्ति बलाहकच्छेदविभक्तरागामकालसन्ध्यामिव धातुमत्ताम् ४ ॥

भारतवर्ष की उत्तर दिशा में देवताओं का निवास भूमि पूर्व समुद्र से पश्चिम समुद्र तक पृथिवी के मान दंड की नाईं हिमालय नाम से प्रसिद्ध पर्वतों का राजा (सब से बड़ा पर्वत) है १ राजा पृथु की आज्ञा मान कर गौ बनी हुई पृथ्वी से सारे पर्वतों ने जिस हिमालय को बछड़ा बनाके दोहने में चतुर ग्वाल बने हुए सुमेरु पर्वत के द्वारा बड़ी बड़ी औषधि और बड़े बड़े आश्चर्य रत्न दोह लिये २ और जिस हिमालय से इतने रत्न उपजते हैं कि गिने नहीं जाते इसी से दुःख देने वाला हिम भी उस की शोभा ही बढ़ाता था क्योंकि बहुत से गुण एक दोष को छिपा लेते हैं जैसे पूर्णमासी के चंद्रमा की किरणें कलंक को छिपाती हैं ३ मेघों के खंडों से चित्र वर्ण और अप्सराओं को अपने स्वामी के पास जाने योग्य श्रृंगार कराती हुई अकाल संध्या के समान गेरी आदि धातु जिसके शिखरों में प्रतीत हो रहे हैं ४ ॥

आमेखलंसञ्चरतांघनानांछायामधःसानुगतांनिषेव्यउद्वेजितावृष्टिभिराश्रयन्तेशृङ्गाणियस्यातपवन्तिसिद्धाः ५ पदंतुषारस्रुतिधौतरक्तं यस्मिन्नदृष्ट्वापिहतद्विपानाम् विदन्तिमार्गंनखरन्ध्रमुक्तैर्मुक्ताफलैःकेशरिणांकिराताः ६ न्यस्ताक्षराधातुरसेनयत्र भूर्जत्वचःकुञ्जरबिन्दुशोणाः व्रजन्तिविद्याधरसुन्दरीणामनङ्गलेखक्रिययोपयोगम् ७ यःपूरयन्कीचकरन्ध्रभागान् दरीमुखोत्थेनसमीरणेन उद्गास्यतामिच्छतिकिन्नराणां तानप्रदायित्वमिवोपगन्तुम् ८ कपोलकण्डूःकरिभिर्विनेतुं विघट्टितानांसरलद्रुमाणाम् यत्रस्रुतक्षीरतयाप्रसूतः सानूनिगन्धःसुरभीकरोति ९ ॥

तड़ागी(नितंब)तक घूमते हुए मेघों की छाया में नीचे के शिखरों पर वर्षा से बहुत दुखित होके सिद्ध जन धूप सेकने के लिये जिस हिमालय के ऊपरले शिखरों पर चढ़ जाते हैं ५ और जिस हिमालय के सब स्थानों में पानी की अधिकता से हाथियों को मार कर गये हुए सिंहों के पाओं का चिह्न लोहू के धुल जाने से भूमि पर न देख के भी भील लोग सिंहों के नखों से गिरे हुए मोतियों को देख कर सिंहों का मार्ग जानते हैं ६ सिंदूर आदि धातु बहने से हाथियों के मद कणों की नाईं रक्त वर्ण काम को जगाती हुई अक्षरों की पत्रिका के समान भूर्ज पत्र जिस हिमालय में अप्सराओं के काम में आते हैं ७ और जो हिमालय गुफा नामी अपने मुख से निकले हुए वायु को बांस के छेदों में भर कर ऊंचे स्वर से गाते हुए किन्नरों के साथ तान देने की इच्छा करता है ८ और माथे की खाज हटाने के लिये हाथियों की रगड़ से बहते हुए साल वृक्षों के दूध का गंध जिस हिमालय के सींगों को सुगंधि युक्त करता है ९ ॥

वनेचराणांवनितासखानां दरीगृहोत्सङ्ग-निषक्तभा
सः भवन्तियत्रौषधयोरजन्यामतैलपूराःसुरतप्रदीपाः
१० उद्वेजयत्यङ्गुलिपार्ष्णिभागान् मार्गेशिलीभूतहिमे
ऽपियत्र नदुर्वहश्रोणिपयोधरार्त्ता भिन्दन्तिमन्दांग-
तिमश्वमुख्यः ११ दिवाकराद्रक्षतियोगुहासु लीनंदि
वाभीतमिवान्धकारम् क्षुद्रेऽपिनूनंशरणंप्रपन्ने म-
मत्वमुच्चैःशिरसांसतीव १२ लाङ्गूलविक्षेपविसर्पिशो
भैरितस्ततश्चन्द्रमरीचिगौरैः यस्यार्थयुक्तंगिरिराज
शब्दंकुर्वन्तिवालव्यजनैश्चमर्य्यः १३ यत्रांशुकाक्षे-
पविलज्जितानां यदृच्छयाकिम्पुरुषाङ्गनानाम् द-
रीगृहद्वारविलम्बिबिम्बास्तिरस्करिण्योजलदाभ
वन्ति १४ ॥

जिस हिमालय में राति के समय गुफाओं के अं-
दर भी विना तेल के प्रकाश करती हुई औषधियें अपनी अपनी
स्त्रियों के साथ क्रीडा करते हुए भीलों के दीप बनते हैं १० जिस
हिमालय में जंघा और कुचों के भार से पीड़ित किन्नरियां मार्ग
के सघन हिम से पाओं के दोऊ पासे सड़ने पर भी अपनी विला
स की सहज गति नहीं छोड़ती हैं ११ और जो हिमालय दिन में सू-
र्य से डरे हुए की नाईं गुफाओं में छिपे अंधेरे की रक्षा करता है क्यों
कि प्रतिष्ठित लोग शरण में आए सज्जनो और दुष्टों को एक से ही
जान कर रक्षा करते हैं १२ और चमरी गौ सब अनेक स्थानों में
पुच्छ फेंकने से बहुत शोभित चांदनी के समान गौर वर्ण पुच्छ
के केशों से जिस हिमालय के गिरिराज शब्द को सार्थक क-
रती हैं १३ और जिस हिमालय में स्वभाव से गुफाओं के द्वा-
र पर लटके हुए मेघही वस्त्रों के उतारने से लज्जित किन्न-
रियों की जवनिका (कनात) बन जाते हैं १४ ॥

भागीरथीनिर्झरशीकराणां वोढा मुहुः कम्पितदेव
दारुः यद्वायुरन्विष्टमृगैः किरातैः रासेव्यते भिन्नशिखं
डिबर्हः १५ सप्तर्षिहस्तावचितावशेषाण्यधो विवस्वा
न्परिवर्तमानः पद्मानि यस्याग्रसरोरुहाणि प्रबोधय
त्यूर्ध्वमुखैर्मयूखैः १६ यज्ञाङ्गयोनित्वमवेक्ष्य यस्य
सारं धरित्रीधरणक्षमञ्च प्रजापतिः कल्पितयज्ञभा
गं शैलाधिपत्यं स्वयमन्वतिष्ठत् १७ समानसीं मेरुस
खः पितॄणां कन्यां कुलस्य स्थितये स्थितिज्ञः मेनां मु
नीनामपि माननीयां आत्मानुरूपां विधिनोपयेमे
१८ कालक्रमेणाथ तयोः प्रवृत्ते स्वरूपयोग्ये सुर
तप्रसङ्गे मनोरमं यौवनमुद्वहन्त्या गर्भोऽभवद्भू
धरराजपत्न्याः १९ ॥

गंगा के प्रवाह से जल कणों को अपने साथ लेआते बार बार
देवदारु वृक्षों को हिलाते और मोरों के पर उड़ाते जिस हिमाल
य के वायु को मारने के लिये मृगों के पीछे पीछे घूमते किरा
त (भील) भोगते हैं १५ जिस हिमालय के शिखरों पर तलाओं
में मरीचि आदि सात ऋषियों के तोड़ने से शेष कमलों को नीचे
घूमता हुआ सूर्य ऊपर को मुख करके खिलाता है १६ और ब्रह्म
जी ने यज्ञ के अंग (सोमलता आदि) की उत्पत्ति और पृथ्वी धार
ण करने की सामर्थ्य देख कर जिस हिमालय को यज्ञ के भा
ग का अधिकारी पर्वतों का राजा आपही बनाया १७ और कु
ल की रीति में चतुर सुमेरु के मित्र उस हिमालय ने वंश बढ़ा
ने के लिये सब गुणों से अपने जैसी वेदांत, पातंजल शास्त्रों में
ऋषियों से भी चतुर मरीचि आदि पितरों की मन से उपजी हुई
कन्या मेना वेद की रीति से विवाह ली १८ जब ये दोनों स्त्री पुरुष
अपने सौंदर्य के योग्य संभोग क्रीड़ा करने लगे तो थोड़े ही समय
में पर्वतों के राजा हिमालय की स्त्री को गर्भ हुआ १९ ॥

असूतसानागवधूपभोग्यं मैनाकमम्भोनिधिबद्धसख्यम् क्रुद्धेऽपिपक्षच्छिदिवृत्रशत्रा ववेदनाज्ञंकुलिशक्षतानाम् २० अथावमानेनपितुःप्रयुक्ता दक्षस्य कन्याभवपूर्वपत्नी सतीसतीयोगविसृष्टदेहा तांजन्मनेशैलवधूंप्रपेदे २१ साभूधराणामधिपेनतस्यां समाधिमत्यामुदपादिभव्या सम्यक्प्रयोगादपरिक्षतायां नीताविवोत्साहगुणेनसम्पत् २२ प्रसन्नदिक्पांसुविविक्तवातं शङ्खस्वनानन्तरपुष्पवृष्टि शरीरिणांस्थावरजङ्गमानां सुखायतज्जन्मदिनंबभूव २३ तयादुहित्रासुतरांसवित्री स्फुरत्प्रभामण्डलयाचकाशे विदूरभूमिर्नवमेघशब्दा दुद्भिन्नयारत्नशलाकयेव २४ ॥

पर्वत आदि के पक्ष काटने में तत्पर वृत्रासुर के शत्रु इंद्र के क्रोध करने पर भी वज्र की पीड़ा न जानने वाला समुद्र का मित्र सर्पिणिओं का स्वामी मैनाक नामी पुत्र मेना से उत्पन्न हुआ २० मैनाक के जन्म से पीछे महादेव की पहिली स्त्री पतिव्रता दक्ष की कन्या सती पिता के निरादर से योग की आग में प्राण छोड़ कर फिर उपजने के अर्थ हिमालय की स्त्री (मेना) के गर्भ में आई २१ भली भांति प्रयोजन में लाने से भी दृढ़ नीति में उत्साह गुण से संपदा की नाईं अपनी पतिव्रता स्त्री मेना में पर्वतों के राजा हिमालय से मंगल मूर्त्ति वह उत्पन्न हुई २२ निर्मल आकाश में धूलि से विना स्वच्छ मंद वायु वह कर शंखों की ध्वन होने से पीछे फूलों की वर्षा होने से उस दिन मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट और वृक्ष आदि सब जीवों को बड़ा आनंद हुआ २३ नये मेघ की गर्ज से फटी हुई रत्नों की रेखा से पथरैली भूमि की नाईं अंधेरे में प्रकाश करती हुई उस कन्या से मेना बहुत शोभित हुई २४ ॥

दिनेदिनेसापरिवर्द्धमाना लब्धोदयाचान्द्रमसीव
लेखा पुपोषलावण्यमयान्विशेषान् ज्योत्स्नान्तरा
णीवकलान्तराणि २५ तांपार्वतीत्याभिजनेननां
म्ना बन्धुप्रियांबन्धुजनोजुहाव उमेतिमात्रातपसो
निषिद्धा पश्चादुमाख्यांसुमुखीजगाम २६ महीभृतः
पुत्रवतोऽपिदृष्टि स्तस्मिन्नपत्येनजगामतृप्तिम् अ
नन्तपुष्पस्यमधोर्हिचूते द्विरेफमालासविशेषसङ्गा
२७ प्रभामहत्याशिखयेवदीप स्त्रिमार्गयेवत्रिदि
वस्यमार्गः संस्कारवत्येवगिरामनीषी तयासपूतश्च
विभूषितश्च २८ मन्दाकिनीसैकतवेदिकाभिः साक
न्दुकैः कृत्रिमपुत्रकैश्च रेमेमुहुर्मध्यगतासखीनां
क्रीडारसंनिर्विशतीवबाल्ये २९ ॥

उदय होने से पीछे अर्थात् शुक्ल पक्ष में बढ़ती हुई चंद्रमा की रेखा
जैसे प्रतिदिन अपनी चांदनी से भरी कलाओं को बढ़ाती है इसी भांति
उत्पन्न होने से पीछे वह कन्या प्रतिदिन सौंदर्य से भरे हुए अपने अंगों
को बढ़ाती थी २५ और संबंधियों की प्यारी उस कन्या को संबंधी लोग
पिता आदि पर्वतों के संबंध से पार्वती कहते थे पीछे से जब मेना
ने उ॰ मा॰ ऐसे कह कर उस तपस्या से हटाया तो उस का नाम उमा हु
आ २६ बहुत संतति होने पर भी हिमालय की दृष्टि पार्वती को देख
देख तृप्त नहीं होती थी जैसे वसंत ऋतु में कई भांति के आश्चर्य
आश्चर्य फूल होते हैं पर भौंरों की पांति आम के वृक्ष पर ही आनंद
से बैठती है २७ बड़ा प्रकाश करती हुई शिखा (जोति) से दीप की ना
ई मंदाकिनी (स्वर्ग की गंगा) के प्रवाह से स्वर्ग के मार्ग की नाईं और व्या
करण के द्वारा शुद्ध वाणी से बुद्धिमान पुरुष की नाईं उस कन्या से वह
हिमालय पवित्र और शोभित हुआ २८ सखियों से घिरी हुई वह पा
र्वती बाल अवस्था में गंगा के तट पर रेत में बनी हुई वेदी के नी
चे गेंदों और पुतलियों के बनाये पुत्रों से खेलती थी मानों विष
य रस को ही भोगती थी २९ ॥

तां हंसमालाः शरदीव गङ्गां महौषधिं नक्तमिवा
त्मभासः स्थिरोपदेशामुपदेशकाले प्रपेदिरे प्राक्त
नजन्मविद्याः ३० असंभृतं मण्डनमङ्गयष्टेरना
सवाख्यं करणं मदस्य कामस्य पुष्पव्यतिरिक्तमस्त्रं
बाल्यात्परं साथ वयः प्रपेदे ३१ उन्मीलितं तूलिकये
व चित्रं सूर्यांशुभिर्भिन्नमिवारविन्दम् बभूव तस्याश्च
तुरस्रशोभि वपुर्विभक्तं नवयौवनेन ३२ अभ्युन्नता
ङ्गुष्ठनखप्रभाभिर्निक्षेपणाद्रागमिवोद्गिरन्तौ आ
जह्रतुस्तच्चरणौ पृथिव्यां स्थलारविन्दश्रियमव्य-
वस्थाम् ३३ सा राजहंसैरिव संनताङ्गी गतेषु लीला
ञ्चितविक्रमेषु व्यनीयत प्रत्युपदेशलुब्धैरादित्सु
भिर्नूपुरसिञ्जितानि ३४ ॥

शरद ऋतु में गंगा को हंसों की पांति के समान, और राति में ब-
ड़ी ओषधि को अपने प्रकाश की नाईं उपदेश के समय दृढ़ संस्कार
से पिछले जन्म की सब विद्या उस पार्वती को प्राप्त हुई ३० बाल अ-
वस्था से पीछे वह पार्वती स्वभाव से ही शरीर के भूषण, मदिरा से
विना मद के हेतु और फूलों से विना कामदेव के अस्त्र नये यौवन
को प्राप्त हुई ३१ लेखिनी से रंगी हुई मूर्त्ति की नाईं और सूर्य के
प्रकाश से फूले हुए कमल की नाईं नये यौवन से खिली हुई पा-
र्वती की देह सब ओर से सुंदर मालूम होती थी ३२ चलने के स-
मय आगे से ऊंचे नखों की कांति से रंग को बाहर फेंकते उस
पार्वती के पाओं ने चलती फिरती स्थल कमल की शोभा हरली
३३ और कुच आदि अंगों के भार से नमी हुई उस पार्वती को नेव-
र का शब्द सीखने की इच्छा से बड़े लोभी हंसों ने मानों वि-
लास से चलना सिखाया ३४ ॥

हत्तानुपूर्वे च न चातिदीर्घे जङ्घे शुभे सृष्टवतस्तदीये शेषाङ्गनिर्माणविधौ विधातुर्लावण्यउत्पाद्य इवास यत्नः ३५ नागेन्द्रहस्तास्त्वचि कर्कशत्वा देकान्तशैत्यात्कदलीविशेषाः लब्ध्वापि लोके परिणाहि रूपं जातास्तदूर्वोरुपमानवाह्याः ३६ एतावता नन्वनुमेयशोभि काञ्चीगुणस्थानमनिन्दितायाः आरोपितं यद्गिरिशेन पश्चा दनन्यनारीकमनीयमङ्कम् ३७ तस्याः प्रविष्टा नतनाभिरन्ध्रं रराज तन्वी नवलोमराजिः नीवीमतिक्रम्य सितेतरस्य तन्मेखलामध्यमणेरिवार्चिः ३८ मध्येन सा वेदिविलग्नमध्या वलित्रयं चारु बभार बाला आरोहणार्थं नवयौवनेन कामस्य सोपानमिव प्रयुक्तम् ३९ ॥

गोलाकार मंगलमूर्ति (सौंदर्य सो भरी ऊई) थोड़ी लंबी गाय की पूछ के समान ढलती ऊई उस पार्वती की जंघा उपजा कर और अंगों के सौंदर्य उपजाने में ब्रह्मा जी को वड़ा यत्न ऊआ ३५ त्वचा की कठोरता से ऐरावत आदि हाथियों के सूंड और निरंतर शीतल होने से केले के थंभ जगत मे वऊत सुंदर रूप पाकर भी पार्वती की जंघा के उपमान नही हो सके ३६ कोई स्त्री महादेव के जिस अंक को मन से भी नहीं पऊंच सकती तपस्या करने से पीछे उसी अंक पर विठाने से पार्वती के नितंब की शोभा जगत के सारे पदार्थों से अधिक मालूम ऊई ३७ धोती की गांठ लंघ के नाभि के गहरे छेद में पऊंच कर मेखला (तड़ागी) में जड़े ऊए नीलमणि की किरण के समान उस पार्वती के रोमों की पांति वड़ी शोभित ऊई ३८ अपने स्वामी कामदेव के चढ़ने के लिये नये यौवन की वनाई ऊई पैड़ी के समान उस पार्वती के वड़े सूक्ष्म मध्य में (नाभि के नीचे) बड़े सुंदर तीन बल पड़ते थे ३९ ॥

अन्योन्यमुत्पीडयदुत्पलाक्ष्याः स्तनद्वयं पाण्डु त-
थाप्रवृद्धम् मध्ये यथा श्याममुखस्य तस्य मृणाल-
सूत्रान्तरमप्यलभ्यम् ४० शिरीषपुष्पाधिकसौकु-
मार्य्यौ वाहू तदीयाविति मे वितर्कः पराजितेनापि
कृतौ हरस्य यौ कण्ठपाशौ मकरध्वजेन ४१ क-
ण्ठस्य तस्याः स्तनबन्धुरस्य मुक्ताकलापस्य च
निस्तलस्य अन्योन्यशोभाजननाद्बभूव साधार
णो भूषणभूष्यभावः ४२ चन्द्रं गता पद्मगुणान्न
भुङ्क्ते पद्माश्रिता चान्द्रमसीमभिख्याम् उमामुखन्तु
प्रतिपद्य लोला द्विसंश्रयां प्रीतिमवाप लक्ष्मीः ४३
पुष्पं प्रवालोपहितं यदि स्यान्मुक्ताफलं वा स्फुटवि
द्रुमस्थम् ततोऽनुकुर्याद्विशदस्य तस्यास्ताम्रौ-
ष्ठपर्य्यस्तरुचः स्मितस्य ४४ ॥

कमल जैसे नेत्रों से शोभित उस पार्वती के गौर वर्ण आगे से काले आ
पस में एक दूसरे को दवाते हुए दोऊ स्तन ऐसे बढ़े कि उन के बीच में
से कमल के नाल का सूत्र भी नहीं लेंच सकता था ४० हारे हुए भी काम
देव ने महादेव के गले में फांस की नाईं जो डाल दीं वे पार्वती की भुजा
शुभे सिरीस के फूल से भी बहुत कोमल मालूम होती हैं ४१ आप
स में एक दूसरे की शोभा बढ़ाने से गोल मोतियों का हार कंठ का
और स्तनों के बढ़ने से ऊंचा उस पार्वती का कंठ हार का भूषण
मालूम होता था ४२ स्वभाव से चंचल लक्ष्मी चंद्रमा में जाकर
सुगंधि आदि कमल के गुणों को और कमल पर बैठ के चंद्रमा
की शोभा को नहीं भोगती परंतु पार्वती के मुख पर जाके
लक्ष्मी दोनों आनंदों को प्राप्त हुई ४३ नये पत्तों पर यदि श्वेत फू
ल रखे जावें अथवा मूंगियों पर मोती रखे जावें तव रक्त ओठों
पर शोभायमान उस पार्वती के श्वेत हसने का अनुकरण हो ४४ ॥

स्वरेणतस्याममृतस्रुतेव प्रजल्पितायामभि
जातवाचि अप्यन्यपुष्टाप्रतिकूलशब्दा श्रोतुर्वि
तन्त्रीरिवताड्यमाना ४५ प्रवातनीलोत्पलनि-
र्विशेषमधीरविप्रेक्षितमायताक्ष्या तयागृहीतं
नुमृगाङ्गनाभ्यस्ततोगृहीतंनुमृगाङ्गनाभिः ४६
तस्याः शलाकाञ्जननिर्मितेव कान्तिर्भ्रुवोराय
तलेखयोर्या तांवीक्ष्यलीलाचतुरामनङ्गः स्वचा
पसौन्दर्यमदंमुमोच ४७ लज्जातिरश्चांयदिचेत-
सिस्या दसंशयंपर्वतराजपुत्र्याः तंकेशपाशंप्रस
मीक्ष्यकुर्युर्वालप्रियत्वंशिथिलंचमर्य्यः ४८ स
र्वोपमाद्रव्यसमुच्चयेन यथाप्रदेशंविनिवेशिते-
न सानिर्मिताविश्वसृजाप्रयत्ना देकस्थसौन्द-
र्य्यदिदृक्षयेव ४९ ॥

बोलने में बड़ी मीठी उस पार्वती का अमृत बहाते स्वर से बोलना सुनने हुए लोगों को उलटी बांधी हुई वीणा के समान कोकिला का शब्द भी कोड़ा मालूम होता था ४५ यह नहीं मालूम होता कि बड़ी वायु में कांपते नील कमल की नाईं लंबी आंखों से चंचल देखना पार्वती ने हरिणियों से अथवा हरिणियों ने पार्वती से सीखा है ४६ विलास में निपुण काजर की सलाई से खेंची हुई रेखा के समान उस पार्वती के लंबे भवों की सुंदरता देख कर कामदेव ने अपने धनुष की सुंदरता का अहंकार (गर्व) छोड़ दिया ४७ पार्वती के प्रसिद्ध उन केशों को देख के भी चमर गौओं ने अपने केशों का प्रेम और मद नहीं छोड़ा इससे निश्चित मालूम होता है कि पशुओं के चित्त में लज्जा नहीं होती ४८ सारे जगत की सुंदरता एक स्थान में इकट्ठी कर के देखने की इच्छा से जिस जिस अंग को जिस जिस पदार्थ की उपमा दी जाती है ब्रह्मा जीने उन उन पदार्थों से सारे अंग रच कर पार्वती बनाई ४९ ॥

तां नारदः कामचरः कदाचित् कन्यां किल प्रेक्ष्य पितुः समीपे समादिदेशैकवधूं भवित्रीं प्रेम्णा शरीरार्द्धहरां हरस्य ५० गुरुः प्रगल्भेऽपि वयस्यतोऽस्यास्तस्थौ निवृत्तान्यवराभिलाषः ऋते कृशानोर्नहि मन्त्रपूतमर्हन्ति तेजांस्यपराणि हव्यम् ५१ अयाचितारं नहि देवदेव मद्रिः सुतां ग्राहयितुं शशाक अभ्यर्थनाभङ्गभयेन साधुर्माध्यस्थमिष्टेऽप्यवलम्बतेऽर्थे ५२ यदैव पूर्वे जनने शरीरं सा दक्षरोषात्सुदती ससर्ज तदाप्रभृत्येव विमुक्तसङ्गः पतिः पशूनामपरिग्रहोऽभूत् ५३ स कृत्तिवासास्तपसे यतात्मा गङ्गाप्रवाहोक्षितदेवदारु प्रस्थं हिमाद्रेर्मृगनाभिगन्धि किञ्चित्क्वणत्किन्नरमध्युवास ५४ ॥

अपनी इच्छा से घूमते हुए नारद ने किसी समय अपने पिता हिमालय के पास बैठी हुई उस पार्वती को देख कर कहा कि प्रेम से आधा आसन हर के यह पार्वती महादेव की एक प्यारी बहू होगी ५० नारद के इसी वाक्य से पार्वती की बड़ी अवस्था होने पर भी पिता हिमालय ने और वर को देने की इच्छा नहीं की क्यों कि मन्त्र पढ़ के दी हुई आहुति को वह्नि से विना स्वर्ग आदि और कोई तेज नहीं ले सकता ५१ और वह हिमालय मांगने से विना महादेव को भी आप बुलाकर कन्या नहीं दे सका क्यों कि सज्जन पुरुष अपना कहा व्यर्थ जाने के डर से बड़े प्यारे कार्य में भी उदास ही रहते हैं ५२ पहिले जन्म में पिता (दक्ष) के क्रोध से दांतों से सोहनी उस सती ने जिस दिन देह छोड़ी उसी दिन से पशुओं स्वामी महादेव ने विषय वासना के साथ ही स्त्री का संग छोड़ दिया ५३ मृग का चमड़ा ओढ़ चित्त को स्थिर कर के उस महादेव ने तपस्या करने के लिये कस्तूरे मृगों और गान करते किन्नरों से भरे हुए हिमालय के किसी शिखर पर गंगा के प्रवाह से भीगे हुए दियारों के नीचे निवास किया ५४ ॥

गणा नमेरुप्रसवावतंसा भूर्जत्वचः स्पर्शवतीर्द
धानाः मनःशिलाविच्छुरिता निषेदुः शैलेयनद्धेषु
शिलातलेषु ५५ तुषारसङ्घातशिलाः खुराग्रैः सम
ल्लिखन्दर्पकलः ककुद्मान् दृष्टः कथञ्चिद्गवयैर्विवि
ग्नैरसोढसिंहध्वनिरुन्ननाद ५६ तत्राग्निमाधाय स
मित्समिद्धं स्वमेव मूर्त्यन्तरमष्टमूर्तिः स्वयं विधाता त
पसः फलानां केनापि कामेन तपश्चचार ५७ अनर्घ्य
मर्घ्येण तमद्रिनाथः स्वर्गौकसामर्चितमर्चयित्वा आ
राधनायास्य सखीसमेतां समादिदेश प्रयतां तनूजा-
म् ५८ प्रत्यर्थिभूतामपि तां समाधेः शुश्रूषमाणां गि
रिशोऽनुमेने विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतां
सि त एव धीराः ५९ ॥

सुरगन नाम फूलों के भूषण और भुर्जपत्र के वस्त्र पहिन कर अंगों
में मनसिल लगाए महादेव के नंदी, हतमुख, आदि गण शिला जी
त से लिपटे हुए पत्थरों पर बैठे ५५ डर से बहुत खिन्न गवयों (गोंदों)
के सामने सिंह का शब्द न सहार कर महादेव का वृषभ नंदी कठिन हिम
की शिलाओं को खुरों से खोद खोद के गर्व की मीठी वाणी से बड़ा ऊंचे
गर्जने लगा ५६ उस हिमालय में समिधाओं (काष्ठों) से बढ़ी हुई अप
नी एक मूर्ति आग को रख कर इंद्रलोक आदि तपस्याओं के फल देने में
सम्पूर्ण पृथिवी आदि आठ मूर्तियों से प्रसिद्ध महादेव ने किसी कामना
से तप किया ५७ पर्वतों के राजा हिमालय ने अर्घ्य आदि पदार्थों से देव
ताओं के पूजित सर्वोत्कृष्ट महादेव का पूजन कर के शिव की भक्ति
में पक्की जया और विजया नामी सखियों से मिली हुई अपनी कन्या
पार्वती को शिवपूजन की आज्ञा दी ५८ तपस्या से मन को हटाती हु
ई भी अपनी सेवक पार्वती का महादेव ने तिरस्कार नहीं किया क्यों
कि विकारों के कारणों में बैठ के जिनके मन नहीं बिगड़ते वेही धी
र होते हैं ५९ ॥

अवचितवलिपुष्पा वेदिसम्मार्गदक्षा निय
मविधिजलानां वर्हिषांचोपनेत्री गिरिशमुप
चचार प्रत्यहंसासुकेशी नियमितपरिखेदा
तच्छिरश्चंद्रपादैः ६० इतिश्रीकालिदासकृतौ
महाकाव्येकुमारसम्भवेउमोत्पत्तिर्नामप्रथमः
सर्गः १ ॥

संध्यावंदन आदिनित्य कर्म के लिये कुशा, जल और पूजा के फूल अपने हाथों से लेआ कर पूजा के स्थान पर लेपन देने में चतुर केशों से सोहनी वह पार्वती शिवजी के माथे पर चमकती चंद्रमा की कला देखने से सारी थकाहट छोड़कर प्रतिदिन महादेव की सेवा-करने लगी ६० ॥

पंडित् सुखदयालु का बनाया कुमारसंभव के पहिले सर्ग का हिंदी में अनुवाद समाप्त हुआ १ ॥ ॥

द्वितीयः सर्गः ॥

तस्मिन्विप्रकृताःकाले तारकेणदिवौक
सः तुरासाहंपुरोधाय धामस्वायम्भुवंय
युः १ तेषामाविरभूद्ब्रह्मा परिम्लानमुख
श्रियाम् सरसांसुप्तपद्मानां प्रातर्दीधिति-
मानिव २ अथसर्वस्यधातारं तेसर्वेसर्वतो
मुखम् वागीशंवाग्भिरर्थ्याभि प्रणिपत्योप
तस्थिरे ३ नमस्त्रिमूर्त्तयेतुभ्यं प्राक्सृष्टेःके
वलात्मने गुणत्रयविभागाय पश्चाद्भेदमु
पेयुषे ४ यदमोघमपामन्त रुप्तंबीजमज
त्वया अतश्चराचरंविश्वं प्रभवस्तस्यगीयसे ५

इसी अवसर में वज्रनख के पुत्र तारक नामी असुर से बहुत दुखि
त सारे देवता इंद्र को प्रधान बना कर ब्रह्मा जी के स्थान (ब्रह्म-
लोक) को गये १ मिचे हुए कमलों से भरे हुए सरोवरों को प्रातः
काल के समय सूर्य के समान मुख की शोभा मलिन होजाने से
बड़े दीन उन देवताओं को ब्रह्मा जी ने प्रगट होकर दर्शन दिया २
ब्रह्मा जी का दर्शन करने से पीछे चार मुखों से शोभित सारा ज
गत उपजाने के प्रभु विद्याओं के स्वामी ब्रह्मा जी की उन सब देवता
ओं ने प्रणाम कर के उत्तम अर्थों से भरे हुए वचनों के द्वारा स्तुति
की ३ हे भगवन् जगत उपजने से पहिले एक परब्रह्म की मूर्त्ति पी
छे से रजोगुण, सत्वगुण और तमोगुण के भेद से ब्रह्मा विस्नु और
शिव इन तीनमूर्त्तियों को धारण कर के जगत् की उत्पत्ति पालन औ
र नाश करने हुए आपको नमस्कार हो ४ हे भगवन् जो सफल बी
ज आप ने जल में बोया (फेंका) था उसीसे सारा चल अचल जगत
उपजा इस लिये सब ग्रंथकार जगत के कारण आपको कहते हैं ५॥

तिसृभिस्त्वमवस्थाभिर्महिमानमुदीरयन् प्रलयस्थितिसर्गाणामेकः कारणतां गतः ६ स्त्रीपुंसावात्मभागौ ते भिन्नमूर्तेः सिसृक्षया प्रसूतिभाजः सर्गस्य तावेव पितरौ स्मृतौ ७ स्वकालपरिमाणेन व्यस्तरात्रिंदिवस्य ते यौ तु स्वप्नावबोधौ तौ भूतानां प्रलयोदयौ ८ जगद्योनिरयोनिस्त्वं जगदन्तो निरन्तकः जगदादिरनादिस्त्वं जगदीशो निरीश्वरः ९ आत्मानमात्मना वेत्सि सृजस्यात्मानमात्मना आत्मना कृतिना च त्वमात्मन्येव प्रलीयसे १० द्रवः संघातकठिनः स्थूलः सूक्ष्मो लघुर्गुरुः व्यक्तोऽव्यक्तेतरश्चासि प्राकाम्यं ते विभूतिषु ११ ॥

हे भगवन् ब्रह्मा विष्णु और शिव इन तीन मूर्त्तिओं से अपनी सामर्थ्य का विस्तार करके तू एक ही जगत को उपजा के पालन और नाश करता है ६ हे भगवन् सृष्टि करने की इच्छा से तूने स्त्री और पुरुष नाम से प्रसिद्ध अपनी देह के जो दो खंड किये थे वे ही दोऊ सारे जगत के माता और पिता कहाते हैं ७ चार सहस्र युग का दिन और इतने ही युगों की राति बनाकर राति में आपका सोना जगत प्रलय (नाश) और दिन में आपका जागना ही जगत की उत्पत्ति है ८ हे भगवन् जिस का कोई कारण नहीं ऐसा जगत का कारण, जिस का नाश कोई न कर सके ऐसा जगत के नाश का हेतु, जिस का आदि नहीं हो सके ऐसा सारे जगत से पहिले वर्तमान और जिस का स्वामी कोई नहीं ऐसा सारे जगत का स्वामी तू ही है ९ हे महाराज सब कामों में समर्थ तू ही अपने यथार्थ स्वरूप को जानता, अपने ही विस्तार से जगत को उपजाता और अपने ही स्वरूप में जगत को छिपा लेता है १० बहते रूप जल आदि, दृढ़ संयोग से कठोर पत्थर आदि, प्रत्यक्ष के योग्य घट आदि, प्रत्यक्ष से बाहर परमाणु आदि, उड़ने के योग्य रूई आदि, जो हिल न सकें सुमेरु पर्वत आदि, सारे कार्य और कारण तू ही है और अणिमा आदि सिद्धिओं में तेरी स्वतंत्रता है ११ ॥

उद्घातः प्रणवोयासां न्यायैस्त्रिभिरुदीरणम्
कर्म्मयज्ञः फलंस्वर्गस्तासांत्वंप्रभवोगिराम् १२
त्वामामनन्तिप्रकृतिं पुरुषार्थप्रवर्त्तिनीम् तद्द
र्शिनमुदासीनं त्वामेवपुरुषंविदुः १३ त्वंपितॄ
णामपिपिता देवानामपिदेवता परतोऽपिपर
श्चासि विधातावेधसामपि १४ त्वमेवहव्यंहोता
च भोज्यंभोक्ताचशाश्वतः वेद्यञ्चवेदिताचासि-
ध्याताध्येयञ्चयत्परम् १५ इतितेभ्यः स्तुतीः श्रु
त्वा यथार्थाहृदयङ्गमाः प्रसादाभिमुखोवेधाः
प्रत्युवाचदिवौकसः १६ पुराणस्यकवेस्तस्य चतु
र्मुखसमीरिता प्रवृत्तिरासीच्छब्दानां चरितार्था
चतुष्टयी १७ ॥

जिन का ओंकार आरंभ, उदात्त अनुदात्त और स्वरित नामी तीन स्व
रों से उच्चारण सारे यज्ञ अर्थ और स्वर्ग फल है उन वेदों का कारण तूं
है १२ सुख दुःख के भोग और मोक्ष के लिये प्रवृत्त होती हुई सत्व (सुख)
रज (दुःख) तम (मोह) इन तीनों का समूह प्रकृति नाम से तूही प्रसि
द्ध है और इन तीनों के संबंध से रहित उदासीन पुरुष भी तूही है १३
अग्निष्वात्ता आदि पितरों का भी पिता, इंद्र आदि देवताओं का भी
देवता, इंद्रिय मन अहंकार आदि सब से परे (उत्कृष्ट) जगत के कार
ण दक्ष आदि का भी कारण तूही है १४ हे भगवन् हवन करने के
योग्य हत आदि, हवन का कर्त्ता (यजमान) खाने के पदार्थ अन्न आ
दि, भोजन का कर्त्ता, जानने के योग्य सारे पदार्थ, ज्ञानवान्, स्मरण
का कर्त्ता और स्मरण करने के योग्य अनादि सनातन परब्रह्म तूही है
१५ इस भांति उन से मनोहर यथार्थ वहुत स्तुति सुन के ब्रह्माजी ने
प्रसन्न होकर देवताओं से कहा १६ सब से प्राचीन कवि ब्रह्मा के
चारों मुखों से वैखरी, मध्यमा पश्यन्ती और सूक्ष्मा इस भांति चार
प्रकार की शब्दों की सफल प्रवृत्ति हुई १७ ॥

स्वागतं स्वानधीकारान् प्रभावैरवलम्ब्य वः युग
पद्युगबाहुभ्यः प्राप्तेभ्यः प्राज्यविक्रमाः १८ किमि
दं द्युतिमात्मीयां न बिभ्रति यथा पुरा हिमक्लिष्टप्र
काशानि ज्योतींषीव मुखानि वः १९ प्रशमादर्चि
षामेतदनुद्गीर्णसुरायुधम् वृत्रस्य हन्तुः कुलि
शं कुण्ठिताश्रीव लक्ष्यते २० किञ्चायमरिदुर्वारः
पाणौ पाशः प्रचेतसः मन्त्रेण हतवीर्यस्य फणि-
नो दैन्यमाश्रितः २१ कुबेरस्य मनःशल्यं शंसती
व पराभवम् अपविद्धगदो बाहुर्भग्नशाख इव द्रु
मः २२ यमोऽपि विलिखन्भूमिं दण्डेनास्तमितत्वि
षा कुरुतेऽस्मिन्नमोघेऽपि निर्वाणालातलाघवम्

हे देवगण अपनी अपनी सामर्थ्य से उत्तम उत्तम अधिकारों पर बैठ के भी बड़े पराक्रमी लंबी लंबी भुजाओं से शोभायमान सारे आप लोगों के एकबारगी आउने का कारण परमेश्वर शुभही करावे १८ इस में क्या कारण है कि शीत ऋतु में हिम से प्रकाश रुक जाने पर नक्षत्रों (ता रों) की नाईं तुमारे मुख अपनी कांति नहीं धारण करते १९ जैसे कि वृत्रासुर के मारने से प्रसिद्ध इंद्र के हाथ में यह वज्र किरणों के शान्त हो (बुझ) जाने से अपना स्वरूप छोड कर धाराओं से खुंडा मालूम होता है २० और जो शत्रुओं से किसी भांति भी नहीं हटाया जावे यह वरुण के हाथ का फांस मंत्र से कीले हुए सांप की नाईं अपना पराक्रम छोड कर बहुत दीन मालूम होता है २१ और वृक्ष की शाखा सब टूट जाने से शेष थम्भे के समान गदा से बिना यह कुबेर की भुजा चित्त में गड़े हुए बाण की नाईं शत्रु से प्राप्त हुए तिरस्कार को जना रही है २२ निस्तेज दंड से भूमि को खोदते हुए यम (धर्मराज) के हाथ में भी यह सफल दंड आधी सड कर बुझी हुई लकड़ी के समान बहुत मंद मालूम होता है २३ ॥

अमीचकथमादित्याः प्रतापक्षतिशीतलाः चि
त्रन्यस्ताइवगताः प्रकामालोकनीयताम् २४ प
र्याकुलत्वान्मरुतां वेगभङ्गोऽनुमीयते अम्भ
सामोघसंरोधः प्रतीपगमनादिव २५ आवर्जि
तजटामौलि विलम्बिशशिकोटयः रुद्राणामपि
मूर्द्धानः क्षतहुङ्कारशंसिनः २६ लब्धप्रतिष्ठाः
प्रथमंयूयंकिंबलवत्तरैः अपवादैरिवोत्सर्गाः कृ
तव्यावृत्तयःपरैः २७ तद्ब्रूतवत्साः किमितः
प्रार्थयध्वंसमागताः मयिसृष्टिर्हिलोकानांरक्षा
युष्मास्ववस्थिता २८ ततोमन्दानिलोद्धूत कम
लाकरशोभिना गुरुंनेत्रसहस्रेण नोदयामा
सवासवः २९ ॥

प्रताप के नाश हो जाने वहुत शीतल लिखी हुई मूर्तियों के समान इन वारह सूर्यों को लोग अपनी इच्छा से एक तार दृष्टि देकर किस भांति देखते हैं २४ जैसे उलट कर ऊंचे पर्वत की ओर वहने से नदी का प्रवाह आगे से रुका मालूम होता है इसी भांति खंड खंड हो- कर वहने से उनचास कोटि वायु के वेग का नाश मालूम होरहा है २५ शत्रु के तिरस्कार से चंद्रमा की कलाओं को धार कर नये हुए ग्यारह रुद्रों के शिर भी अपने हुंकार शब्द का नाश जना रहे हैं २६ प- हिले स्वभाव से प्रवृत्त उत्सर्ग सूत्रों को जैसे अपवाद सूत्र हटा देते हैं इसी रीति पहिले अपने अपने अधिकारों पर वैठे तुम सव को क्या वहुत वलवान शत्रुओं ने आकर निकाल दिया है २७ इस से हे पुत्रो कहो कि तुम सव किस कार्य के लिये मेरे पास आए हो मैं तो लो- गों को उत्पन्न ही कर सकता हूं और जिस से तुम सव विष्णु के अंश हो इस लिये रक्षा करनी तुमारा ही काम है २८ तव मंद वायु से कांपते कमलों के खानि की नाईं इंद्र ने सहस्र नेत्र के कटाक्ष से वृहस्पति जी को वोलने की आज्ञा दी २९ ॥

सद्विनेत्रं हरेरप्यलः सहस्त्रनयनाधिकम् वाचस्पतिरुवाचेदं प्राञ्जलिर्जलजासनम् ३० एवं यदात्थ भगवन्नामृष्टं नः परैः पदम् प्रत्येकं विनियुक्तात्मा कथं न ज्ञास्यसि प्रभो ३१ भवल्लब्धवरोदीर्णस्तारकाख्यो महासुरः उपप्लवाय लोकानां धूमकेतुरिवोत्थितः ३२ पुरे तावन्तमेवास्य तनोति रविरातपम् दीर्घिकाकमलोन्मेषो यावन्मात्रेण साध्यते ३३ सर्वाभिः सर्वदा चन्द्रस्तं कलाभिर्निषेवते नादत्ते केवलां लेखां हरचूडामणीकृताम् ३४ व्यावृत्तगतिरुद्याने कुसुमस्तेयसाध्वसात् न वाति वायुस्तत्पार्श्वे तालवृन्तानिलाधिकम् ३५ ॥

सहस्र नेत्र से अधिक इंद्र के नेत्र दो नेत्रों से शोभायमान शिक्षा देने में निपुण उस बृहस्पति ने दोऊ हाथ बांध कर ब्रह्मा जी से यह बात कही ३० हे भगवन् यह आपने सत्य कहा है कि हमारे अधिकार सब शत्रुओं ने छीन लिये हैं क्यों कि अंतर्यामी होने से आप सब के अभिप्रायों को जानते ही हो ३१ आप से वर को लभ कर तारका नामी महा असुर चढ़े हुए धूमकेतु की नाईं लोगों को दुखदेने के लिये बहुत उद्धत हो रहा है ३२ इस के नगर में सूर्य भी उतनी ही धूप करता है जितनी धूप से क्रीड़ा की बावड़ियों में कमल फूल जाते हैं ३३ और कृष्ण पक्ष में भी चंद्रमा सारी कलाओं से उस तारका सुर की सेवा करता है केवल महादेव के शिर पर भूषण बनके शोभायमान एक कला को नहीं लेता ३४ फूलों की चोरी लगने के भय से क्रीड़ा के आराम (बाग) से निवृत्त हो कर वायु उस तारका सुर के पास भी व्यजन (पंखे) के वायु से अधिक कभी नहीं बहता ३५ ॥

पर्यायसेवामुत्सृज्य पुष्पसम्भारतत्पराः उद्या
नपालसामान्यमृतवस्तमुपासते ३६ तस्योपा
यनयोग्यानि रत्नानि सरितां पतिः कथमप्यम्भ
सामन्तरानिष्पत्तेः प्रतीक्षते ३७ ज्वलन्मणिशि
खाश्चैनं वासुकिप्रमुखा निशि स्थिरप्रदीपता
मेत्य भुजङ्गाः पर्युपासते ३८ तत्कृतानुग्रहा
पेक्षी तं मुहुर्दूतहारिभिः अनुकूलयतीन्द्रोऽपि
कल्पद्रुमविभूषणैः ३९ इत्थमाराध्यमानोऽपि
क्लिश्नाति भुवनत्रयम् शाम्येत्प्रत्यपकारेण
नोपकारेण दुर्जनः ४० तेनामरवधूहस्तैः सद
यालूनपल्लवाः अभिज्ञाश्छेदपातानां क्रिय
न्ते नन्दनद्रुमाः ४१ ॥

एक दूसरे से पीछे आउने का क्रम छोड के वसंत आदि छओ ऋतु अपने अपने फूलों के बढ़ाने में मग्न हु मालियों की नाईं उस तारकासुर की सेवा करते हैं ३६ नदियों का स्वामी समुद्र भी उस तारकासुर के देने योग्य उत्तम रत्नों का पकने तक बहुत यत्न से प्रतीक्षण करता है अर्थात् पकने पर उसी क्षण में तारकासुर के पास पहुंचा देता है ३७ शिर में जगती मणियों की शिखाओं से शोभायमान वासुकि आदि सर्प और सिद्ध रात में चारो ओर स्थिर दीप बन बन के इस तारकासुर की सेवा करते हैं ३८ इंद्र भी उस के अनुग्रह की अपेक्षा करके बार बार दूतों के हाथ से कल्पवृक्षों के भूषण भेज कर उस तारकासुर को अपना अनुकूल (सुहृद) बनाता है ३९ इस भांति सारे देवताओं से सेवा करा के भी वह तारकासुर स्वर्ग, मर्त्य और पाताल इन तीनों लोकों को क्लेश दे रहा है क्यों कि दुष्ट पुरुष अपने अपराध-के दंड से बिना उपकार से दुष्टता को कभी नहीं छोड़ता ४० देवताओं कियों स्त्रियां भी कानों में भूषण पहिनने के लिये जिन के पत्र बड़ी दया से तोड़ती हैं इस तारकासुर ने वे नंदन उद्यान के वृक्ष बड़ी क्रूरता से काट काट के गिरा दिये हैं ४१ ॥

वीज्यते स हि संसुप्तः श्वाससाधारणानिलैः चाम
रैः सुरबन्दीनां बाष्पशीकरवर्षिभिः ४२ उत्पाट्य मे-
रुशृङ्गाणि क्षुण्णानि हरितां खुरैः आक्रीडपर्वता
स्तेन कल्पिताः स्वेषु वेश्मसु ४३ मन्दाकिन्याः पयःशे
षं दिग्वारणमदाविलम् हेमाम्भोरुहसस्यानां त
द्वाप्यो धाम साम्प्रतम् ४४ भुवनालोकनप्रीतिः स्वर्गि
भिर्नानुभूयते खिलीभूते विमानानां तदापातभया
त्पथि ४५ यज्वभिः सम्भृतं हव्यं विततेष्वध्वरेषु सः
जातवेदोमुखान्मायी मिषतामाच्छिनत्ति नः ४६
उच्चैरुच्चैःश्रवास्तेन हयरत्नमहारि च देहबद्धमि
वेन्द्रस्य चिरकालार्जितं यशः ४७ ॥

सोए हुए इस तारकासुर के चारो ओर खड़ी होकर बंधी हुई देवताओं की स्त्रि-
या श्वास के समान मंद शीतल वायु चलाने के लिये आंखों से आंसू बहा ब-
हा कर चामर झुलाती हैं ४२ सूर्य के रथ में बंधे हुए घोड़ों के पाओं से पिसे हु-
ए सुमेरु पर्वत के सींग टुट टुट के इस तारकासुर ने अपने घरमें खिल
ने के पर्वत बनाए हैं ४३ इस समय में दिग्गजों के मद से नीचा ऊंचा जल
ही स्वर्ग गंगा में रह गया है स्वर्ग के कमल तो सब टुट के तारकासुर ने
अपनी बावलियों में खेतियों के समान लगा लिये हैं ४४ अचानक इ
स तारकासुर के आपड़ने के भय से विमानों का मार्ग शून्य हो जाने प
र स्वर्ग के बासी देवता लोग विमानों पर चढ़ के भूलोक आदि भुवनों के
देखने का आनंद नहीं लेते ४५ विस्तृत यज्ञों में यजमानों के इकट्ठे
किये हुए हवन के योग्य घृत आदि पदार्थ को माया (छल) से छि
पा हुआ वह तारकासुर हमारे सब के सामने आग के मुख में से बल से
छीन लेता है ४६ चिर काल से इकट्ठे किये हुए देहधारी इंद्र के यश की
नाईं इस तारकासुर ने घोड़ों में रत्न उच्चैःश्रवा नाम से प्रसिद्ध इंद्र
का उत्तम घोड़ा छीन लिया है ४७ ॥

तस्मिन्नुपायाः सर्वे नः क्रूरे प्रतिहतक्रियाः वीर्य
वन्त्यौषधानीव विकारे सान्निपातिके ४८ जयाशा
यत्र चास्माकं प्रतिघातोत्थितार्चिषा हरिचक्रेण ते
नास्य कण्ठे निष्कमिवार्पितम् ४९ तदीयास्तोयदे
ष्वद्य पुष्करावर्तकादिषु अभ्यस्यन्ति तटाघातं नि-
र्जितैरावता गजाः ५० तदिच्छामो विभो स्रष्टुं सेना
न्यं तस्य शान्तये कर्मबन्धच्छिदं धर्मं भवस्येव मुमु
क्षवः ५१ गोप्तारं सुरसैन्यानां यं पुरस्कृत्य गोत्रभित्
प्रत्यानेष्यति शत्रुभ्यो बन्दीमिव जयश्रियम् ५२ व
चस्यवसिते तस्मिन् ससर्ज गिरमात्मभूः गर्जितान
न्तरां वृष्टिं सौभाग्येन जिगाय या ५३ ॥

सन्निपात के विकार में उत्तम उत्तम बली औषधों के समान उस तारक
असुर में हमारे सब उपायों का करना व्यर्थ ही जा रहा है ४८ जिस
सुदर्शन से हमें जीतने का निश्चय था शरीर पर बजने से चमक कर व
ह कृष्णदेव का चक्र इस तारकासुर के गले में भूषण की नाईं शोभा दे र
हा है ४९ ऐरावत आदि देवताओं के हाथियों को जीत कर उस तारका
सुर के हाथी आज पुष्करावर्तक आदि प्रलय के मेघों को अपनी
खाज हटाने के लिये दांतों से उखाड़ रहे हैं ५० हे स्वामिन् मुक्ति की
इच्छा से लोग जैसे संसार के कर्म्म नामी बंधनों को काटने में समर्थ
धर्म को उपजाते हैं इसी भांति हम सब तारकासुर को मारने के लि
ये सेनापति उपजाना चाहते हैं ५१ जिस देवताओं के रखवाले को आ
गे लगा कर इंद्र बांधी हुई स्त्री के समान जय की लक्ष्मी को शत्रुओं से छी
न के ले आवेगा ५२ बृहस्पति का वाक्य समाप्त होने पर कही हुई ब्रह्मा
जी की बात ने अधिक मनोहर होने से मेघ गर्जने से पीछे हुई वर्षा
को भी जीत लिया ५३ ॥

सम्पत्स्यते वः कामोऽयं कालः कश्चित्प्रतीक्ष्यता
म् न त्वस्य सिद्धौ यास्यामि सर्गव्यापारमात्मना ५४
इतः स दैत्यः प्राप्तश्रीर्नेत एवार्हति क्षयम् विष
वृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम् ५५
वृतं तेनेदमेव प्राक् मया चास्मै प्रतिश्रुतम् वरे-
ण शमितं लोकानलं दग्धुं हि तत्तपः ५६ संयुगे
सांयुगीनं तमुद्यन्तं प्रसहेत कः अंशादृते निषि-
क्तस्य नीललोहितरेतसः ५७ स हि देवः परंज्यो
तिस्तमःपारे व्यवस्थितम् परिच्छिन्नप्रभावर्द्धि
र्न मया न च विष्णुना ५८ उमारूपेण ते यूयं संय
मस्तिमितं मनः शम्भोर्यतध्वमाक्रष्टुं मयस्कान्ते
न लोहवत् ५९ ॥

हे पुत्रो थोड़े समय से पीछे तुमारा यह कार्य सिद्ध होजावे गा मैं
तो इस कार्य्य को किसी रीति से भी नहीं सिद्ध कर सकता हूं ५४ जि
स से उस तारकासुर को मेरे ही वर से सब ऐश्वर्य प्राप्त हुआ है इस
लिये मुझे उस का नाश करना योग्य नहीं है क्यों कि अपने हाथ से
बढ़ाये हुए विष के वृक्ष का भी काटना योग्य नहीं होता ५५ उस ने
यह ही वर मांगा था कि शिव जी के पुत्र से विना मैं किसी से भी नाश
न हूं लोगों को दग्ध करते हुए उस के तप को शांत करने के लिये मैं
ने भी इसे मन मांगा वर देदिया ५६ युद्ध करने में चतुर रण-भूमि
में आकर शस्त्र और अस्त्र चलाते हुए उस तारकासुर को नील कंठ
और रक्त केशों से शोभायमान महादेव के वीर्य से उपजी हुई अंश
से विना और कोई नहीं जीत सके गा ५७ तमोगुण को लंघ के वर्त
मान ज्योति-स्वरूप उस परमात्मा महादेव की सामर्थ्य का अंत मैं
और विष्णु भगवान भी नहीं पा सकता ५८ इस से तुम लोग चुंबक
मणि से लोहे की नाईं पार्वती के सुंदर रूप से समाधि में निश्चल
महादेव के मन को खैंचने का उद्यम करो ५९ ॥

उभेएवक्षमेवोढु मुभयोर्बीजमाहितम् सावाश
म्भोस्तदीयावा मूर्तिर्जलमयीमम ६० तस्यात्मा
शितिकण्ठस्य सैनापत्यमुपेत्यवः मोक्ष्यतेसुरब
न्दीनां वेणीर्वीर्यविभूतिभिः ६१ इतिव्याहृत्यविबु
धान् विश्वयोनिस्तिरोदधे मनस्याहितकर्तव्यास्ते
ऽपिदेवादिवंययुः ६२ तत्रनिश्चित्यकन्दर्प मगम
त्पाकशासनः मनसाकार्यसंसिद्धित्वराद्विगुण
रंहसा ६३ अथसललितयोषिद्भ्रूलताचारुशृङ्गं र
तिवलयपदाङ्के चापमासज्यकण्ठे सहचरमधु
हस्तन्यस्तचूताङ्कुरास्त्रः शतमखमुपतस्थेप्रा-
ञ्जलिः पुष्पधन्वा ६४ ॥ इतिश्रीकालिदासकृ
तौमहाकाव्येकुमारसम्भवेउमोत्पत्तिर्नामद्विती
यःसर्गः ॥

मेरे और महादेव के फेंके हुए वीर्य के सहने योग्य जगत में दो ही हैं
ऐसे कि मेरे वीर्य को तो महादेव की जल नाम से प्रसिद्ध मूर्ति औ
र महादेव के वीर्य को केवल पार्वती ही सहार सकती है ६०
उस नीलकंठ महादेव का औरस पुत्र तुमारी सेना का नायक ब
न के अपनी प्रबलता के प्रभाव से तारकासुर को मारेगा और बंध-
नों से निकाल कर देवताओं की स्त्रियों के केश खुलावेगा ६१ देव
ताओं से इतनी बात कह कर ब्रह्मा जी छिप गये और देवता सब
भी मन में महादेव का पुत्र उपजाने के उपाय सोचते सोचते स्वर्ग
को गये ६२ महादेव का चित चलाने में कामदेव को ही समर्थ जा
नके इंद्र ने कार्य की उत्कंठा से मन का वेग दूना बढ़ा कर कामदेव
का स्मरण किया ६३ स्मरण करने से पीछे सुंदर जवान स्त्रियों के
भवों के समान सींगों से मनोहर फूलों का धनुष अपनी स्त्री रति
के कंकणों से घिसे हुए गले में डाल कर प्यारे मित्र वसंत के हाथ
अपने अस्त्र आम के मंजर दिये कामदेव अंजली बांधे इंद्र के पास
आ पहुंचा ६४ इति प. सुख दयाल का बनाया कुमारसंभव के
दूसरे सर्ग का हिंदी में अनुवाद समाप्त हुआ ॥

तृतीयः सर्गः ॥

तस्मिन्मघोनस्त्रिदशान्विहाय सहस्रमक्ष्णां युगपत्पपात प्रयोजनापेक्षितया प्रभूणां प्रायश्चलंगौरवमाश्रितेषु १ सवासवेनासनसन्निकृष्ट मितोनिषीदेति विसृष्टभूमिः भर्तुः प्रसादंप्रतिनन्द्य मूर्ध्ना वक्तुंमिथःप्राक्रमतैवमेनम् २ आज्ञापयज्ञातविशेषपुंसां लोकेषुयत्तेकरणीयमस्ति अनुग्रहंसंस्मरणप्रवृत्त मिच्छामिसंवर्धितमाज्ञयाते ३ केनाभ्यसूयापदकांक्षिणाते नितान्तदीर्घैर्जनितातपोभिः यावद्भवत्याहितसायकस्य मत्कार्मुकस्यास्यनिदेशवर्ती ४ ॥

सब देवताओं को त्याग कर इंद्र के सहस्र ही नेत्र एक बारगी कामदेव पर गिरे क्योंकि प्रयोजन के अधीन होने से स्वामी लोगों का आदर (प्रेम) भृत्य जनों में स्थिर नहीं होता १ "यहां बैठ जाओ" ऐसा कह कर अपने सिंहासन के पास बैठाए हुए कामदेव ने स्वामी की आज्ञा शिर पर मान के इंद्र के साथ बोलने का प्रारंभ किया २ हे पुरुषों के अभिप्राय जानने में चतुर स्वर्ग मर्त्य और पाताल इन तीन लोकों में जो कार्य तू करना चाहे उस की आज्ञा कर क्योंकि तेरी आज्ञा से किसी कार्य में लग कर मैं स्मरण से प्रवृत्त तेरे अनुग्रह की वृद्धि चाहता हूं ३ इंद्र पदवी लेने की इच्छा से निरंतर बड़ी बड़ी तपस्या करके किसने तेरे मन में ईर्षा उपजाई है जिसे बाण चढ़ाए अपने धनुष की आज्ञा के वश में ले आऊं ४ ॥

असंमतः कस्तव मुक्तिमार्गं पुनर्भवक्लेशभ
यात्प्रपन्नः बद्धश्चिरं तिष्ठतु सुन्दरीणा मारेचित
भ्रूचतुरैः कटाक्षैः ५ अध्यापितस्योशनसापिनी
तिं प्रयुक्तरागप्रणिधिर्द्विषस्ते कस्यार्थधर्मौव
दपीडयामि सिन्धोस्तटावोघइवप्रवृद्धः ६
कामेकपत्नीव्रतदुःखशीलां लोलंमनश्चारु
तयाप्रविष्टाम् नितम्बिनीमिच्छसिमुक्तलज्जां क
ण्ठेस्वयंग्राहनिषक्तबाहुम् ७ कयासिकामि
न्सुरतापराधात् पादानतःकोपनयावधूतः
तस्याःकरिष्यामिदृढानुतापं प्रवालशय्याश
रणंशरीरम् ८ प्रसीदविश्राम्यतुवीरवज्रं शरै
र्मदीयैःकतमःसुरारिः बिभेतुमोघीकृतबाहु
वीर्यः स्त्रीभ्योऽपिकोपस्फुरिताधराभ्यः ९ ॥

वार वार जनमने, मरने के भय से कौन सा पुरुष तेरी संमति से विना मुक्ति के मार्ग (निवृत्ति) मे प्रवृत्त हुआ है जो भवों के घुमाने से मनोहर युवतिओं के कटाक्षों से वंधा हुआ चिर तक संसार में ही पड़ा रहे ५ अपने हत विषयों के अभिलाष को भेज कर वढ़ा हुआ मैं वढ़ा हुआ प्रवाह नदी के दोनों तटों कीनाईं शुक्र से नीति पढ़े हुए किस तेरे शत्रु के धर्म और अर्थ का नाश करूं ६ हे इंद्र पतिव्रता के नियमों में पक्की वहुत सुंदर रूप होने से तेरे चंचल मन में वैठी हुई किस स्त्री को तू चाहता है कि लज्जा को छोड आप ही भुजा को फैलाए तेरे गले से आ लिपटे ७ हे काम के रसीले किसी और स्त्री के संग दोष से वड़ी क्रुद्ध किस स्त्री ने पाओं मे गिरने पर भी तेरा तिरस्कार किया है कि जो ऐसी पछतावेगी जिसे कमलपत्तों की सज्जा से विना कहीं आसरा नहीं मिलेगा ८ हे वीर तू प्रसन्न हो वज्र भी मत चला किंतु यह वता दे कि मेरे वाणों से जिस की भुजा का पराक्रम व्यर्थ हो जावे वह कौनसा राक्षस क्रोध से ओठ कंपाती हुई स्त्रियों से भी डरने लगे ९ ॥

तवप्रसादात्कुसुमायुधोऽपि सहायमेकंमधुमे
वलब्ध्वा कुर्य्यांहरस्यापिपिनाकपाणेर्धैर्य्यच्युतिं
केममधन्विनोऽन्ये १० अथोरुदेशादवतार्य्यपाद-
माक्रान्तिसम्भावितपादपीठम् सङ्कल्पितार्थेवि
वृतात्मशक्तिमाखण्डलःकाममिदंबभाषे ११ सर्वं
सखेत्वय्युपपन्नमेतदुभेममास्त्रेकुलिशंभवांश्च
वज्रंतपोवीर्य्यमहत्सुकुण्ठं त्वंसर्वतोगामिचसाधक
ञ्च १२ अवैमितेसारमतःखलुत्वां कार्य्येगुरुण्या
त्मसमंनियोक्ष्ये व्यादिश्यतेभूधरतामवेक्ष्य कृष्णेन
देहोद्वहनायशेषः १३ आशंसताबाणगतिंवृषाङ्के
कार्य्यंत्वयानःप्रतिपन्नकल्पम् निबोधयज्ञांशभुजा
मिदानी मुच्चैर्द्विषामीप्सितमेतदेव १४ ॥

केवल एक वसंत (ऋतु) की सहायता पाकर कोमल फूलों के भी शस्त्र हाथ में लिये मैं तेरी कृपा से धनुष हाथ में लिये महादेव के धैर्य को भी तोड़ सकता हूं तो और धनुषधारी मेरे आगे क्या वस्तु हैं १० कामदेव की बातें सुन कर जंघा पर से पाऊं को उतार पादपीठ पे रख के इंद्र ने अपने कार्य महादेव के धैर्य तोड़ने में सामर्थ्य प्रकाश करते हुए कामदेव को यह कहा ११ हे मित्र यह सारी बातें तेरी यथार्थ हैं मेरे भी दो ही अस्त्र हैं वज्र और तू परंतु तपस्या के बल से बड़े ऋषियों के समीप वज्र जा ही नहीं सकता और तू सब स्थान में पहुंचता और कार्य भी सुधारता है १२ हे मित्र मैं तेरी सामर्थ्य को जानता हूं इस से बड़े महान् कार्य में अपने स्थान तुझे लगाता हूं जैसे पृथ्वी उठाने की सामर्थ्य देख कर कृष्णदेव ने अपनी देह उठाने के लिये सर्पों के राजा शेष को आज्ञा दी है १३ महादेव में बाण की गति कहते हुए तू ने हमारा कार्य मान भी लिया है शत्रुओं के बहुत बढ़ने से यज्ञों के भागों में अधिकारी सब देवताओं का यही अभिप्राय जानना चाहिये कि शिवजी भी विषय में पड़ें १४ ॥

अमी हि वीर्यप्रभवं भवस्य जयाय सेनान्यमुशन्ति
देवाः स च त्वदेकेषुनिपातसाध्यो ब्रह्माङ्गभूर्ब्रह्म
णि योजितात्मा १५ तस्मै हिमाद्रेः प्रयतां तनूजां य
तात्मने रोचयितुं यतस्व योषित्सु तद्वीर्यनिषेकभू
मिः सैव क्षमेत्यात्मभुवोपदिष्टम् १६ गुरोर्नियोगा
च्च नगेन्द्रकन्या स्थाणुं तपस्यन्तमधित्यकायाम् अ
न्वास्त इत्यप्सरसां मुखेभ्यः श्रुतं मया मत्प्रणिधिः
स वर्गः १७ तद्गच्छ सिद्ध्यै कुरु देवकार्यमर्थोऽ
यमर्थान्तरभाव्य एव अपेक्षते प्रत्ययमुत्तमं त्वां बी
जाङ्कुरः प्रागुदयादिवाम्भः १८ तस्मिन्सुराणां वि
जयाभ्युपाये तवैव नामास्त्रगतिः कृती त्वम् अप्य
प्रसिद्धं यशसे हि पुंसामनन्यसाधारणमेव कर्म १९

ये सब देवता जीतने के लिये महादेव के तेज से उपजे हुए सेनापति को चाहते हैं और सारे अंगों में मंत्रों को रख कर स्थिर चित्त से परब्रह्म का ध्यान करता हुआ वह महादेव केवल तेरे एक बाण के गिरने से ही वश में आसकता है १५ इसलिये नियम से पूजा करती पार्वती पर महादेव के स्थिर चित्त चलाने का यत्न कर क्यों कि स्त्रियों में से गिरे हुए महादेव के वीर्य को वह ही उठा सकती है यह ब्रह्मा ने कहा है १६ मैंने (छिप कर घूमने में नियुक्त अपने दूत) अप्सराओं के मुंह से सुना है कि पिता की आज्ञा से पार्वती हिमालय के किसी शिखर पर तपस्या करते महादेव की उपासना (सेवा) करती है १७ इससे कार्य की सिद्धि के लिये जाकर देवताओं का कार्य करो चाहे यह कार्य पार्वती से ही सिद्ध होगा तोभी पहिले तुझे उत्तम सहायक को चाह रहा है जैसे अंकुर बीज बोने पर भी जल को चाहता है १८ देवताओं के इस जीतने के उपाय में तेरा ही शस्त्र चल सकता है इस से तूही कृतार्थ है क्यों कि अप्रसिद्ध भी जो काम और किसी से न हो सके वह पुरुष को बहुत यश देता है १९ ॥

सुरास्समभ्यर्थयितार एते कार्य्यंत्रयाणामपिविष्ट
पानाम् चापेनतेकर्म्मनचातिहिंस्र महोवतासिस्पृ
हणीयवीर्य्यः २० मधुश्चतेमन्मथसाहचर्य्यादसा
वनुक्तोऽपिसहाय एव समीरणोनोदयिताभवेति
व्यादिश्यतेकेनहुताशनस्य २१ तथेतिशेषामिवभ
र्त्तुराज्ञा मादायमूर्ध्नामदनःप्रतस्थे ऐरावतास्फाल
नकर्कशेन हस्तेनपस्पर्शतदङ्गमिन्द्रः २२ समाधवे
नाभिमतेनसख्या रत्याचसाशङ्कमनुप्रयातः अङ्ग
व्ययप्रार्थितकार्य्यसिद्धिः स्थाण्वाश्रमंहैमवतंज
गाम २३ तस्मिन्वनेसंयमिनांमुनीनां तपस्समाधेः
प्रतिकूलवर्त्ती सङ्कल्पयोनेरभिमानभूत मात्मा
नमाधायमधुर्जजृम्भे २४ ॥

इन सब देवताओं के याचन (भीख मांगने) से स्वर्ग मर्त्य और पाताल
इन तीन लोकों का अति मनोहर कार्य तेरे धनुष सेही सिद्ध होगा इसलिये
हे कामदेव तेरा आश्चर्य पराक्रम है २० हे कामदेव सदा इकट्ठे रहने से
यह वसंत विना कहे ही तेरा सहायक है जैसे आग को बढ़ाने के लिये
वायु को कोई आज्ञा नहीं देने जाता २१ प्रसन्नता से दी हुई माला की
नाईं स्वामी की आज्ञा को ऐसे ही करूंगा यह कह सिर पर मान के का
मदेव चल पड़ा और चलाने के लिये ऐरावत का ताड़न करने से कठोर
हाथ इंद्र ने भी मदन की देह से लगादिया अर्थात् जाने की अनुज्ञा दी
२२ कार्य को बहुत कठिन जान कर डरे हुए अपने प्यारे मित्र वसंत और
अपनी बहू रति को पीछे २ साथ लगाए वह कामदेव शरीर देकर
भी कार्य सिद्ध करने की इच्छा से हिमालय पर्वत पर महादेव के आ
श्रम को गया २३ उस वन में कामदेव के गर्व उपजने में कारण अ
पने स्वरूप को पसार के समाधि लगाते हुए ऋषियों की तपस्या और
समाधि का विरोधी वसंत बढ़ा २४ ॥

कुबेरगुप्तां दिशमुष्णरश्मौ गन्तुं प्रवृत्ते समयं-
विलङ्घ्य दिग्दक्षिणा गन्धवहं मुखेन व्यली
कनिःश्वासमिवोत्ससर्ज २५ असूत सद्यः कु
सुमान्यशोकः स्कन्धात्प्रभृत्येव सपल्लवानि
पादेन नापेक्षत सुन्दरीणां सम्पर्कमाशिञ्जि
तनूपुरेण २६ सद्यः प्रवालोद्गमचारुपत्रे नीते
समाप्तिं नवचूतबाणे निवेशयामास मधुर्द्विरे
फान् नामाक्षराणीव मनोभवस्य २७ वर्णप्र
कर्षे सति कर्णिकारं दुनोति निर्गन्धतया स्म
चेतः प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां पराङ्मु
खी विश्वसृजः प्रवृत्तिः २८ बालेन्दुवक्राण्य
विकासभावाद्बभुः पलाशान्यतिलोहिता
नि सद्यो वसन्तेन समागतानां नखक्षता-
नीव वनस्थलीनाम् २९ ॥

दक्षिणायन का समय बिता कर सूर्यभगवान जब कुबेर की उ-
त्तर दिशा को जाने में प्रवृत्त हुए तो दक्षिण दिशा ने अपने मुख (म
लयाचल) से दुःख के सांस की नाईं वायु छोड़ा २५ युवतिओं के
नेवर झनकाते पांउ छूने की अपेक्षा छोड़ कर अशोक वृक्ष ने डालों
से मूल तक आपही फूल और पत्र शीघ्र उपजाए २६ बाण बनाने
में चतुर वसंत ने आम की नई मंजरी को बाण और नये पत्तों को
पंख बनाकर कामदेव के नाम के अक्षरों की नाईं शीघ्र ही उन
पर भौंरे बैठा दिये २७ सुंदर वर्ण होने पर भी गंध के न होने से
कनेर का फूल चित्त को बहुत दुःख देता है इस से मालूम होता
है सारे गुणों से पूर्ण करने के लिये ब्रह्मा जी सब से विमुख ही
रहते हैं २८ भली भांति खिलने से पहिले दूज के चांद की नाईं ब
क्र (टेढ़े) बहुत लाल केसू फूल अपने स्वामी वसंत के साथ क्री
ड़ा करती वनस्थलियों के नये लगे हुए नखों के ज़ख्म (घाओं) कीना
ईं शोभित हुए २९ ॥

लग्नद्विरेफाञ्जनभक्तिचित्रं मुखेमधुश्रीस्ति
लकंप्रकाश्य रागेणबालारुणकोमलेन चूत
प्रवालोष्ठमलञ्चकार ३० मृगाःप्रियालद्रुमम
ञ्जरीणां रजःकणैर्विघ्नितदृष्टिपाताः मदोद्ध
ताःप्रत्यनिलंविचेरु र्वनस्थलीर्मर्मरपत्रमो-
क्षाः ३१ चूताङ्कुरास्वादकषायकण्ठः पुंस्कोकि
लोयन्मधुरंचुकूज मनस्विनीमानविघातदक्षं
तदेवजातंवचनंस्मरस्य ३२ हिमव्यपायाद्विश
दाधराणा मापाण्डुरीभूतमुखच्छवीनाम् स्वे
दोद्गमः किम्पुरुषाङ्गनानां चक्रेपदंपत्रविशे-
षकेषु ३३ तपस्विनःस्थाणुवनौकसस्ता मा
कालिकींवीक्ष्यमधुप्रवृत्तिम् प्रयत्नसंस्तम्भि
तविक्रियाणां कथञ्चिदीशामनसांबभूवुः ३४

वसंत की शोभा ने अपने मुख पर अंजन की नाईं भौंरों से बहुत रंगों का तिलक लगा कर ओठों की नाईं आम के नये पत्तों को प्रातःकाल के अरुण के समान कोमल रंग से शोभित किया ३० सूखे पत्तों के गिरने से मड़मड़ाती वन की भूमियों पर राजादन वृक्षों के मंजरी की धूलि आंखों में पड़ने से देखने में दुःखित भी मद से उद्धत हरिण वायु के सामने मुख कर के ही चलते थे ३१ आम का मंजर खाने से कंठ को लाल कर के कोकिल ने जो बहुत ऊंचा मीठा शब्द किया वह ही मानिनी स्त्रियों के गर्व तोड़ने में चतुर कामदेव का वचन मालूम होता था ३२ हेमंत (ऋतु) के बीतने पर अलक्तक आदि के न लगाने से श्वेत ओठों और कुंकुम के न लगाने से पांडु (गुलाबी) मुखों से शोभित किन्नरियों की पत्र रचना पर पसीना आने लगा ३३ अब सब से विना ही प्रयत्न हुई उस वसंत की शोभा को देख कर महादेव के वन में रहने वाले तपस्वियों ने यत्न से विकारों को रोक कर बड़े कष्ट से चित्तों को वश में किया ३४ ॥

कुबेरगुप्तां दिशमुष्णरश्मौ गन्तुं प्रवृत्ते समयं-
विलङ्घ्य दिग्दक्षिणा गन्धवहं मुखेन व्यली
कनिश्वासमिवोत्ससर्ज २५ असूत सद्यः कु
सुमान्यशोकः स्कन्धात्प्रभृत्येव सपल्लवानि
पादेन नापेक्षत सुन्दरीणां सम्पर्कमाशिञ्जि
तनूपुरेण २६ सद्यः प्रवालोद्गमचारुपत्रे नीते
समाप्तिं नवचूतबाणे निवेशयामास मधुर्द्विरे
फान् नामाक्षराणीव मनोभवस्य २७ वर्णप्र
कर्षे सति कर्णिकारं दुनोति निर्गन्धतया स्म
चेतः प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां पराङ्मु
खी विश्वसृजः प्रवृत्तिः २८ बालेन्दुवक्राण्य
विकाशभावाद् बभुः पलाशान्यतिलोहिता
नि सद्यो वसन्तेन समागतानां नखक्षता-
नीव वनस्थलीनाम् २९ ॥

दक्षिणायन का समय बिता कर सूर्यभगवान् जब कुबेर की उ-
त्तर दिशा को जाने में प्रवृत्त हुए तो दक्षिण दिशा ने अपने मुख (म-
लयाचल) से दुःख के सांस की नाईं वायु छोड़ा २५ युवतिओं के
नेवर ठनकाते पाउं छूने की अपेक्षा छोड़ कर अशोक वृक्ष ने डालों
से मूल तक आपही फूल और पत्र शीघ्र उपजाए २६ बाण बनाने
में चतुर वसंत ने आम की नई मंजरी को बाण और नये पत्तों को
पंख बनाकर कामदेव के नाम के अक्षरों की नाईं शीघ्र ही उन
पर भौंरे बैठा दिये २७ सुंदर वर्ण होने पर भी गंध के न होने से
कनेर का फूल चित्त को बहुत दुःख देता है इस से मालूम होता
है सारे गुणों से पूर्ण करने के लिये ब्रह्मा जी सब से विमुख ही
रहते हैं २८ भली भांति खिलने से पहिले दूज के चांद की नाईं व
क्र (टेढ़े) बहुत लाल केसू फूल अपने स्वामी वसंत के साथ क्री
ड़ा करतीं वनस्थलियों के नये लगे हुए नखों के जख़म (घाओ) की ना
ईं शोभित हुए २९ ॥

लग्नद्विरेफाञ्जनभक्तिचित्रं मुखे मधुश्रीस्ति
लकं प्रकाश्य रागेण बालारुणकोमलेन चूत
प्रवालोष्ठमलञ्चकार ३० मृगाः प्रियालद्रुमम
ञ्जरीणां रजःकणैर्विघ्नितदृष्टिपाताः मदोद्ध
ताः प्रत्यनिलं विचेरुर्वनस्थलीर्मर्मरपत्रमो-
क्षाः ३१ चूताङ्कुरास्वादकषायकण्ठः पुंस्कोकि
लो यन्मधुरं चुकूज मनस्विनीमानविघातदक्षं
तदेव जातं वचनं स्मरस्य ३२ हिमव्यपायाद्विश
दाधराणामापाण्डुरीभूतमुखच्छवीनाम् स्वे
दोद्गमः किम्पुरुषाङ्गनानां चक्रे पदं पत्रविशे-
षकेषु ३३ तपस्विनः स्थाणुवनौकसस्तामा
कालिकीं वीक्ष्य मधुप्रवृत्तिम् प्रयत्नसंस्तम्भि
तविक्रियाणां कथञ्चिदीशा मनसां बभूवुः ३४

वसंत की शोभा ने अपने मुख पर अंजन की नाईं भौंरों से बहुत रंगों का तिलक लगा कर ओठों की नाईं आम के नये पत्तों को प्रातःकाल के अरुण के समान कोमल रंग से शोभित किया ३० सूखे पत्तों के गिरने से मड़मड़ाती वन की भूमियों पर राजादन वृक्षों के मंजरों की धूलि आंखों में पड़ने से देखने में दुःखित भी मद से उद्धत हरिण वायु के सामने मुख कर के ही चलते थे ३१ आम का मंजर खाने से कंठ को लाल कर के कोकिल ने जो बहुत ऊंचा मीठा शब्द किया वह ही मानिनी स्त्रियों के गर्व तोड़ने में चतुर कामदेव का वचन मालूम होता था ३२ हेमंत (ऋतु) के बीतने पर अलक्तक आदि के न लगाने से श्वेत ओठों और कुंकुम के न लगाने से पांडु (गुलाबी) मुखों से शोभित किन्नरियों की पत्र रचना पर पसीना आने लगा ३३ अब सब से विना ही प्रवृत्त हुई उस वसंत की शोभा को देख कर महादेव के वन में रहने वाले तपस्वियों ने यत्न से विकारों को रोक कर बड़े कष्ट से चित्तों को वश में किया ३४ ॥

तं देशमारोपितपुष्पचापे रतिद्वितीये मदने
प्रपन्ने काष्ठागतस्नेहरसानुविद्धं द्वन्द्वानि भाव
क्रियया विवव्रुः ३५ मधु द्विरेफः कुसुमैकपात्रे
पपौ प्रियां स्वामनुवर्त्तमानः शृङ्गेण च स्पर्श
निमीलिताक्षीं मृगीमकण्डूयत कृष्णसारः ३६
ददौ रसात्पङ्कजरेणुगन्धि गजाय गण्डूषजलं
करेणुः अर्द्धोपभुक्तेन बिसेन जायां सम्भावया
मास रथाङ्गनामा ३७ गीतान्तरेषु श्रमवारिले
शैः किञ्चित्समुच्छ्वासितपत्रलेखम् पुष्पास
वाघूर्णितनेत्रशोभि प्रियामुखं किम्पुरुषः चु
चुम्बे ३८ पर्य्याप्तपुष्पस्तवकस्तनाभ्यः स्फुर
त्प्रवालोष्ठमनोहराभ्यः लतावधूभ्यस्तरवो
प्यवापुर्विनम्रशाखाभुजबन्धनानि ३९ ॥

अपनी स्त्री रति को साथ ले कर पुष्पों का धनुष चढ़ाए कामदेव जब
वहां प्राप्त हुआ तो द्वंद्वों और पशु, पक्षियों के मिथुनों (जोड़ों) ने भी अ-
पनी २ चेष्टा से बहुत प्रेम से भरे हुए शृंगार रस को प्रगट किया ३५
और एक ही फूल पर बैठ अपनी प्यारी के अनुकूल होकर भौंरे ने मधु
(फूलों का रस) पिया और स्पर्श सुख से आंख मीचती हरिनी को का-
ला हरिन भी सींग से खुजलाने लगा ३६ हथिनी ने प्रेम से कमल
की धूलि के गंध वाला जल सूंड में ले कर हाथी को दिया और चकवे
ने आधा खा कर बिस (भे) अपनी प्यारी चकवी को दिया ३७ और
किन्नर ने पसीने से मिली हुई पत्रों की रेखा और फूलों के मद्य से मा-
ती आंखों से शोभायमान अपनी प्यारी किन्नरी का मुख गाते गा-
ते चूम लिया ३८ अपने स्तनों की नाईं भरे हुए फूलों के गुच्छों और ओ-
ठों की नाईं लाल कोमल पत्तों से मनो हर लता (बेलें) भी अपनी
भुजा नयी हुई शाखाओं से बांध कर बहुओं की नाईं अपने स्वामी
वृक्षों के गले मे जा लगीं ३९ ॥ ॥

श्रुताप्सरोगीतिरपिक्षणेऽस्मिन् हरः प्रसङ्ख्यान-
परोबभूव आत्मेश्वराणांनहिजातुविघ्नाः समाधि-
भेदप्रभवोभवन्ति ४० लतागृहद्वारगतोऽथनन्दी
वामप्रकोष्ठार्पितहेमवेत्रः मुखार्पितैकाङ्गुलि सं
ज्ञयैव माचापलायेतिगणान्व्यनैषीत् ४१ निष्कम्प
वृक्षंनिभृतद्विरेफं मूकाण्डजंशान्तमृगप्रचारम्
तच्छासनात्काननमेवसर्वं चित्रार्पितारम्भमिवा
वतस्थे ४२ दृष्टिप्रपातंपरिहृत्यतस्य कामः पुरः
शुक्रमिवप्रयाणे प्रान्तेषुसंसक्तनमेरुशाखं ध्या
नास्पदंभूतपतेर्विवेश ४३ सदेवदारुद्रुमवेदि
कायां शार्दूलचर्म्मव्यवधानवत्याम् आसीनमा
सन्नशरीरपातस्त्रियम्बकंसंयमिनंददर्श ४४ ॥

वसंत के प्रगट होने पर अप्सराओं के गीत सुन के भी महादेव का चित्त परब्रह्म में ही लगा रहा क्योंकि जितेंद्रियों के चित्त को कोई विघ्न भी नहीं हिला सकते ४० लता मंडप के द्वार पर स्वर्ण का दंड हाथ में लिये खड़े हो कर नंदी ने मुख में एक तर्जनी अंगुली देने के संकेत से ही सारे प्रथम गणों को चंचलता छोडने की शिक्षा दी ४१ वृक्ष आदि उद्भिजों के पत्तों तक भी न हिलने से, भौंरे आदि स्वेदजों के उड़ना छोड कर बैठ जाने से, पक्षि आदि अंडजों के चुप चाप होजाने से और हरिण आदि जरायुजों का घूमना हट जाने से वह साराही वन नंदी की आज्ञा पाकर चित्र में लिखे ऊए की नांई हो गया ४२ यात्रा में सामने शुक्र की नांई उस नंदी की दृष्टि से बच कर वह कामदेव दोनों ओर से झुकी ऊई सुरपुंनाग की शाखाओं से छाए ऊए महादेव के समाधिस्थान पर जा पऊंचा ४३ मृत्यु के समीप पऊंचे ऊए उस कामदेव ने दियार वृक्षों की वेदी में सिंह का चर्म बिछा कर बैठे समाधि लगाये त्रिनेत्र (महादेव) को देखा ४४

पर्य्यङ्कबन्धस्थिरपूर्वकायमृज्वायतं सन्नमितो
भयांसम् उत्तानपाणिद्वयसन्निवेशात् प्रफुल्ल
राजीवमिवाङ्कमध्ये ४५ भुजङ्गमोन्नद्धजटाक
लापं कर्णावसक्तद्विगुणाक्षसूत्रम् कण्ठप्रभा
सङ्गविशेषनीलां कृष्णत्वचं ग्रन्थिमतीं दधानम्
४६ किञ्चित्प्रकाशस्तिमितोग्रतारै र्भ्रूविक्रियायां
विरतप्रसङ्गैः नेत्रैरविस्पन्दितपक्ष्ममालै र्लक्ष्यीकृ
तघ्राणमधोमयूखैः ४७ अवृष्टिसंरम्भमिवाम्बु
वाहमपामिवाधारमनुत्तरङ्गम् अन्तश्चराणां म
रुतां निरोधान्निवातनिष्कम्पमिव प्रदीपम् ४८
कपालनेत्रान्तरलब्धमार्गै र्ज्योतिःप्ररोहैरुदितैः
शिरस्तः मृणालसूत्राधिकसौकुमार्य्यां बालस्य
लक्ष्मीं ग्लपयन्तमिन्दोः ४९ ॥

वीरासन बांधने से देह का ऊपरला भाग स्थिर किये कोमल ऊ-
र ढीले होकर दोनों स्कंदों (मोंढो) को नमाए, और अंगुलियें
ऊपर को उठाए दोनों हाथ बांध कर अंक (गोद) में खिले हुए क
मलकी नाईं स्थापन किये ४५ सांप से जटा (केश) सिर पर बांधे
कानों में दुनी रुद्राक्षों की माला लटकाये और कंठ में स्थित विष की
किरणों से बहुत नीला काले मृग का चर्म गांठ देकर ओढ़े ४६ थो
ड़ी सी आंखें खोल कर तारे, पलकों और भवों को स्थिर करके नीचे
को दृष्टि किये एकटक तीनों आंखों से नाक का अगला भाग देख
ते ४७ शरीर के अंदर चलने वाले वायु (प्राणों) के रोकने से वर्षा
से रहित मेघ, तरंगों (लहरों) से बिना बड़े सरोवर और वायु रहि
त स्थान में धरे हुए दीपकी शिखा के समान स्थिर और गंभीर ४८
तीसरे नेत्र के बीच से मार्ग लभ के ब्रह्मरंध्र (तालु) से निकसी
हुई तेज की शिखाओं से मृणाल (भे) के सूत से भी बहुत को
मल बाल चंद्रमा की शोभा को छीण करते ४९ ॥

मनोनवद्वारनिषिद्धवृत्ति हृदिव्यवस्थाप्यसमा
धिवश्यम् यमक्षरंक्षेत्रविदोविदुस्त मात्मानमा-
त्मन्यवलोकयन्तम् ५० स्मरस्तथाभूतमयुग्म
नेत्रं पश्यन्नदूरान्मनसाप्यधृष्यम् नालक्षयत्सा
ध्वससन्नहस्तः स्रस्तंशरंचापमपिस्वहस्तात् ५१
निर्वाणभूयिष्ठमथास्यवीर्य्यं सन्धुक्षयन्तीव व-
पुर्गुणेन अनुप्रयातावनदेवताभ्या मदृश्यत-
स्थावरराजकन्या ५२ अशोकनिर्भर्त्सितपद्म
राग माकृष्टहेमद्युतिकर्णिकारम् मुक्ताकला
पीकृतसिन्धुवारं वसन्तपुष्पाभरणंवहन्ती ५३
आवर्जिताकिञ्चिदिवस्तनाभ्यां वासोवसानात
रुणार्करागम् पर्य्याप्तपुष्पस्तवकावनम्रा स
ञ्चारिणीपल्लविनीलतेव ५४ ॥

चक्षु आदि नौ द्वारों से वृत्तिओं को रोकने से समाधि के वश मन
को हृदय में स्थिर कर के योगी जनों ने अविनाशी कहे हुए प-
रब्रह्म को अपने स्वरूप में प्रत्यक्ष देखते ५० इस भांति समाधि
में स्थित कभी मन से भी न डरने वाले त्रिनेत्र (महादेव) को दे-
ख कर कामदेव ने डर कर सुन्न हुए हाथ से गिरे हुए धनुष
और बाण को नहीं समुझा ५१ इतने में ही नाश के समीप पहुंचे
कामदेव के पराक्रम को अपने सुंदर रूप से फिर जिलाती वन
की देवता दो सखियों को साथ ले आती पर्वतों के राजा (हिमा-
लय) की पुत्री (पार्वती) दीख पड़ी ५२ वसंत ऋतु में उपजे हुए
पद्मराग मणि से अधिक अरुण अशोक के, स्वर्ण की नांई शोभा-
यमान कनेर के और मोतियों के स्थान पर लगाए इंद्राणी के फूलों
से भूषण बनाकर धारण करती ५३ भरे हुए फूलों के गुच्छों से
नपी हुई कोमल पत्तों वाली लता की नांई प्रातःकाल के सूर्य की
नांई अरुण वस्त्र पहिने स्तनों के भार से कुछ नपी हुई ५४ ॥

स्रस्तांनितम्बादवलम्बमाना पुनःपुनःकेशर
दामकाञ्चीम् न्यासीकृतांस्थानविदास्मरेण मौ
र्वींद्वितीयामिवकार्म्मुकस्य ५५ सुगन्धिनिश्वा-
सविवृद्धतृष्णं बिम्बाधरासन्नचरंद्विरेफम् प्रति
क्षणंसम्भ्रमलोलदृष्टिर्लीलारविन्देननिवारय
न्ती ५६ तांवीक्ष्यसर्वावयवानवद्यां रतेरपिह्रीप
दमादधानाम् जितेन्द्रियेशूलिनिपुष्पचापःस्व
कार्य्यसिद्धिंपुनराशशंस ५७ भविष्यतःपत्युरु
माचशम्भोः समाससादप्रतिहारभूमिम् योगा
त्सचान्तःपरमात्मसंज्ञं दृष्ट्वापरंज्योतिरुपारराम
५८ ततोभुजङ्गाधिपतेःफणाग्रैरधःकथंचिद्धृ
तभूमिभागः शनैःकृतप्राणविमुक्तिरीशः प-
र्य्यङ्कबन्धंनिबिडंबिभेद ५९ ॥

उत्तम स्थान समझ कर कामदेव ने अपने धनुष की दूसरी
ज्या (चिल्ले) की नाईं रखी हुई नितंब से गिरती बकुलमाला की
कांची (तड़ागी) को बार बार हाथ से पकड़ती ५५ श्वास के उत्तम
गंध से तृष्णा (लालसा) को बढ़ाकर बिंब (फल) के समान अरुण
ओठ के समीप घूमते भौंरे को डरी हुई चकित दृष्टि से देख के क्षण
क्षण में खेलने के कमल से हटाती ५६ कामदेव की स्त्री रति को
भी लज्जा देती और सब अंगों से सुंदर उस पार्वती को देख कर काम
देव ने जितेंद्रिय महादेव में फिर अपना कार्य सिद्ध करना चाहा ५७
पार्वती भी आगे होने हार अपने स्वामी महादेव के द्वार पर आपहुं-
ची और महादेव भी शुद्ध जोती स्वरूप परमात्मा को समाधि से दे-
खकर निवृत्त हुए ५८ तब बड़ी कठिनता से शेष ने फणों पर
उठाए भूमि के खंड पर बैठे हुए ईश (महादेव) ने सहज स-
हज से प्राणों को छोड़ कर पक्के बंधे हुए वीरासन को शिथिल
किया ५९ ॥

तस्मै शशंस प्रणिपत्य नन्दी शुश्रूषया शैलसुता
मुपेताम् प्रवेशयामास च भर्तुरेनां भ्रूक्षेपमात्रा
नुमतप्रवेशाम् ६० तस्याः सखीभ्यां प्रणिपात-
पूर्वं स्वहस्तलूनः शिशिरात्ययस्य व्यकीर्यत त्र्य
म्बकपादमूले पुष्पोच्चयः पल्लवभङ्गभिन्नः ६१
उमापि नीलालकमध्यशोभि विस्रंसयन्ती नव
कर्णिकारम् चकार कर्णच्युतपल्लवेन मूर्ध्ना प्र
णामं वृषभध्वजाय ६२ अनन्यभाजं पतिमाप्नुही
ति सा तथ्यमेवाभिहिता भवेन न हीश्वरव्याहृ-
तयः कदाचित् पुष्णन्ति लोके विपरीतमर्थम्
६३ कामस्तु बाणावसरं प्रतीक्ष्य पतङ्गवद्वह्निमु
खं विविक्षुः उमासमक्षं हरबद्धलक्ष्यः शरासनज्यां
मुहुराममर्श ६४ ॥

महादेव को प्रणाम कर नंदी ने सेवा के लिये आई पार्वती का निवेदन किया और भवों के हुमाने से ही इस को अंदर ले आने में स्वामी की संमति जान कर पार्वती को अंदर ले आया ६० सखियों के साथ अपने हाथों से तोड़ा हुआ उस पार्वती का वसंत के फूलों और पत्तों का समूह प्रणाम करते ही महादेव के पाओं पर चढ़ गया ६१ नील अलकाओं में शोभायमान नये कनेर के फूलों को गिराती उस पार्वती ने भी कानों से पत्तों को गिराते मूर्धा (सिर) से वृषभध्वज (महादेव) को प्रणाम की ६२ प्रणाम करने से पीछे पार्वती को महादेव ने यह सच्चा ही वाक्य कहा कि तू औरों को न प्राप्त होने योग्य स्वामी को प्राप्त हो क्यों कि जगत में महात्माओं के वाक्य विरुद्ध अर्थ को कभी नहीं जनाते ६३ बाण चलाने का अवसर जानकर आग में गिरते शलभ की नाईं कामदेव ने पार्वती के सामने शिवजी की ओर बाण छोड़ने के लिये बार बार धनुष की ज्या खैंची ६४ ॥

अथोपनिन्ये गिरिशाय गौरी तपस्विने ताम्ररुचा करेण विशोषितां भानुमतो मयूखैर्मन्दाकिनीपुष्करबीजमालाम् ६५ प्रतिग्रहीतुं प्रणयिप्रियत्वात् त्रिलोचनस्तामुपचक्रमे च सम्मोहनं नाम च पुष्पधन्वा धनुष्यमोघं समधत्त बाणम् ६६ हरस्तु किञ्चित्परिलुप्तधैर्यश्चन्द्रोदयारम्भ इवाम्बुराशिः उमामुखे बिम्बफलाधरोष्ठे व्यापारयामास विलोचनानि ६७ विवृण्वती शैलसुतापि भावमङ्गैः स्फुरद्बालकदम्बकल्पैः साचीकृता चारुतरेण तस्थौ मुखेन पर्यस्तविलोचनेन ६८ अथेन्द्रियक्षोभमयुग्मनेत्रः पुनर्वशित्वाद्बलवन्निगृह्य हेतुं स्वचेतोविकृतेर्दिदृक्षुर्दिशामुपान्तेषु ससर्ज दृष्टिम् ६९ ॥

इतने में ही सूर्य के किरणों से सुकाई हुई आकाश गंगा में उपजे हुए कमलों के बीजों की माला पार्वती ने तांबे की नाईं अरुण हाथों से तपस्वी महादेव को चढ़ाई ६५ भक्तों के प्यारे महादेव चढ़ाई हुई उस माला के लेने को आगे नय गये और कामदेव ने फूलों के धनुष पर संमोहन नामी अमोघ बाण चढ़ाया ६६ चंद्रोदय के प्रारंभ में समुद्र की नाईं अंतःकरण के थोड़े हिलने पर महादेव ने बिंब फल की नाईं अरुण ओठों से शोभायमान पार्वती के मुख को तीनों आंखें खोलकर प्रेम से देखा ६७ रोम खड़े होजाने से कांपते हुए छोटे कदंब हक्षों के समान अंगों से शृंगार भाव को प्रगट करती हुई पार्वती भी लज्जा से नेत्र घुमा कर नीचे को मुख कर के स्थित हुई ६८ जितेंद्रिय महादेव ने इंद्रियों के विकारों को फिर बल से रोक कर अपने चित्त के विकार का निमित्त देखने की इच्छा से चारों ओर समीप देशों में दृष्टि फेंकी ६९ ॥ ⁂ ॥ ⁂ ॥ ⁂

स दक्षिणापाङ्गनिविष्टमुष्टिं नतांसमाकुञ्चित
सव्यपादम् ददर्श चक्रीकृतचारुचापं प्रहर्तुमभ्यु
द्यतमात्मयोनिम् ७० तपःपरामर्शविवृद्धमन्यो
र्भ्रूभङ्गदुष्प्रेक्ष्यमुखस्य तस्य स्फुरन्नुदर्चिः सहसा
त्तीयादक्ष्णः कृशानुः किल निष्पपात ७१ क्रो
धं प्रभो संहर संहरेति यावद्गिरः खे मरुतां चरन्ति
तावत्स वह्निर्भवनेत्रजन्मा भस्मावशेषं मदनं च
कार ७२ तीव्राभिषङ्गप्रभवेण वृत्तिं मोहेन संस्त
म्भयतेन्द्रियाणाम् अज्ञातभर्तृव्यसना मुहूर्तं
कृतोपकारेव रतिर्बभूव ७३ तमाशु विघ्नं तपस
स्तपस्वी वनस्पतिं वज्र इवावभज्य स्त्रीसन्निक
र्षं परिहर्तुमिच्छन्नन्तर्दधे भूतपतिः सभूतः ७४

दहिनी आंख के पास मुठी रखे दहिना पांउ सकुचाए खेंच कर धनुष को गोल मंडल की नाईं किये मारने को उद्यत बल लगाने से नये हुए कामदेव को महादेव ने देखा ७० तपस्या में विघ्न डालने से बहुत क्रुद्ध भवों को घुमा कर बड़ा भयानक मुख किये महादेव की तीसरी आंख से बड़ी ज्वाला निकालती हुई आग एकबारगी निकसी ७१ हे स्वामिन् क्रोध हटा लो हटा लो यह बात सारे देवता आकाश में कह ही रहे थे कि महादेव के नेत्र से उपजी हुई आग ने कामदेव को भसम ही कर दिया ७२ चक्षु आदि इंद्रियों की वृत्तियां रोक के दुःसह अभिभव से उपजी हुई मूर्छा ने दो घड़ी तक स्वामी का मरना न समुझने देने से रति पर उपकार किया ७३ वृक्ष को वज्र की नाईं तपस्या के विघ्न उस कामदेव को शीघ्र ही तोड़ कर तपस्वी महादेव स्त्री की समीपता त्याग देने की इच्छा से अपने भूत गणों के साथ ही छिप गये ७४ ॥

शैलात्मजापि पितुरुच्छिरसोऽभिलाषं व्यर्थं समर्थ्य ललितं वपुरात्मनश्च सख्योः समक्षमिति चाधिकजातलज्जा शून्या जगाम भवनाभिमुखी कथञ्चित् ७५ सपदि मुकुलिताक्षीं रुद्रसंरम्भभीत्या दुहितरमनुकम्प्यामद्रिरादाय दोर्भ्याम् सुरगज इव बिभ्रत्पद्मिनीं दन्तलग्नां प्रतिपथगतिरासीद्वेगदीर्घीकृताङ्गः ७६ ॥ इति

अपने मनोहर शरीर और महात्मा पिता (हिमालय) के शिवजी वर प्राप्त होने के मनोरथ को व्यर्थ जान कर (पार्वती भी) (सखियों के सामने अपमान होने से बहुत २ लज्जित) उत्साह छोड बहुत दुःखित घर की ओर गई ७५ महादेव के क्रोध से डर कर आंख मीचे हुए अपनी प्यारी कन्या पार्वती को (बहुत शीघ्र अंगों को बढ़ा कर आगे से लेने गया हुआ) हिमालय भुजों में लेकर दांतों पर कमलिनी लगाए ऐरावत की नाई शोभित हुआ ७६ ॥

इति पं॰ सुखदयाल का बनाया कुमार का तीसरे सर्ग का हिंदी में अनुवाद समाप्त हुआ॰ ॥

चतुर्थः सर्गः ॥

अथ मोहपरायणा सती विवशा कामवधूर्विबोधिता विधिना प्रतिपादयिष्यता नववैधव्यमसह्यवेदनम् १ अवधानपरे चकार सा प्रलयान्तोन्मिषिते विलोचने नविवेद तयोरतृप्तयोः प्रियमत्यन्तविलुप्तदर्शनम् २ अयि जीवितनाथ जीवसीत्यभिधायोत्थितया तया पुरः ददृशे पुरुषाकृति क्षितौ हरकोपानलभस्म केवलम् ३ अथ सा पुनरेव विह्वला वसुधालिङ्गनधूसरस्तनी विललाप विकीर्णमूर्द्धजा समदुःखामिव कुर्वती स्थलीम् ४ उपमानमभूद्विलासिनां करणं यत्तव कान्तिमत्तया तदिदं गतमीदृशीं दशां नविदीर्य्ये कठिनाः खलु स्त्रियः ५ ॥

मूर्छित हो कर हाथ पांउ चलाने से भी रहित पतिव्रता कामदेव की स्त्री रति को बहुत दुःख देने वाला नया विधवा होना जनाने के लिये दैव ने जगाया १ रति ने अपने स्वामि को देखने के लिये मूर्छा से पीछे खुली हुई आंखों को एक दम देखने में प्रवृत्त किया क्योंकि देखने की भूखी आंखों के प्यारे कामदेव का मरना उसने नहीं जाना २ हे प्राणनाथ (स्वामी) तू जीता है ऐसे कह कर उठी हुई रति ने पृथ्वी पर अपने सामने मनुष्य के आकार की महादेव के क्रोध की भस्म (राख) ही देखी ३ भस्म देख कर फिर बहुत दुःखित, केशों को बिखार भूमि पर लोटने से स्तनों पर धूलि लिपटा कर वह रती ऐसी करुणा से रोई कि जीवों को क्या समीप की भूमि को भी रुला दीथी ४ तेरे जिस सुन्दर शरीर की उपमा विलासी (विषयी) मनुष्यों को दी जाती थी वह तेरा शरीर भस्म हो जाने पर भी मेरे शरीर के न फटने से मालूम होता है कि स्त्रिया बहुत कठिन (करड़ी) होती हैं ५ ॥

क्षणमात्रदधीनजीवितां विनिकीर्य्यक्षणाभिन्न
सौहृदः नलिनींक्षतसेतुबन्धनो जलसङ्घातइवा
सिविद्रुतः ६ कृतवानसिविप्रियंनमे प्रतिकूलं
नचतेमयाकृतम् किमकारणमेवदर्शनं विलप
न्त्यैरतयेनदीयते ७ स्मरसिस्मरमेखलागुणैरु
तगोत्रस्खलितेषुबन्धनम् च्युतकेशरदूषितेक्ष
णा न्यवतंसोत्पलताडनानिवा ८ हृदयेवससी
तिमत्प्रियं यदवोचस्तदवैमिकैतवम् उपचार
पदंनचेदिदं त्वमनङ्गःकथमक्षतारतिः ९ पर
लोकनवप्रवासिनः प्रतिपत्स्येपदवीमहंतव
विधिनाजनएषवञ्चित स्त्वदधीनंखलुदेहि
नांसुखम् १० ॥

तटों के बंधन टूट जाने से पानी का समूह कमलिनी की नांईं
तेरे अधीन प्राणों वाली को मुझे कहां फेंक कर एक क्षण
में प्रेम को तोड़ के तू भाग गया है ६ हे प्यारे तूने मेरा कुछ
नहीं बिगाड़ा और मैं ने भी तेरा कुछ अपराध नहीं किया तेरे
देखने के लिये रोती हुई रति को किसी अपराध से बिना तू
क्यों नहीं दर्शन देता ७ हे कामदेव किसी और स्त्री का नाम
लेने पर तड़ागी के सूत्र से बांध कर मारे हुए कान के भूषण
कमल की केशर पड़ जाने से दुखी हुई आंख को स्मरण
करके क्या तू रूठ हुआ है ८ मेरे हृदय में तू बसती है यह
मेरे हित का वाक्य जो तू ने कहा था उसे मिथ्या (झूठ) ही
समुझती हूं जे कभी यह बात सत्य होती तो तेरा शरीर नष्ट
जाने पर रति (मैं) कैसे बच रही ९ पर लोक में गये हुए लौं
नये विदेशी को मैं तो लभ ही ले जंगी किंतु इन जगत के लो
गों को दैव (मंदभाग्य) ने ठग लिया क्यों कि देहधारियों का
सुख तेरे ही अधीन था १० ॥

रजनीतिमिरावगुण्ठिते पुरमार्गे घनशब्दवि
क्लवाः वसतिं प्रियकामिनां प्रिया स्त्वदृते प्राप
यिता क ईश्वरः ११ नयनान्यरुणानि घूर्णयन्
वचनानि स्खलयन्पदे पदे असति त्वयि वारु
णीमदः प्रमदानामधुना विडम्बना १२ अव
गम्य कथीकृतं वपुः प्रियबन्धोस्तव निष्फलोद
यः बहुलेऽपि गते निशाकर स्तनुतां दुःखमनङ्ग
मोक्ष्यति १३ हरितारुणचारुबन्धनः कलपुंस्को
किलशब्दसूचितः वद सम्प्रति कस्य बाणतां न
वचूतप्रसवो गमिष्यति १४ अलिपङ्क्तिरनेकश
स्त्वया गुणकृत्ये धनुषो नियोजिता विरुतैः करु
णस्वनैरियं गुरुशोकामनुरोदितीव माम् १५

रात्रि के अंधेरे से छाये हुए नगर के मार्ग में मेघों के गर्जन से
डरी हुई युवतियों को तेरे बिना आप ही प्रियों के स्थान
पर कौन पहुंचा सकता है ११ अरुण नेत्रों को घुमाता और पद
पद में वाक्यों को गिराता हुआ वारुणी (मदिरा) का मद तेरे
बिना अब युवतियों का अनुकरण (नकल) ही रह गया है १२
हे शरीररहित प्यारे संबंधी तुझ के शरीर की बात ही शेष रही
जान कर चंद्रमा कृष्णपक्ष के बीतने पर शुक्ल पक्ष में भी अपने
उदय होने को व्यर्थ समुझ के बड़े क्लेश से बढ़ता है १३ कोकि
ल के मधुर शब्द से जनाया हुआ हरे और अरुण बंधन से म-
नोहर आम का नया मंजर अब किस का बाण बनेगा यह
तू बता १४ धनुष की ज्या (चिल्ला) बनाकर शोभित की हुई यह
भौरों की पांति दीन स्वर के कूजन (पक्षिशब्द) से नसहने
के योग्य शोक से मेरे पीछे रोती मालूम होती है १५ ॥

प्रतिपद्य मनोहरं वपुः पुनरप्यादिशतावदुत्थि
तः रतिदूतिपदेषु कोकिलां मधुरालापनिस
र्गपण्डिताम् १६ शिरसाप्रणिपत्ययाचिता
न्युपगूढानि सवेपथूनि च सुरतानि च तानि-
ते रहः स्मरसंस्मृत्य न शान्तिरस्ति मे १७ रचितं
रतिपण्डित त्वया स्वयमङ्गेषु ममेदमार्त्तवम्
ध्रियते कुसुमप्रसाधनं तव तच्चारुवपुर्न दृश्य
ते १८ विबुधैरसि यस्य दारुणैरसमाप्ते परिक
र्मणि स्मृतः तमिमं कुरु दक्षिणेतरं चरणं नि
र्मितरागमेहि मे १९ अहमेत्य पतङ्गवर्त्मना
पुनरङ्काश्रयिणी भवामि ते चतुरैः सुरका-
मिनीजनैः प्रिय यावन्न विलोभ्यसे दिवि २० ॥

अभी बहुत सुंदर शरीर धारण किये उठ कर तू मधुर बो
लने में स्वभाव से चतुर कोकिल को क्रीडा (भोग) के
कार्य में फिर दूती बनने की आज्ञा दे १६ एकांत में
पाओं में सिर धर कर मांगे हुए आलिंगन (गले लगा
ना) कांपते कांपते मैथुन करलेना हे कामदेव तेरा
स्मरण कर के मुझे शांति नहीं आती १७ हे क्रीडा में च
तुर तेरे हाथ के बने हुए वसंत ऋतु के फूलों के भूषण मे
रे अंगों में वैसेही बने हैं और उनके बनाने वाला वह तेरा
मनोहर शरीर नहीं दीखता १८ जिस के रंगते रंगते बीच
में ही कठोर देवताओं ने स्मरण कर के तुझे बुला लिया है
उस मेरे दाहिने पांउ पर शीघ्र आकर लाख का रंग चढ़ा
१९ हे प्यारे मैं तो आग में प्रवेश करके पहिले ही तेरे अं
क (गोद) में आबैठती हूं जबतक कि स्वर्ग में चतुर अ
प्सरा जन तुझे लुभा न लेंगी २० ॥

मदनेनविनाकृतारतिः क्षणमात्रंकिलजीविते
तिमे वचनीयमिदंव्यवस्थितं रमणत्वामनुयामि
यद्यपि २१ क्रियतांकथमन्त्यमण्डनं परलोकान्त
रितस्यतेमया सममेवगतोऽस्यतर्किता गतिमङ्गे
नचजीवितेनच २२ ऋजुतांनयतःस्मरामिते
शरमुत्सङ्गनिषण्णधन्वनः मधुनासहसस्मितां
कथां नयनोपान्तविलोकितञ्चयत २३ क्वनुते
हृदयंगमः सखा कुसुमायोजितकार्मुकोमधुः
नखलूग्ररुषापिनाकिना गमितःसोऽपिसुहृद्ग
तांगतिम् २४ अथतैःपरिदेविताक्षरैः हृदयेदिग्ध
शरैरिवार्दितः रतिमभ्युपपत्तुमातुरां मधुरात्मा
नमदर्शयत्पुरः २५ ॥

हे प्यारे मैं तेरे पीछे चाहे सती भी हो जाऊं गी तो भी कामदेव
से बिना रति क्षण भर जीती रही यह निंदा मेरी प्रसिद्ध हो ही गई है
२१ बिना विचारे एकबार ही देह के साथ ही तेरे छिप जाने पर मरी
हुई देह के भी न मिलने से मरने से पीछे करने के योग्य दाह पिं
डदान आदि क्रिया को भी मैं किस भांति करूं २२ अंक में धनुष
रख कर बाण को तीक्ष्ण करते हुए अपने मित्र वसंत के साथ हं
स हंस के बातियां करता और नेत्र घुमा कर कटाक्ष से देखने को
मैं स्मरण करती हूं २३ फूलों के धनुष बनाता तेरे मन का प्यारा
मित्र वसंत कहां है बड़े क्रोधी महादेव ने तेरे साथ ही कहीं उ
से भी भस्म तो नहीं कर दिया २४ विष से लिपटे हुए बाणों की
नाईं अत्यंत शोक से भरे हुए रति के उन विलापों से हृदय में विं
धा हुआ वसंत बहुत दीन रति को धैर्य देने के लिये सामने
आकर प्रगट हुआ २५ ॥

तमवेक्ष्य रुरोद सा भृशं स्तनसम्बाधमुरोजघान च
स्वजनस्य हि दुःखमग्रतो विवृतद्वारमिवोपजायते २६
इति चैनमुवाच दुःखिता सुहृदः पश्य वसन्त किं स्थितम्
तदिदं कणशो विकीर्यते पवनैर्भस्म कपोतकर्बुरम् २७
अपि सम्प्रति देहि दर्शनं स्मर पर्युत्सुक एष माधवः
दयितास्वनवस्थितं नृणां न खलु प्रेम चलं सुहृज्जने २८
अमुना ननु पार्श्ववर्तिना जगदाज्ञा ससुरासुरं तव
बिसतन्तुगुणस्य कारितं धनुषः पेलवपुष्पपत्रिणः २९
गत एव न ते निवर्तते स सखा दीप इवानिलाहतः
अहमस्य दशेव पश्य मामविषह्यव्यसनेन धूमिताम् ३० ॥

वसंत को देख के रति स्तनों और जंघाओं को ताड़न कर बहुत रोने लगी क्यों कि अपने संबंधि के आगे हृदय फाड़ कर दुःख प्रबल हो जाता है २६ और बहुत दुखी हो रति ने सारा वृत्तान्त सुनाकर इसे कहा कि हे बसंत तू देख तेरे मित्र के उस सुंदर देह की शेष रही हुई कबूतर के परों के रंग की धूलि कणा कणा हो कर आकाश में उड़रही है २७ प्यारे अब अवश्य दर्शन दे तेरा मित्र वसंत बहुत उत्कंठित होरहा है क्यों कि स्त्रियों से तो प्रेम झूठा भी हो पर मित्रों से तो बहुत पक्का होता है २८ हे कामदेव पास रहने वाले मित्र वसंत ने कोमल फूलों के बाण भेके सूत्र से बंधी हुई ज्या पर चढ़ाते तेरे धनुष की आज्ञा मे चर अचर सारा जगत कर दिया है २९ हे वसंत वायु से बुझे हुए दीये की नाईं गया हुआ वह तेरा मित्र कामदेव अब नहीं हटता है न सहने के योग्य बहुत दुख से धुखती वती के समान मैं शेष रह गई हूं ३० ॥

विधिनाकृतमर्द्धवैशसं ननुमांकामवधेविमु
ञ्चता अनपायिनिसंश्रयद्रुमे गजभग्नेपतनाय
वल्लरी ३१ तदिदंक्रियतामनन्तरं भवतावन्धुज
नप्रयोजनम् विधुरांज्वलनातिसर्जना न्ननुमां
प्रापयपत्युरन्तिकम् ३२ शशिनासहयातिकौ
मुदी सहमेघेनतड़ित्प्रलीयते प्रमदाःपतिव-
र्त्मगाइति प्रतिपन्नंहिविचेतनैरपि ३३ अमुने
वकषायितस्तनी सुभगेनप्रियगात्रभस्मना
नवपल्लवसंस्तरेयथा रचयिष्यामितनुंविभा
वसौ ३४ कुसुमास्तरणेसहायतां बहुशःसौ
म्यगतस्त्वमावयोः कुरुसम्प्रतितावदाशुमे प्र
णिपाताञ्जलियाचितश्चिताम् ३५ ॥

हे वसंत मुझे छोड़ कामदेव को मारते हुए दैव ने आधी हिंसा की (मुझे अधमुई कर दिया) जैसे कि हाथी से अपने आधार वृक्ष के टूटने पर उपर की लता नीचे ही गिर पड़ती है ३१ हे वसंत इस से बंधु जनों के करने योग्य यह काम तुझे अंत में अवश्य करना चाहिये कि पराधीन हुई हुई जो मुझे आग में दाह देकर स्वामि (कामदेव) के पास तू पहुंचा दे ३२ चंद्रमा के साथ ही चांदनी चली जाती और मेघ के साथ ही बिजली छिप जाती है इस से प्रतीत हुआ कि स्त्रियां अपने पतियों के पीछे जाती हैं यह जड़ों तक भी प्रसिद्ध है ३३ प्यारे के शरीर की इसी सुंदर भस्म से स्तनों को रंग कर नये कोमल पत्तों की सज्जा के समान आग पर अपने शरीर को धर देऊं गी ३४ हे सुशील हमारी फूलों की सज्जा बनाने में तू ने बहुत बेर सहायता की है अब हाथ बांध प्रणाम कर भीष मांगती हूं कि शीघ्र मेरी चिता बना ३५ ॥ ॥

तदनुज्वलनंमदर्पितं त्वरयेर्दक्षिणवातवीजनैः
विदितंखलुतेयथास्मरः क्षणमप्युत्सहतेनमांवि
ना ३६ इतिचापिविधायदीयतां सलिलस्याञ्ज-
लिरेकएवनौ अविभज्यपरत्रतंमया सहितःपा-
स्यतितेसबान्धवः ३७ परलोकविधौचमाधव
स्मरमुद्दिश्यविलोलपल्लवाः निवपेःसहकार
मञ्जरीः प्रियचूतप्रसवोहितेसखा ३८ इतिदेह
विमुक्तयेस्थितां रतिमाकाशभवासरस्वती शफ
रींह्रदशोषविक्लवां प्रथमावृष्टिरिवान्वकम्प
त ३९ कुसुमायुधपत्निदुर्लभ स्तवभर्तानचिरा
द्भविष्यति शृणुयेनसकर्मणागतः शलभत्वंह
रलोचनार्चिषि ४० अभिलाषमुदीरितेन्द्रियःस्व
सुतायामकरोत्प्रजापतिः अथतेननिगृह्यवि-
क्रियामभिशप्तःफलमेतदन्वभूत् ४१ ॥

फिर मलयाचल की वायु से मेरी देह में लगी हुई आग को बहुत शी-
घ्र बढ़ाना क्यों कि तुझे मालूम ही है मेरे बिना कामदेव एक क्षण भी
नहीं रहना चाहता ३६ इस भांति दाह से पीछे तू ने एक ही तिलां
जलि हम दोनों को देनी जिसे तेरा मित्र (कामदेव) परलोक में मेरे
साथ ही प्रेम से पीयेगा ३७ हे वसंत श्राद्ध में पिंड देने के समय का
मदेव के नाम से कोमल पत्तों वाले आम के मंजर तू ने अवश्य देने
क्यों कि तेरा मित्र आम के मंजर का बहुत प्यारा है ३८ इस भांति दे-
ह त्यागने को सन्नद्ध रति पर आकाश वाणी ने ह्रद के सूखने से व्या
कुल दुखी मछली पर पहिली वर्षा की नाईं कृपा की ३९ हे काम
देव की पत्नी थोड़े ही समय में तेरा स्वामी तुझे मिलेगा और सुन
जिस हेतु से वह शिवजी के नेत्र की आग में शलभ बनगया-
है ४० काम की अधिकता से इंद्रियों के बिगड़ जाने पर ब्रह्मा
ने अपनी कन्या (सरस्वती) से संभोग करना चाहा तब इंद्रियें
को रोक कर ब्रह्माने जो इसे शाप दिया था उसका फल (दाह) मिला है ४१

परीणेष्यतिपार्वतींयदा तपसातत्प्रवणीकृतो
हरः उपलब्धसुखस्तदास्मरं वपुषास्वेननियो
जयिष्यति ४२ इतिचाहसधर्मयाचितः स्मरशा
पावधिदांसरस्वतीम् अशनेरमृतस्यचोभयो
र्वशिनश्चाम्बुधराश्चयोनयः ४३ तदिदंपरिर
क्षशोभने भवितव्यप्रियसङ्गमंवपुः रविपी
तजलातपात्यये पुनरोघेनहियुज्यतेनदी ४४
इत्थंरतेःकिमपिभूतमदृश्यरूपं मन्दीचकार
मरणव्यवसायबुद्धिम् तत्प्रत्ययाच्चकुसुमायु
धबन्धुरेना माश्वासयत्सुचरितार्थपदैर्वचोभिः
४५ अथमदनवधूरुपप्लवान्तं व्यसनकृशापरि
पालयाम्बभूव शशिनइवदिवातनस्यलेखा
किरणपरिक्षयधूसराप्रदोषम् ४६ इतिकु॰सं॰च॰स॰

परन्तु तपस्या से अधीन हो कर महादेव जब पार्वती को विवाहें
गे तो विषय सुख का अनुभव कर के आपही कामदेव को शरीर
धारी करेंगे ४२ और धर्म नामी प्रजापति की प्रार्थना से काम
देव के शाप का अंत जनाने वाली यह (पिछली) बात भी ब्रह्मा
ने कही क्योंकि जितेंद्रिय पुरुषों और मेघों से वज्र (क्रोध, बिजली
की आग) और अमृत (प्रसाद जल) ये दोनों वस्तु उपजती हैं ४३
इससे हे सुंदरी स्वामी से मिलने के लिये इस शरीर की रक्षा कर क्यों
कि वर्षा ऋतु में धूप से सूखी हुई नदी भी फिर प्रवाह से भर जाती है
४४ इस भांति किसी अदृश्य प्राणी ने मरने में रति का उद्योग शिथि
ल कर दिया और आकाशवाणी के निश्चय से वसंत ने भी (देवता
की कृपासे तुके अवश्य स्वामी मिलेगा) यह कह कर रति को बहुत धै
र्य दिया ४५ तब दुख से बहुत कृश रति विपत्ति के अंत की प्रतीक्षा
करती रही जैसे किरणों के क्षीण होने से मलिन चंद्रमा की
रेखा रात्रि की प्रतीक्षा करती है ४६ इति पं. सरल स्याल का कुमार
कुमार सम्भव के चौथे सर्ग का हिंदी में अनुवाद समाप्त हुआ ॥

पञ्चमः सर्गः ॥

तथा समक्षं दहता मनोभवं पिनाकिना भग्नम
नोरथा सती निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती प्रिये-
षु सौभाग्यफला हि चारुता १ इयेष सा कर्तुमव
न्ध्यरूपतां समाधिमास्थाय तपोभिरात्मनः
अवाप्यते वा कथमन्यथा द्वयं तथाविधं प्रेम प
तिश्च तादृशः २ निशम्य चैनां तपसे कृतोद्यमां
सुतां गिरीशप्रतिसक्तमानसाम् उवाच मेना प
रिरभ्य वक्षसा निवारयन्ती महतो मुनिव्रतात्
३ मनीषिताः सन्ति गृहेषु देवतास्तपः क्व वत्से
क्व च तावकं वपुः पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शि
रीषपुष्पं न पुनः पतत्रिणः ४ इति ध्रुवेच्छामनु
शासती सुतां शशाक मेना न नियन्तुमुद्यमात् क
ईप्सितार्थस्थिरनिश्चयं मनः पयश्च निम्नाभिमु
खं प्रतीपयेत् ५ ॥

इस भांति अपने सामने कामदेव को भस्म करते हुए महादेव से मनोरथों के खंडित होजाने पर पतिव्रता पार्वती ने मन से अपने सुंदर रूप को धिक्कार दिया क्योंकि स्वामि से प्रेम होना ही सुन्दर रूप का फल है १ उस पार्वती ने समाधि लगाकर तपस्या से अपने रूप को सफल करना (शिवजी को वशकरना) चाहा क्योंकि महादेव से स्वामी और उनसे ऐसा प्रेम कि (आधाशरीरही बनजाना) ऐसे काम और किस भांति सिद्ध हों २ चित्त से महादेव पर आसक्त तपस्या के लिये उद्यम करती को सुन कर बहुत कठिन तपस्या से रुकती हुई मेना ने गले से लगा कर पार्वती को कहा ३ हे उमे हमारे घर में बहुत देवता हैं तू उनकी सेवाकर तेरा शरीर तपस्या के योग्य नहीं है क्यों कि कोमल सिरीह का फूल भौंरे के पाउं को तो सह लेता है और पक्षिओं के पाउं को नहीं सह सकता ४ इस भांति उपदेश देके भी मेना अपनी उमी (पार्वती) को दृढ़ निश्चित तपस्या के उद्योग से नहीं हटा सकी, क्यों कि नीचे जाते पानी और (इष्ट वस्तु में स्थिर निश्चय किये) मन, कोई नहीं रोक सकता ५ ॥

कदाचिदासन्नसखीमुखेन सा मनोरथज्ञं पितरं मनस्विनी अयाचतारण्यनिवासमात्मनः फलोदयान्ताय तपःसमाधये ६ अथानुरूपाभिनिवेशतोषिणा कृताभ्यनुज्ञा गुरुणा गरीयसा प्रजासु पश्चात्प्रथितं तदाख्यया जगाम गौरीशिखरं शिखण्डिमत् ७ विमुच्य सा हारमहार्य्यनिश्चया विलोलयष्टिप्रविलुप्तचन्दनम् बबन्ध बालारुणबभ्रु वल्कलं पयोधरोत्सेधविशीर्णसंहति ८ यथा प्रसिद्धैर्मधुरं शिरोरुहै र्जटाभिरप्येवमभूत्तदाननम् न षट्पदश्रेणिभिरेव पङ्कजं सशैवलासङ्गमपि प्रकाशते ९ प्रतिक्षणं सा कृतरोमविक्रियां व्रताय मौञ्जीं त्रिगुणां बभार याम् अकारि तत्पूर्वनिबद्धया तया सरागमस्या रशनागुणास्पदम् १० ॥

किसी समय दृढ़ चित्तवाली पार्वती ने मनोरथ जानने में चतुर पिता (हिमालय) से कार्य की सिद्धि तक तपस्या करने के लिये प्यारी सखी के द्वारा वन में रहने की आज्ञा चाही ६ तब योग्य आग्रह से प्रसन्न प्रतिष्ठित पिता (हिमालय) की आज्ञा लेकर पार्वती मोरों से भरे हुए उस शिखर पर गई जो कि पीछे से जगत में गौरी के नाम से ही प्रसिद्ध हुआ ७ अपने हठ में पक्की पार्वती ने स्तनों पर से चंदन को मसलती मोतियों की माला को उतार कर बाल सूर्य की नांईं अरुण स्तनों के बढ़ने से फटी हुई वृक्षों की त्वचा (छाल) पहिन ली ८ शोभित अलकाओं से पार्वती का मुख जैसा सुंदर (प्यारा) था जटाओं से भी वैसा ही सुंदर रहा क्योंकि भौंरों की पांति से ही नहीं शैवाल लिपटने से भी कमल शोभा ही देते हैं ९ क्षण क्षण में रोम खड़े करती तिगुनी मूंज की तागी जो व्रत के लिये पार्वती ने बांधी पहिले पहिल बांधने से उसने पार्वती तागड़ी लाल कर दी १० ॥

की

विसृष्टरागादधरान्निवर्तितः स्तनाङ्गरागारुणि-
ताच्चकन्दुकात् कुशाङ्कुरादानपरिक्षताङ्गुलिः
कृतोऽक्षसूत्रप्रणयीतयाकरः ११ महार्हशय्या
परिवर्तनच्युतैः स्वकेशपुष्पैरपियास्मदूयते अ
शेतसाबाहुलतोपधायिनी निषेदुषीस्थण्डि
लएवकेवले १२ पुनर्ग्रहीतुंनियमस्थयातया
द्वयेऽपिनिक्षेपइवार्पितंद्वयम् लतासुतन्वीषुवि
लासचेष्टितं विलोलदृष्टंहरिणाङ्गनासुच १३
अतन्द्रितासास्वयमेववृक्षकान् घटस्तनप्रस्र
वणैर्व्यवर्द्धयत् गुहोऽपियेषांप्रथमाप्तजन्मनां
नपुत्रवात्सल्यमपाकरिष्यति १४ अरण्यबी-
जाञ्जलिदानलालिताः तथाचतस्यांहरिणा-
विशश्वसुः यथातदीयैर्नयनैःकुतूहलात् पु
रःसखीनाममिमीतलोचने १५ ॥

लाख के रंग से रहित ओठ और स्तनों को छू कर अरुण गेंद से हटा कर कुशा तोड़ने से अंगुलियों में फटा हुआ हाथ पार्वती ने अक्षमाला का प्यारा करदिया ११ बड़े मोल की सेजा पर लेटती के केश से गिरे फूलों से भी जो दुखित हो जाती थी वह पार्वती आसन से लेना पृथ्वी पर सो दो भुजा की लताओं में लिपटी हुई सो गई १२ ब्रत में स्थित हो कर उस पार्वती ने फिर ले लेने के लिये इन दोनों के पास अपनी दो वस्तु निक्षेप (अमानत) की नाईं रखी कि कोमल लताओं में बिलास से हिलना और हरिणियों में चंचल देखना १३ आलस को छोड़ कर वह पार्वती अपने हाथों से ही स्तनों की नाईं पानी के घड़े पा के छोटे छोटे इन वृक्षों को बढ़ाती थी बड़े आश्चर्य की नाईं जिन वृक्षों से गौरी के प्रेम को कार्तिकेय भी नहीं हटा सकेगा १४ नीवार की अंजलि देकर प्रेम करने से हरिण सब उस (पार्वती) पर ऐसा विश्वास करने लगे कि सखियों के सामने पार्वती ने उन की आंखों से मिला कर अपनी आंखें मापतीं १५ ॥ ॥

कृताभिषेकांहुतजातवेदसं त्वगुत्तरासङ्गवतीमधीतिनीम् दिदृक्षवस्तामृषयोऽभ्युपागमन्नधर्मवृद्धेषुवयःसमीक्ष्यते १६ विरोधिसत्वोज्झितपूर्वमत्सरं द्रुमैरभीष्टप्रसवार्चितातिथि नवोटजाभ्यन्तरसम्भृतानले तपोवनंतच्चबभूवपावनम् १७ यदाफलंपूर्वतपःसमाधिना नतावतालभ्यममंस्तकाङ्क्षितम् तदानपेक्ष्यस्वशरीरमार्दवं तपोमहत्साचरितुंप्रचक्रमे १८ क्लमंययौकन्दुकलीलयापिया तयामुनीनांचरितंव्यगाह्यत ध्रुवंवपुःकाञ्चनपद्मनिर्मितं मृदुप्रकृत्याचससारमेवच १९ शुचौचतुर्णांज्वलतांहविर्भुजां शुचिस्मितामध्यगतासुमध्यमाविजित्यनेत्रप्रतिघातिनींप्रभा मनन्यदृष्टिःसवितारमैक्षत २० ॥

स्नान किये अग्नि में हवन कर के मृगचर्म ओढ़े स्तोत्र-पाठ करती उस पार्वती को देखने सारे ऋषीश्वर आए क्यों कि धर्म वृद्धों में अवस्था की अपेक्षा नहीं होती १६ उस समय वहां स्वभाव से विरोधी गौ, सिंह आदि जीवों ने पुराना वैर छोड़ दिया, वृक्ष सब मन मांगे पदार्थ उपजा कर अतिथियों को पूजने लगे और पत्तों की नई कुटियाओं मे प्रतिदिन हवन करने से वह वन सारे जगत को पवित्र करने के योग्य हुआ १७ जब पार्वती ने इतनी तपस्या से फलका मिलना असंभव समझा तो शरीर की सुकुमारता छोड़ कर बहुत बड़ी तपस्या करने का प्रारंभ किया १८ गेंद खेलने से भी जो थक जाती थी वह पार्वती मुनियों के करने योग्य कठिन तपस्या को करने लगी इससे निश्चित मालूम हुआ कि स्वभाव से कोमल और कठिन स्वर्ण के कमलों का बना हुआ उस का शरीर था १९ जेठ हाड़ के दिनों में (वह सुंदर मुसकराती पार्वती) बलती हुई चार अग्निओं में बैठ कर नेत्रों को रोकने वाली धूप को जीत के एक टक से सूर्य को देखती थी २० ॥

तथातितप्तं सवितुर्गभस्तिभिर्मुखं तदीयं कमलश्रियं दधौ अपाङ्गयोः केवलमस्य दीर्घयोः शनैः शनैः श्यामिकया कृतं पदम् २१ अयाचितोपस्थितमम्बु केवलं रसात्मकस्योडुपतेश्च रश्मयः बभूव तस्याः किल पारणाविधिर्न वृक्षवृत्तिव्यतिरिक्तसाधनः २२ निकामतप्ता विविधेन वह्निना नभश्चरेणेन्धनसम्भृतेन सा तपात्यये वारिभिरुक्षिता नवैर्भुवा सहोष्माणममुञ्चदूर्ध्वगम् २३ स्थिताः क्षणं पक्ष्मसु ताडिताधराः पयोधरोत्सेधनिपातचूर्णिताः वलीषु तस्याः स्खलिताः प्रपेदिरे चिरेण नाभिं प्रथमोदबिन्दवः २४ शिलाशयां तामनिकेतवासिनीं निरन्तरास्वन्तरवातवृष्टिषु व्यलोकयन्नुन्मिषितैस्तडिन्मयैर्महातपःसाक्ष्य इव स्थिताः क्षपाः २५ ॥

सूर्य के किरणों से बहुत तपा हुआ भी सुंदर पार्वती का मुख कमल की शोभा को प्राप्त हुआ केवल उसकी लंबी लंबी कोमल आंख थोड़ी काली हो गईं २१ हदों की नाईं याचना से बिना मिला हुआ जल और नक्षत्रों के राजा चंद्रमा के किरण ही उस (पार्वती) के भोजन की सामग्री थी अर्थात् इन दो पदार्थों से बिना पार्वती कुछ नहीं खाती थी २२ काठ से बढ़ी हुई चार और सूर्य इन पांच अग्नियों से बहुत तपी हुई पार्वती ने पावस ऋतु में नये जलों के सींचने पर पृथ्वी के साथ ही ऊपर को जाता बहुत लंबा स्वास छोड़ा २३ सघन पलकों पर क्षणभर स्थित हो कर कोमल ओठों से छूते कठिन ऊंचे स्तनों पर गिरने से चूर्णित पहिली वर्षा के बिंदु उदर की रेखाओं में घूमते घूमते चिर पीछे पार्वती की नाभि में पहुंचे २४ वायु के साथ सघन वर्षा होने पर भी खुले चत्वर में शिला पर सोई हुई उस पार्वती को बड़ी तपस्या की साक्षी रात्रियें अपनी दृष्टि के समान बिजली से देखती थीं २५ ॥

निनायसात्यन्तहिमोत्किरानिलाः सहस्यरात्री
रुदवाससत्परा परस्पराक्रन्दिनि चक्रवाकयोः
पुरोवियुक्तेमिथुनेकृपावती २६ मुखेनसाप
द्मसुगन्धिनानिशि प्रवेपमानाधरपत्रशोभि
ना तुषारवृष्टिक्षतपद्मसम्पदां सरोजसन्धान
मिवाकरोदपाम् २७ स्वयंविशीर्णद्रुमपर्णवृत्ति
ता पराहिकाष्ठातपसस्तयापुनः तदप्यपाकीर्ण
मतःप्रियंवदां वदन्त्यपर्णेतिचतांपुराविदः २८
मृणालिकापेलवमेवमादिभि र्व्रतैःस्वमङ्गंग्ल
पयन्त्यहर्निशम् तपःशरीरैःकठिनैरुपार्जितं
तपस्विनांदूरमधश्चकारसा २९ अथाजिनाषा
ढधरःप्रगल्भवाक् ज्वलन्निवब्रह्ममयेनतेज
सा विवेशकश्चिज्जटिलस्तपोवनं शरीरबद्धःप्र
थमाश्रमोयथा ३० ॥

अपने सामने एक दूसरे को बुलाते विरही चकवा चकवी पक्षियों में दया वाली उस पार्वती ने हिम उड़ाते अति शीतल वायु में भी जल में निवास कर के ही पौष की रातें बिताईं २६ अधिक हिम पड़ने से सारे कमलों के नाश हो जाने पर भी उस पार्वती ने राति में पत्रों की नाईं कांपते हुए ओठों से शोभायमान कमल की नाईं उत्तम गंध वाले मुख से जलों में उगे कमल की शोभा बना दी २७ वृक्षों से आप ही गिरे हुए पत्र खाकर निर्वाह करना तपस्या की सब से उत्कृष्ट यह रीति है परंतु इस ने वे पत्र भी छोड़ दिये इस से पौराणिक लोग पार्वती को अपर्णा कहते हैं २८ इस भांति दिन राति अति कठिन व्रतों से अपने सुकुमार शरीर को कृश करती हुई उस पार्वती ने क्लेश सहने योग्य दृढ़ शरीरों से किये हुए मुनियों के तप का तिरस्कार किया २९ इतने में काले हरिण का चर्म ओढ़े हाथ में पलाश का दंड लिये ब्रह्म (वेद के तेज से देदीप्यमान शरीर धारण किये ब्रह्मचर्य आश्रम की नाईं कोई जटा वाला ब्रह्मचारी उस तपोवन में आया ३० ॥

तमातिथेयीबहुमानपूर्वया सपर्य्ययाप्रत्युदि
याय पार्वती भवन्ति साम्येऽपि निविष्टचेतसां वपु
र्विशेषेष्वतिगौरवाः क्रियाः ३१ विधिप्रयुक्तां परि
गृह्य सत्क्रियां परिश्रमं नाम विनीय च क्षणम् उ
मां स पश्यन्नृजुनैव चक्षुषा प्रचक्रमे वक्तुमनु-
ज्झितक्रमः ३२ अपि क्रियार्थं सुलभं समित्कुशं
जलान्यपि स्नानविधिक्षमाणि ते अपि स्वशक्त्या
तपसि प्रवर्त्तसे शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ३३
अपि त्वदावर्जितवारिसम्भृतं प्रवालमासामनुब
न्धि वीरुधाम् चिरोज्झितालक्तकपाटलेन ते तु
लां यदारोहति दन्तवाससा ३४ अपि प्रसन्नं हरिणे
षु ते मनः करस्थदर्भप्रणयापहारिषु य उत्पला
क्षि प्रचलैर्विलोचनैस्तवाक्षिसादृश्यमिव प्रयु-
ञ्जते ३५ ॥

अतिथियों में साधु वह पार्वती पूज्य अर्घ हाथ में लिये बड़े आ
दर से उस ब्रह्मचारी को आगे लेने गई क्योंकि समबुद्धि होने पर
भी स्थिरचित्त लोग नवीन पुरुषों का बहुत ही आदर करते हैं ३१
विधि से की हुई पूजा को लेकर क्षण भर विश्राम करने से पीछे स
रल दृष्टि से ही देखते हुए उस ब्रह्मचारी ने शिष्टों की नाईं पार्वती
से बोलने का आरंभ किया ३२ हवन के साधन काष्ठ, कुशा और
स्नान करने के लिये उत्तम जल तो तुझे सुख से मिलते हैं क्या
और तपस्या करने से कुछ तेरी देह में खेद तो नहीं होता क्योंकि ध
र्म का मुख्य साधन शरीर ही है ३३ चिर काल से लाख का रंग न लगा-
ने से पाटल (गुलाबी) तेरे ओठों के समान तेरे हाथों से सींचे हुए पानी
से उपजे हुए इन लताओं के पत्ते भी बढ़ते हैं ना ३४ हाथ में ली हुई
कुशा को भी छीन ले इन हरिणों में तो तेरा चित्त प्रसन्न है जो क
मल के समान तेरी आंखों के तुल्य अपने चंचल नेत्रों को प्र-
काश करते हैं ३५ ॥

यदुच्यते पार्वति पापवृत्तये नरूपमित्यव्यभि
चारि तद्वचः तथाहि ते शीलमुदारदर्शने तप
स्विनामप्युपदेशतां गतम् ३६ विकीर्णसप्तर्षि
वलिप्रहासिभिस्तथा न गाङ्गैः सलिलैर्दिवश्च्युतैः
यथा त्वदीयैश्चरितैरनाविलैर्महीधरः पावित
एष सान्वयः ३७ अनेन धर्मः सविशेषमद्य मे
त्रिवर्गसारः प्रतिभाति भाविनि त्वया मनोनिर्विष
यार्थकामया यदेक एव प्रतिगृह्य सेव्यते ३८ प्र
युक्तसत्कारविशेषमात्मना न मां परं सम्प्रतिप
त्तुमर्हसि यतः सतां सन्नतगात्रि सङ्गतं मनीषि
भिः साप्तपदीनमुच्यते ३९ अतोऽत्र किञ्चिद्भवतीं
बहुक्षमां द्विजातिभावादुपपन्नचापलः अयं जनः
प्रष्टुमनास्तपोधने न चेद्रहस्यं प्रतिवक्तुमर्हसि ४०

हे पार्वति सुंदररूप पापकर्म (अभिचार) के लिये नहीं होता यह विद्वानों का वाक्य सत्य ही प्रतीत होता है हे सुंदरि जिस से तपस्वी लोग भी तेरे स्वभाव को उपदेश की नाईं श्रद्धा से ग्रहण करते हैं ३६ पुत्र, पौत्र सहित यह हिमालय तेरे मनोहर तपस्या आदि चरित्रों से जैसा पवित्र हुआ है मरीचि आदि सात ऋषियों की दी हुई फूल आदि पूजा से शोभित, आकाश से गिरते गंगा के जलों से भी ऐसा नहीं हुआ ३७ हे अच्छे अभिप्राय वाली मन से काम, अर्थ को छोड़ कर केवल धर्म में ही तेरी दृढ़ भक्ति देखने से मालूम होता है कि धर्म, अर्थ और काम इन तीनों में धर्म ही श्रेष्ठ है ३८ हे नये हुए अंगों वाली आप ही आदर से प्रतिष्ठा देकर तू मुझे अब और कोई (शत्रु) न समझे क्यों कि विद्वान लोग सात पदों के उच्चारण से मैत्री मानते हैं ३९ हे तपस्विनी ब्राह्मण जाति के स्वभाव से ही चपल यह जन तेरी बहुत क्षमा देख कर मित्रता से कुछ पूछना चाहता है जो कभी छिपाने के योग्य नहीं है तो बताना चाहिये ४० ॥

कुलेप्रसूतिःप्रथमस्यवेधसः त्रिलोकसौन्दर्य्यमि-
वोदितंवपुः अमृग्यमैश्वर्य्यसुखंनवंवयः तपःफ
लंस्यात्किमतःपरंवद ४१ भवत्यनिष्टादपिनामदुः
सहान्मनस्विनीनांप्रतिपत्तिरीदृशी विचारमार्गप्र
हितेनचेतसा नदृश्यतेतच्चकृशोदरित्वयि ४२ अ
लभ्यशोकाभिभवेयमाकृति र्विमाननासुभ्रुकुतः
पितुर्गृहे पराभिमर्शोनतवास्तिकः करंप्रसारयेत्प
न्नगरत्नसूचये ४३ किमित्यपास्याभरणानियौवने
धृतंत्वयावार्द्धकशोभिवल्कलम् वदप्रदोषेस्फुट
चन्द्रतारका विभावरीयद्यरुणायकल्पते ४४ दिवं
यदिप्रार्थयसेवृथाश्रमः पितुःप्रदेशास्तवदेवभू
मयः अथोपयन्तारमलंसमाधिना नरत्नमन्विष्य
तिमृग्यतेहितत् ४५ ॥

हिरण्यगर्भ(ब्रह्मा)के वंश में जन्म स्वर्ग मर्त्य और पाताल इन तीन
लोकों में सब से सुंदर देह, यत्न से विना आप ही बड़ी संपदा और नई
जवानी इन से अधिक क्या फल तू तपस्या से चाहती है यह बता ४१
हे कृशोदरि न सहने के योग्य स्वामी आदि से किये हुए निरादर से भी
गंभीर स्त्रियों की ऐसी प्रवृत्ति होती है परंतु चित्त में विचार कर देखने
से कोई अपमान भी तेरा मुझे नहीं दीखता ४२ हे सुंदर भवों वाली
तेरी यह मूर्त्ति दुख देने वाले अपमान के योग्य नहीं है क्यों कि पिता
के घर में निरादर होना ही असंभव है किसी और का भय भी तुझे न-
हीं है क्योंकि सांप के सिरसे रत्न उतारने के लिये हाथ कौन पसारे
४३ फिर किस लिये युवा अवस्था में तू ने भूषण सब उतार बूढ़ों के प
हिनने योग्य दृक्षों की छाल पहिन ली है यह बता कि संध्या से पीछे
(रातमें चंद्रमा और तारा ओं के उदय होने पर कभी सूर्य चढ़ता है
४४ स्वर्ग के लिये तपस्या करनी तेरी व्यर्थ है क्यों कि तेरे पिता (हिमा
लय) के शिखर स्वर्ग से न्यून नहीं है और स्वामी के लिये तपस्या क
रनी भी व्यर्थ ही है क्योंकि गाहक लोग रत्न का अन्वेषण करते हैं
कभी रत्न गाहकों का अन्वेषण करने नहीं जाता ४५ ॥

निवेदितं निश्वसितेन सोष्मणा मनस्तु मे संशयमेव
गाहते न दृश्यते प्रार्थयितव्य एव ते भविष्यति प्रार्थि
तदुर्लभः कथम् ४६ अहो स्थिरः कोऽपि तवेप्सितो-
युवा चिराय कर्णोत्पलशून्यतां गते उपेक्षते यः श्लथ
लम्बिनीर्जटाः कपोलदेशे कलमाग्रपिङ्गलाः ४७
मुनिव्रतैस्त्वामतिमात्रकर्शितां दिवाकराप्लुष्टविभूष
णास्पदाम् शशाङ्कलेखामिव पश्यतो दिवा सचेतसः
कस्य मनो न दूयते ४८ अवैमि सौभाग्यमदेन वञ्चितं
तव प्रियं यश्चतुरावलोकिनः करोति लक्ष्यं चिरम-
स्य चक्षुषो न वक्त्रमात्मीयमरालपक्ष्मणः ४९ कि
यच्चिरं श्राम्यसि गौरि विद्यते ममापि पूर्वाश्रमसञ्चि
तं तपः तदर्द्धभागेन लभस्व काङ्क्षितं वरं तमिच्छा
मि च साधु वेदितुम् ५० ॥

तेरे लंबे सांस लेने से वर की कामना जान के भी मेरा चित्त संश
य में ही पड़ता है कि जगत में तेरी प्रार्थना के योग्य कोई नहीं
दीख पड़ता तो प्रार्थना करने पर दुर्लभ कौन होगा ४६ आश्च
र्य तो यह है कि जिसे तू चाहती है वह वज्र के समान कठिन
हृदय वाला कोई जवान है जो चिर से कान के भूषणों को छो
ड़े कपोलों पर धान्य की सिला सी पीली शिथिल हो कर लट
कती तेरी जटाओं को उपेक्षा करता है ४७ दिन में चंद्रमा की रे
खा के समान चांद्रायण आदि मुनिओं के व्रतों से बहुत कृश औ
र सूर्य के तेज से भुजा कंठ आदि अंगों के दाह होने पर काली
हुई २ को तुझे देखकर किस जीते मनुष्य का मन दुखी नहीं हो
ता ४८ मैं तेरे उस प्यारे को सुंदर रूप के गर्व से वंचित (ठगा) स
मुझता हूं जो टेढ़ी पलकें उठाय मनोहर देखती तेरी इस आंख
के सामने चिर से अपना मुख नहीं दिखाता ४९ हे गौरि तू कब
तक तपस्या करेगी मेरे पास भी ब्रह्मचर्य आश्रम का इकट्ठा कि
या हुआ तप है उसका आधा ले कर मनोरथ सिद्ध कर ले अथवा
किसे बरना चाहती है मैं उसे भली भांति जानना चाहता हूं ५० ॥

इति प्रविश्याभिहिता द्विजन्मना मनोगतं सा न श
शाक शंसितुम् अथो वयस्यां परिपार्श्ववर्तिनीं वि
वर्तितानञ्जननेत्रमैक्षत ५१ सखी तदीया तमुवाच
वर्णिनं निबोध साधो तव चेत्कुतूहलम् यदर्थमम्भो
जमिवोष्णवारणं कृतं तपःसाधनमेतया वपुः ५२
इयं महेन्द्रप्रभृतीनधिश्रियश्चतुर्दिगीशानवमत्य
मानिनी अरूपहार्यं मदनस्य निग्रहात् पिनाकपा
णिं पतिमाप्तुमिच्छति ५३ असह्यहुंकारनिवर्ति
तः पुरा पुरारिमप्राप्तमुखः शिलीमुखः इमां हृदि
व्यायतपातमक्षिणोद्विशीर्णमूर्तेरपि पुष्पधन्व
नः ५४ तदाप्रभृत्युन्मदना पितुर्गृहे ललाटिका
चन्दनधूसरालका न जातु बाला लभते स्म निर्वृ
तिं तुषारसंघातशिलातलेष्वपि ५५ ॥

इस भांति रहस्य जानने के लिये हठों की नाईं ब्राह्मण से पूछी हुई पार्वती हृदय में स्थित स्वामी का नाम लज्जा से न कह सकी किंतु इस ने अंजन से रहित आंख के घुमाने से ही पास रहने वाली सखी को बताने की आज्ञा दी ५१ पार्वती की सखी ने उस ब्रह्मचारी से कहा हे विद्वन् जो आपकी सुनने की इच्छा है तो सुनिये कि जिस लिये इसने धूप में कमल के छत्र की नाईं अपना शरीर तप का साधन किया है ५२ यह मानिनी बड़े ऐश्वर्य वाले दिशाओं के स्वामी इंद्र, वरुण, कुबेर और यम को त्याग के कामदेव के मारने से सुंदर रूप से न वश होने योग्य महादेव को वरने की इच्छा करती है ५३ क्रोध युक्त हुंकार से शिव से हटाया हुआ देह रहित कामदेव का बाण महादेव तक न पहुंच कर इस पार्वती के हृदय में बड़े तीक्ष्ण प्रहार से आ लगा है ५४ उस दिन से लेकर काम से पीड़ित माथे पर लगे तिलक के चंदन से अलकाओं को मलिन किये बालक यह पार्वती पिता के घर में हिम की शिलाओं पर बैठ के भी कभी सुख नहीं पाती ५५ ॥

उपात्तवर्णे चरितेपिनाकिनः सबाष्पकण्ठस्खलि
तैः पदैरियम् अनेकशः किन्नरराजकन्यका वना-
न्तसङ्गीतसखीररोदयत ५६ त्रिभागशेषासु निशा
सुचक्षणं निमील्यनेत्रे सहसाव्यबुध्यत क्वनीलक
ण्ठव्रजसीत्यलक्ष्यवा गसत्यकण्ठार्पितबाहुबन्ध
ना ५७ यदाबुधैः सर्वगतस्त्वमुच्यसे नवेत्सिभावस्थ
मिमंकथंजनम् इतिस्वहस्तोल्लिखितश्चमुग्धया
रहस्युपालभ्यतचन्द्रशेखरः ५८ यदाचतस्याधिग
मेजगत्पतेरपश्यदन्यंनविधिंविचिन्वती तदास-
हास्माभिरनुज्ञयागुरोरियंप्रपन्नातपसेतपोवन
म् ५९ द्रुमेषुसख्याकृतजन्मसुस्वयं फलंतपःसा
क्षिषुदृष्टमेष्वपि नचप्ररोहाभिमुखोऽपिदृश्यते मनो
रथोऽस्याः शशिमौलिसंश्रयः ६० ॥

और वन में सखियों के साथ गाते हुए महादेव के चरित्र गाने के प्रारंभ से ही आंसू बहा कर कंठ में गिरते पदों से इस पार्वती ने कई वेर किन्नर राजों की कन्याओं को रुआ दिया है ५६ पहर रात शेष रहने पर भी क्षण भर आंख मीच कर हे नीलकंठ (महादेव) कहां जाते हो भ्रम से इस भांति शीघ्र कह कर झूठ ही कंठ में भुजा लिपटाए यह (पार्वती) [illegible] है ५७ अपने हाथ से महादेव की मूर्ति लिख कर मोह से भरी हुई यह पार्वती एकांत में इस भांति शिवजी को उपालंभ देती है कि विद्वान् लोग जब तुझे विभु (अंतर्यामि) कहते हैं तो अपने प्यारे भक्त इस जन (मुझ) को तू क्यों नहीं जानता ५८ जब इस जगदीश्वर (महादेव) की प्राप्ति का उपाय और कोई नहीं दीख पड़ा तो यह पार्वती पिता की आज्ञा से तपस्या करने के लिये हमारे साथ तपोवन में आई ५९ तपस्या के प्रारंभ से ही साक्षिओं के समान पार्वती के अपने हाथों से लगाए हुए वृक्षों में फल भी लगने लगे परंतु महादेव के आश्रित इस (पार्वती) के मनोरथ का अंकुर भी निकलता नहीं दीख पड़ा ६० ॥

नवेद्मिसप्रार्थितदुर्लभःकदा सखीभिरस्रोत्तरमी
क्षितामिमाम् तपःकृशामभ्युपपत्स्यतेसखीं वृ
षेवसीतांतदवग्रहक्षताम् ६१ अगूढसद्भावमि
तीङ्गितज्ञया निवेदितोनैष्ठिकसुन्दरस्तया अ
यीदमेवंपरिहासइत्युमा मपृच्छदव्यञ्जितह
र्षलक्षणः ६२ अथाग्रहस्तेमुकुलीकृताङ्गुलौ स
मर्पयन्तीस्फटिकाक्षमालिकाम् कथञ्चिदद्रेस्त
नयामिताक्षरं चिरव्यवस्थापितवागभाषत ६३
यथाश्रुतंवेदविदांवरत्वया जनोऽयमुच्चैःपदल
ङ्घनोत्सुकः तपःकिलेदंतदवाप्तिसाधनं मनोर
थानामगतिर्नविद्यते ६४ अथाहवर्णीविदितो
महेश्वर स्तदर्थिनीत्वंपुनरेववर्त्तसे अमङ्गला
भ्यासरतिंविचिन्त्यतम् तवानुवृत्तिं नचकर्तुमुत्स

सखियों से रोरो कर देखी हुई तपस्या करने से कृश इस पार्वती पर प्रार्थ
ना करने से भी दुर्लभ (महादेव) मालूम नहीं कब अनुग्रह करेगा जैसे
अनावृष्टि से सूकी हुई भूमि पर इंद्र वर्षा करे ६१ पार्वती का अभिप्रा-
य जानने में चतुर उस सखी ने सुंदर ब्रह्मचारी को इस भांति सारा उत्त-
म वृत्तांत सुना दिया तब वह ब्रह्मचारी अपने हर्ष के चिह्न छिपाए पार्व-
ती से पूछने लगा कि प्यारी क्या यह ऐसी खेल की बात ही है ६२ इस से अ
नंतर अंगुलियें सकुचाये हाथ पर स्फटिक (बिलोर) की जपमाला रख
के चिर काल से बोलनेका प्रारंभ करती हुई उस पार्वती ने बड़े कष्ट से थोड़े
से अक्षर कहे ६३ हे वेदिकों में श्रेष्ठ जैसा तूने सुना यह ठीक है कि यह
जन (मैं) बड़ी ऊंची पदवी पाने की उत्कंठा कर रहा है यद्यपि इस त-
पस्या से वह पद मिलना कठिन है तो भी क्या करूं चित्त का संकल्प न
हीं हटता ६४ पार्वती की बात सुन कर ब्रह्मचारी बोला मैंने समझ लिया
कि जिसने तेरा मनोरथ तोड़ दिया था उसी महादेव को तू फिर भी चाह
रही है परंतु उस महादेव को मंद कार्यों में प्रवृत्त जान कर मैं तेरी बात
में सम्मति नहीं दे सकता ६५ ॥

अवस्तुनिर्बन्धपरेकथंनुते करोऽयमामुक्तविवा
हकौतुकः करेणशम्भोर्वलयीकृताहिना सहिष्य
तेतत्प्रथमावलम्बनम् ६६ त्वमेवतावत्परिचि
न्तयस्वयं कदाचिदेतेयदियोगमर्हतः वधूदुकू
लंकलहंसलक्षणं गजाजिनंशोणितबिन्दुवर्षि
च ६७ चतुष्कपुष्पप्रकरावकीर्णयोः परोऽपिको
नामतवानुमन्यते अलक्तकाङ्कानिपदानिपादयो
र्विकीर्णकेशासुपरेतभूमिषु ६८ अयुक्तरूपंकिम
तःपरंवद त्रिनेत्रवक्षःसुलभंतवापियत् स्तनद्व
येऽस्मिन्हरिचन्दनास्पदे पदंचिताभस्मरजःकरि
ष्यति ६९ इयञ्चतेऽन्यापुरतोविडम्बना यदूढ-
यावारणराजहार्य्यया विलोक्यवृद्धोक्षमधिष्ठितं
त्वया महाजनःस्मेरमुखोभविष्यति ७० ॥

हे तुच्छ वस्तु में हठ करने वाली विवाह का कङ्गना बांधे यह तेरा हा
थ सांप लिपटाए महादेव के हाथ से पहिले पकड़ने को किस भा
ति सहेगा ६६ पहिले तूही अपने मन में विचार हंस की नाईं श्वेत वर्ण
वहू का वस्त्र और लोहू की बूंदें बरसाता हाथी का नया चमड़ा ये दोनों इकट्ठे हो
कर कभी शोभा देते हैं ६७ चौके के आंगन में फूलों पर चलने के योग्य तेरे पाओं
के लाख के रंग (महावरी) वाले चिह्न शवों के केशों से छाई मसान
की भूमि पर लगें इस बात को वैरी भी कौन स्वीकार करेगा ६८ म
हादेव के साथ आलिंगन करने से सहज मे प्राप्त होती मसान की
धूलि चंदन लगाने के योग्य तेरे इन स्तनों पर आलगेगी इस से अ
धिक अयोग्य बात क्या है यह तू बता ६९ और प्रारंभ में ही यह
एक तेरा और भी परिहास होगा कि विवाह के अनंतर उत्तम हाथी
पर चढ़ा के लेजाने योग्य तुझे बूढ़े बैल पर चढ़ी को देख कर
सब सज्जन हंसने लगेंगे ७० ॥

द्वयंगतंसम्प्रतिशोचनीयतां समागमप्रार्थनया
पिनाकिनः कलाचसाकान्तिमतीकलावत स्त्व
मस्यलोकस्यचनेत्रकौमुदी ७१ वपुर्विरूपाक्षम
लक्ष्यजन्मता दिगम्बरत्वेननिवेदितं वसु वरेषु
यद्बालमृगाक्षिमृग्यते तदस्तिकिंव्यस्तमपित्रि
लोचने ७२ निवर्तयास्मादसदीप्सितान्मनः क्व त
द्विधस्त्वंक्वचपुण्यलक्षणा अपेक्ष्यतेसाधुजनेनन
वैदिकी श्मशानशूलस्यनयूपसत्क्रिया ७३ इ
तिद्विजातौप्रतिकूलवादिनि प्रवेपमानाधरलक्ष्य
कोपया विकुञ्चितभ्रूलतमाहितेतया विलोच
नेतिर्य्यगुपान्तलोहिते ७४ उवाचचैनंपरमार्थतो
हरं नवेत्सिनूनंयतएवमात्थमाम् अलोकसा-
मान्यमचिन्त्यहेतुकं द्विषन्तिमदाश्चरितंमहात्म
नाम् ७५ ॥

महादेव को प्राप्त होने की कामना से अब (हर के सिर पर स्थित चंद्र
मा की कला (रेखा) और सारे जगत के नेत्रों को आनंद देने वाली तू)
इन दोनों को शोक करना चाहिये ७१ आंख विकृत होने से शरीर भी सुंदर
र नहीं, जन्म नमालूम होने से कुल भी उत्तम कोई नहीं और नंगा है तो
धनी भी नहीं है मृगनेत्रे (पार्वती) वर में जो जो वस्तु चाहियें उन में से
कोई एक भी महादेव में है क्या ७२ इस मंद संकल्प से मन को हटाले
कहां वह भिखारी और कहां उत्तम भाग्यों के चिह्नों वाली तू वेकृत श्रे
तरहे महात्मा जन मसान की लकड़ी लेआ कर यज्ञ का खंभा न
हीं बना लेते ७३ ब्राह्मण के ऐसे विरुद्ध बोलने पर कांपते ओठों से
क्रुद्ध मालूम होती पार्वती ने दोनों पासों से रक्त आंखें तिरछी कर
के कुटिल भवों में चढ़ाई ७४ और उस ब्रह्मचारी को कहा कि तेरी
बातें सुन कर मालूम हुआ तुझे महादेव के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान
नहीं है इतर जनों में न देखने से निमित्त जानने के विनाही मूर्ख
लोग महात्माओं के चरित्रों में दोष लगाते हैं ७५ ॥

विपत्प्रतीकारपरेण मङ्गलं निषेव्यते भूतिसमुत्सुकेन वा जगच्छरण्यस्य निराशिषः सतः किमेभिराशोपहतात्मवृत्तिभिः ७६ अकिञ्चनः सन्प्रभवः स सम्पदां त्रिलोकनाथः पितृसद्मगोचरः स भीमरूपः शिव इत्युदीर्यते न सन्ति याथार्थ्यविदः पिनाकिनः ७७ विभूषणोद्भासि पिनद्धभोगि वा गजाजिनालम्बि दुकूलधारि वा कपालि वा स्यादथवेन्दुशेखरं न विश्वमूर्तेरवधार्यते वपुः ७८ तदङ्गसंसर्गमवाप्य कल्पते ध्रुवं चिताभस्मरजो विशुद्धये तथा हि नृत्याभिनयक्रियाच्युतं विलिप्यते मौलिभिरम्बरौकसाम् ७९ असम्पदस्तस्य वृषेण गच्छतः प्रभिन्नदिग्वारणवाहनो वृषा करोति पादावुपगम्य मौलिना विनिद्रमन्दाररजोरुणाङ्गुली ८० ॥

विपत्ति हटाने के लिये अथवा ऐश्वर्य की कामना से लोग गंध, पुष्प आदि मंगल द्रव्यों की सेवा करते हैं परंतु सारे जगत की रक्षा करने में समर्थ, सारी कामनाओं से रहित कल्याण मूर्ति महादेव को कामनाओं से बंधे हुए इन मंगलों से क्या प्रयोजन है ७६ अति निर्धन भी वह सारी संपदाओं का कारण, मसान का वासी भी तीन लोकों (स्वर्ग मर्त्य और पाताल) का स्वामी और भयानक रूप भी अति सुंदर कहा जाता है इस से मालूम हुआ कि महादेव के यथार्थ रूप को कोई नहीं जानता ७७ भूषणों से शोभित वा सांपों से लिपटा हुआ, हाथी का चमड़ा ओढ़े वा सुंदर वस्त्र धारण किये और सिर पर कपाल धरे अथवा चंद्रमा की कला लगाए अष्टमूर्ति महादेव का शरीर सब भांति का हो सकता है ७८ महादेव के अंगों से छू कर मसान की धूलि भी निश्चय से शुद्ध हो जाती है इसी से तांडव नृत्य में पदों के अर्थ जनाने की क्रिया से गिरी हुई उस धूलि को सब देवता अपने सिरों पर धारण करते हैं ७९ मद टपकाते ऐरावत हाथी पर चढ़ने योग्य इंद्र प्रणाम करके खिले हुए मंदार फूलों की धूलि से बैल पर चढ़े दरिद्री महादेव के पाओं की अंगुलियां लाल कर देता है ८० ॥

विवक्षतादोषमपिच्युतात्मना त्वयैकमीशं प्रतिसाधुभाषितम् यमामनन्त्यात्मभुवोऽपि कारणं कथंसलक्ष्यप्रभवोभविष्यति ८१ अलंविवादेनयथाश्रुतस्त्वया तथाविधस्तावदशेषमस्तुसः ममात्रभावैकरसंमनःस्थितं नकामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते ८२ निवार्यतामालिकिमप्ययंवटुः पुनर्विवक्षुः स्फुरितोत्तराधरः नकेवलंयोमहतोऽपभाषते शृणोतितस्मादपियःसपापभाक् ८३ इतोगमिष्याम्यथवेतिवादिनी चचालबालास्तनभिन्नवल्कला स्वरूपमास्थायचतांकृतस्मितः समाललम्बेवृषराजकेतनः ८४ ॥

दुष्ट स्वभाव से महादेव को दूषण लगाने की इच्छा से भी तू ने एक बात बहुत अच्छी कही कि शिव के जन्म का कुल ही नहीं मालूम क्यों कि विद्वान लोग जिसे ब्रह्मा का भी कारण कहते हैं उसके जन्म को कौन जान सके ८१ यह विवाद करना व्यर्थ है तू ने महादेव के विषय में जो जो सुना है वह सब ठीक ही हो परन्तु एकाग्र भाव से महादेव में स्थिर स्वतंत्र मेरा मन लोकापवाद से नहीं डरता ८२ हे सखि ओठों के कांपने से फिर भी कुछ कहने की इच्छा करते हुए इस बालक को हटा दे क्यों कि महात्माओं का निंदक ही नहीं किंतु उस से जो निंदा सुने वह भी पाप का भागी होता है ८३ नहीं तो मैं यहां से चली जाऊंगी यह कह के वेग से स्तनों के वल्कल (वस्त्र) को सरकाती पार्वती चल पड़ी तब महादेव ने अपने स्वरूप को धारण करके हंसते हंसते पार्वती को पकड़ लिया ८४ ॥

तं वीक्ष्य वेपथुमती सरसाङ्ग-यष्टि र्निक्षेपणाय पदमुद्धृतमुद्वहन्ती मार्गाचलव्यतिकराकुलितेव सिन्धुः शैलाधिराजतनया न ययौ न तस्थौ ८५ अद्यप्रभृत्यवनताङ्गि तवास्मि दासः क्रीतस्तपोभिरिति वादिनि चन्द्रमौलौ अह्नाय सा नियमजं क्लमम् उत्ससर्ज क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते ८६ ॥ इति कालिदासकृतौ कुमारसम्भवे महाकाव्ये तपः फलोदयो नाम पञ्चमः सर्गः ५ ॥ ∴ ∴ ॥

महादेव के दर्शन से सब अंगों में पसीने से भीगी हुई जाने के लिये पाउं उठाए पार्वती मार्ग में पर्वत से रुकी हुई नदी की नाईं लज्जा से न गई और न स्थित हुई ८५ हे कोमल अंगों वाली (पार्वति) आज से लेकर तपस्या से खरीदा हुआ मैं तेरा दास हूं महादेव के इस कथन पर पार्वती ने तपस्या के सब क्लेश भूल दिये क्यों कि कार्य सिद्ध हो जाने पर क्लेशों की गणना ही नहीं रहती ८६ ॥ इति पं० सुखदयालका बनाया हुआ कुमारसम्भव के ५ वें सर्ग का हिंदी में अनुवाद समाप्त हुआ ॥ ∴

षष्ठः सर्गः ॥

अथ विश्वात्मने गौरी सन्दिदेश मिथः सखीम्
दाता मे भूभृतां नाथः प्रमाणीक्रियतामिति १
तया व्याहृतसन्देशा सा बभौ निभृता प्रिये चू-
तयष्टिरिवाभ्याशे मधौ परभृतोन्मुखी २ स त-
थेति प्रतिज्ञाय विसृज्य कथमप्युमाम् ऋषी-
न्ज्योतिर्मयान्सप्त सस्मार स्मरशासनः ३ ते-
प्रभामण्डलैर्व्योम द्योतयन्तस्तपोधनाः सारु-
न्धतीकाः सपदि प्रादुरासन्पुरः प्रभोः ४ आ-
प्लुतास्तीरमन्दारकुसुमोत्किरवीचिषु व्योमग-
ङ्गाप्रवाहेषु दिङ्नागमदगन्धिषु ५ ॥

महादेव के अनुग्रह से अनन्तर पार्वती ने सखी के द्वारा एकांत मैं महादेव को संदेशा कह भेजा कि पर्वतों के राजा (हिमालय) से यदि आप मेरा दान मांगें तो बहुत अनुग्रह हो १ महादेव में बहुत आसक्त पार्वती सखी के द्वारा संदेश पहुंचा कर वसंत ऋतु में कोकिल के द्वारा बोलते हुए समीप स्थित आम के वृक्ष की नांई बहुत शोभा को प्राप्त हुई २ हिमालय से कन्यादान मांगना स्वीकार कर के और बहुत खेद से उमा (पार्वती) को छोड कर महादेव ने तेजोमय अंगिरा आदि सात ऋषियों का स्मरण किया ३ अपने तेजों के पुंजों से आकाश में प्रकाश करते अरुंधती को साथ लिये तपोधन वे सात ऋषीश्वर शीघ्र ही महादेव के सामने आकर प्रगट हुए ४ तीर पर खिले हुए मंदार (कल्पवृक्ष) के फूलों को अपनी तरंगों से बहाते और दिग्गज हाथियों के मद घुलने से गंधीले आकाश-गंगा के प्रवाहों में स्नान किये ५ ॥

मुक्तायज्ञोपवीतानि बिभ्रतोहैमवल्कलाः
रत्नाक्षसूत्राःप्रव्रज्यां कल्पवृक्षाइवाश्रिताः ६
अथःप्रस्थापिताश्वेन समावर्जितकेतुना स
हस्ररश्मिनासाक्षात् सप्रणाममुदीक्षिताः ७
आसक्तबाहुलतया सार्द्धमुद्धृतयाभुवा महा
वराहदंष्ट्रायां विश्रान्ताःप्रलयापदि ८ सर्गशे
षप्रणयनात् विश्वयोनेरनन्तरम् पुरातनाः
पुराविद्भि र्धातारइतिकीर्त्तिताः ९ प्राक्तनानां
विशुद्धानां परिपाकमुपेयुषाम् तपसामुपभु
ञ्जानाःफलान्यपितपस्विनः १० तेषांमध्यग
तासाध्वी पत्युःपादार्पितेक्षणा साक्षादिवतपः
सिद्धिर्बभासेबहुरुन्धती ११ ॥

मोतियों के यज्ञोपवीत स्वर्ण के वल्कल (वृक्षों की त्वचा) और रत्नों
की माला पहिनने से सन्यास मार्ग में प्रवृत्त कल्पवृक्षों के समान ६
जिन के मंडल में अभिघात (टकराने) के भय से ध्वजा को नवाए
नीचे घोड़ा चलाते प्रणाम करते सूर्य से जाने की अनुज्ञा के लि
ये देखे हुए ७ और प्रलय काल के संकट में भी दाढ़ों से भुजा
लिपटाए पाताल से निकाली हुई पृथ्वी के साथ ही महावाराह
(सूकरअवतार) की दाढ़ पर विश्राम करते ८ ब्रह्मा से अनंतर शे
ष सृष्टि के करने से पुराणवेत्ता व्यास आदि जिन्हें पुराने धाता (वि
श्व के कर्त्ता) कहते हैं ९ फल देने में उन्मुख (सन्नद्ध) पूर्व जन्म
की की हुई तपस्याओं के फल भोगते हुए भी सब पदार्थों से चि
त्त को हटा कर तपस्या में ही लगे हुए १० अपने स्वामी वशिष्ट
के चरणों में दृष्टि लगाए पतिव्रता अरुंधती उन ऋषीश्वरों में मू
र्त्ति धारण किये तपस्या की सिद्धि के समान बहुत शोभित हुई
११ ॥ ∴ ∴ ∴ ॥

तामगौरवभेदेन मुनींश्चापश्यदीश्वरः स्त्रीपुमा
नित्यनास्थैषा वृत्तं हि महितं सताम् १२ तद्दर्शना
दभूच्छम्भोर्भूयान्दारार्थमादरः क्रियाणां खलु
धर्म्याणां सत्पत्न्यो मूलकारणम् १३ धर्मेणापि
पदं शर्वे कारिते पार्वतीं प्रति पूर्वापराधभीतस्य
कामस्योच्छ्वसितं मनः १४ अथ ते मुनयः सर्वे मा
नयित्वा जगद्गुरुम् इदमूचुरनूचानाः प्रीतिकण्ट
कितत्वचः १५ यद्ब्रह्म सम्यगाम्नातं यदग्नौ विधि
ना हुतम् यच्च तप्तं तपस्तस्य विपक्वं फलमद्य नः
१६ यदध्यक्षेण जगतां वयमारोपितास्त्वया म
नोरथस्याविषयं मनोविषयमात्मनः १७ ॥

महादेव ने अरुंधती की ओर सात ऋषियों को एकसी दृष्टि सेही देखा क्योंकि स्त्री पुरुष का भेद छोड़ कर महात्माओं के चरित्रों का ही समान किया जाता है १२ अरुंधती के दर्शन से महादेव को विवाह करने में बहुत आदर हुआ क्योंकि धर्मयुक्त यज्ञ आदि कर्मों का मूल कारण पतिव्रता स्त्री ही होती है १३ धर्म की रीति से भी पार्वती की ओर महादेव का चित्त झुकाने से पहिले अपराध से डरे हुए कामदेव के चित्त में फिर जीने की आशा उपजी १४ व्याकरण आदि अंगों के सहित चारों वेदों में पूर्ण विद्वान प्रेम से सारी देह में रोमांचित वे सब ऋषी जगत के गुरु (महादेव) को साष्टांग प्रणाम आदि मान देकर यह बोले १५ कि महाराज हमने जो भली भांति वेद पढ़ा, जो विधि से अग्नि में हवन किया और जो निरंतर तपस्या की उन सब का फल हमें आज मिला है १६ हे जगत के स्वामी जिस से तू ने आप हमारा स्मरण किया यह कैसी बात है कि जिसे मन में भी कोई ना विचार सके १७ ॥

यस्यचेतसिवर्तेथाः सतावत्कृतिनांवरः किंपुन ब्रह्मयोनेर्यस्तवचेतसिवर्तते १८ सत्यमर्काच्चसो माच्च परममध्यास्महेपदम् अद्यतूच्चैस्तरंतस्मात्स्म रणानुग्रहात्तव १९ त्वत्संभावितमात्मानंबहुम न्यामहेवयम् प्रायःप्रत्ययमाधत्ते स्वगुणेषूत्तमा दरः २० यानःप्रीतिर्विरूपाक्ष त्वदनुध्यानस- म्भवा साकिमावेद्यतेतुभ्य मन्तरात्मासिदेहिना म् २१ साक्षाद्दृष्टोऽसिनपुन र्विद्मस्त्वांवयमञ्जसा प्रसीदकथयात्मानं नधियांपथिवर्तसे २२ किंये नसृजसिव्यक्तमुतयेनबिभर्षितत् अथविश्व स्यसंहर्ता भागःकतमएषते २३ ॥

क्यों कि जिस के चित्त में तेरा स्मरण हो वह पुरुष पुण्यात्मा ओं में श्रेष्ठ होता है तो वेदों का कारण तू जिसका स्मरण करे उस के पुण्यवान होने में क्या ही संदेह है १८ यह बात सच है कि सूर्य और चंद्रमा से ऊंचे स्थान पर हम स्थित हैं आज तो ते रे स्मरण के प्रसाद से हम उन दोनों से बहुत ही ऊंचे होगये हैं १९ तेरे सन्मान करने से हम अपने आप को बहुत ही मानते हैं क्यों कि महात्माओं के आदर करने से ही अपने गुणों में पूरा पू रा विश्वास होता है २० हे विरूपाक्ष (महादेव) तू ने हमारा स्म रण किया इस से जो हमें हर्ष हुआ है वह तुझे क्या जनावें क्यों कि अंतर्यामी होने से सब जीवों के अभिप्रायों को तू पहि ले ही जान रहा है २१ प्रत्यक्ष देख कर भी हम यथार्थ रूप से तुझे नहीं जान सकते इस से हे महाराज कृपा कर के अपना वह यथार्थ स्वरूप बताओ जिस में बुद्धि भी नहीं पहुंच सकती २२ हे भगवन् जिस रजोगुण की मूर्त्ति से तू प्रपंच (जगत) को उपजाता, जिस सात्विक मूर्त्ति से जगत का पालन करता और जिस तामस मूर्त्ति से जगत का संहार करता उन तीनों में से यह ते री कौन सी मूर्त्ति है २३ ॥

अथवासुमहत्त्वेषा प्रार्थनादेवतिष्ठतु चिन्तितो
पस्थितांस्तावत् शाधिनः करवामकिम् २४ अ
थमौलिंगतस्येन्दो विशदैर्दशनांशुभिः उपचि
न्वन्प्रभांतन्वीं प्रत्याहपरमेश्वरः २५ विदितंवो
यथास्वार्था नमेकाश्चित्प्रवृत्तयः ननुमूर्त्तिभि
रष्टाभि रित्थंभूतोऽस्मिसूचितः २६ सोऽहंतृष्णा
तुरैर्वृष्टिं विद्युत्वानिवचातकैः अरिविप्रकृतैर्दे
वैः प्रसूतिंप्रतियाचितः २७ अतआहर्त्तुमिच्छा
मि पार्वतीमात्मजन्मने उत्पत्तयेहविर्भोक्तुर्या
जमानइवारणिम् २८ तामस्मदर्थेयुष्माभि-
र्याचितव्योहिमालयः विक्रियायैनकल्पन्तेस
म्बन्धाःसदनुष्ठिताः २९ ॥

अथवा हे देव तेरे यथार्थ स्वरूप जानने की अति दुर्लभ प्रार्थना अ
भी रहे हमें आज्ञा दो कि तेरे चिंतन से आये हम क्या काम करें २४ ऋ
षियों के वाक्य सुन कर सिर पर स्थित चंद्रमा की बढ़ाते थोड़ी प्रभा
(कांति) को दांतों की श्वेत किरणों से बढ़ाते परमेश्वर (महादेव) बो
ले २५ आप जानते ही हो कि अपने प्रयोजन से मैं किसी काम में न
हीं प्रवृत्त होता और पृथिवी जल तेज वायु आकाश सूर्य चंद्रमा औ
र यजमान इन आठ मूर्त्तिओं से पराये अर्थ मेरी प्रवृत्ति जगत में
प्रसिद्ध है २६ तृष्णा से पीड़ित चातक जैसे मेघ से वर्षा की याच
ना करे इसी भांति शत्रुओं से पीड़ित देवताओं ने मुझ से पुत्र उपजा
ना चाहा है २७ जैसे अग्नि उपजाने के लिये यजमान अरणि (का
ष्ठ) को लाना चाहे इसी भांति देवताओं की प्रार्थना से पुत्र उपजाने
के लिये मैं पार्वती को अपने पास लाना चाहता हूं २८ मेरे अर्थ
जाकर तुम हिमालय से पार्वती की याचना करो क्यों कि महा
त्माओं के द्वारा किये हुए संबंध कभी विकार को नहीं प्राप्त हो-
ते २९ ॥ ⁘ ⁘ ॥

उन्नतेनस्थितिमता धुरमुद्वहताभुवः तेनयो
जितसम्बन्धं वित्तमामप्यवञ्चितम् ३० एवंस
वाच्यः कन्यार्थ मिति वोनोपदिश्यते भवत्प्रणी
तमाचार मामनन्ति मनीषिणः ३१ आर्याप्यरु
न्धतीतत्र व्यापारंकर्त्तुमर्हति प्रायेणैवंविधेकार्ये
पुरन्ध्रीणांप्रगल्भता ३२ तत्प्रयातौषधिप्रस्थंसिद्ध
येहिमवत्पुरम् महाकोशीप्रपातेऽस्मिन् सङ्गमः
पुनरेवनः ३३ तस्मिन्संयमिनामाद्ये जातेपरिण
योन्मुखे जहुःपरिग्रहव्रीडांप्राजापत्यास्तपस्विनः
३४ ततःपरमित्युक्त्वा प्रतस्थेमुनिमण्डलम् भ
गवानपिसम्प्राप्तः प्रथमोद्दिष्टमास्पदम् ३५ ॥

पृथिवी का भार उठाए बहुत प्रसिद्ध प्रतिष्ठित उस हिमालय से विवाह के द्वारा संबंध हो जाने से मुझे भी तुम उत्तम पद मे प्राप्त हुए समझो ३० उस हिमालय को कन्या के लिये इस भांति जाकर कहना यह उपदेश तुम्हें मैं नहीं देता हूं जिस से विद्वान लोग तुमारे बनाए स्मृति शास्त्र को ही आचार कहते हैं ३१ पूजा के योग्य अरुंधती को भी वहां विवाह के कार्य मे सहायता देनी चाहिये प्रायशः ऐसे संबंध के कार्यो मे कुटंबिनी स्त्रियों की चतुराई चलती है ३२ इस कारण से कार्य की सिद्धि के लिये औषधिप्रस्थ नामी हिमालय के नगर को तुम जाओ और इसी महाकोशी नदी के प्रारंभ- स्थान पर हमारा फिर मिलाप हो ३३ सब योगीश्वरों के आदि उन महादेव की विवाह में उत्कंठा देख कर ब्रह्मा के पुत्र मरीचि आदि तपस्विओं ने भी गृहस्थ की लज्जा त्याग दी ३४ इस से अनंतर महादेव की आज्ञा मान कर मुनियों की मंडली चल पड़ी और महादेव भी पहिले संकेत के स्थान (कोशिकी के प्रारंभ) पर आबैठे ३५ ॥ ॥

ते चाकाशमसिश्याम मुत्पत्य परमर्षयः आसेदुरो
षधिप्रस्थं मनसा समरंहसः ३६ अलकामतिवा-
ह्येव वसतिं वसुसम्पदाम् स्वर्गाभिष्यन्दवमनं कृ
त्वेवोपनिवेशितम् ३७ गङ्गास्रोतःपरिक्षिप्तं वप्रा
न्तर्ज्वलितौषधि बृहन्मणिशिलासालं गुप्ताव
पि मनोहरम् ३८ जितसिंहभया नागा यत्राश्वा-
बिलयोनयः यक्षाः किंपुरुषाः पौरा योषितो व
नदेवताः ३९ शिखरासक्तमेघानां व्यज्यन्ते यत्र
वेश्मनाम् अनुगर्जितसंदिग्धाः करणैर्मुरजस्व-
नाः ४० यत्र कल्पद्रुमैरेव विलोलविटपांशुकैः
गृहयन्त्रपताकाश्री रपौरादरनिर्मिता ४१ ॥

खड्ग के समान नीलवर्ण आकाश में उड़ के वे महात्मा ऋषीश्व
र मन के तुल्य वेग से शीघ्र ही ओषधिप्रस्थ नामी हिमालय के न
गर में पहुंचे ३६ धन समृद्धि की निवास भूमि अलका (कुबेर की
पुरी) में से उत्तम पदार्थ निकाल के और स्वर्ग से उत्कृष्ट पदार्थ नि
काल कर के रचा हुआ ३७ खाई की नाईं गंगा के प्रवाह से चा
रो ओर घिरा हुआ, वप्र (धूड़ कोट) में जलती ओषधों से शोभि
त बहुत ऊंची मणिओं की शिलाओं से घिरा हुआ स्वभाव से ही दु
र्ग की नाईं शोभायमान ३८ जिस ओषधिप्रस्थ नगर में सिंहों से
अधिक बलवान् हाथी, कंदराओं में आप से आप उपजे हुए
घोड़े, यक्ष, किन्नर पुरुष और बनदेवता ही स्त्रियां हैं ३९ और जि
स नगर में शिखरों पर मेघों से लिपटे गृहों में प्रति ध्वनि से सं-
दिग्ध मृदंग आदि बाजों के शब्द ताड़न के व्यापारों से भलीभांति
प्रगट किये जाते हैं ४० जिस नगर में कल्पवृक्षों की चंचल
शाखाओं पर लटकते वस्त्रों से नागर लोगों के यत्न के बिना
ही गृह के बाहर निकसे काष्ठों पर ध्वजाओं की शोभा बन र-
ही है ४१ ॥ ∴ ॥ ∴ ॥

यत्रस्फटिकहर्म्येषु नक्तमापानभूमिषु ज्योतिषांप्रतिबिम्बानि प्राप्नुवन्त्युपहारताम् ४२ यत्रौषधिप्रकाशेन नक्तंदर्शितसञ्चराः अनभिज्ञास्तमिस्राणां दुर्दिनेष्वभिसारिकाः ४३ यौवनान्तंवयोयस्मि न्नान्तकः कुसुमायुधात् रतिखेदसमुत्पन्ना निद्रासंज्ञाविपर्ययः ४४ भ्रूभेदिभिः सकम्पोष्ठै र्ललिताङ्गुलितर्जनैः यत्रकोपैः कृताःस्त्रीणा माप्रसादार्थिनः प्रियाः ४५ सन्तानकतरुच्छाया सुप्तविद्याधराध्वगम् यस्य चोपवनंबाह्यं गन्धवद्गन्धमादनम् ४६ अथ तेमुनयोदिव्याः प्रेक्ष्यहैमवतंपुरम् स्वर्गाभिसंधिसुकृतं वञ्चनामिवमेनिरे ४७ ॥

और जहां रात के समय स्फटिक (बिल्लौर) के हर्म्यों (महलों) पर मद्य पीने की सभाओं में नक्षत्रों के प्रति बिंब ही फूलों की शोभा देते हैं ४२ जिस नगर में मेघों से आकाश छादन होने पर भी रात में औषधियों के प्रकाश से मार्ग को देख कर कांत के लिये संकेत-स्थान पर जाती स्त्रियें अंधकार को नहीं जानतीं ४३ और जहां वृद्ध कोई नहीं, काम की पीड़ा से बिना मृत्यु नहीं और संभोग क्रीड़ा की थकाहट से उपजी हुई निद्रा ही मरण है अर्थात् प्राणवियोग किसी का नहीं होता ४४ जहां भवें घुमाती ओठ कंपाती और मनोहर अंगुलियों से झिड़कती स्त्रियों के कोप से स्वामी प्रसन्नता तक प्रार्थना करते हैं ४५ और जिस नगर के बाहर उत्तम गंध से युक्त गंधमादन नामी ऐसा आराम (बाग) है कि जिस में मार्ग चलते चलते थक कर विद्याधर संतानक वृक्ष की छाया में सो जाते हैं ४६ स्वर्ग के निवासी वे ऋषीश्वर हिमालय के ऐसे नगर औषधिप्रस्थ को देख कर स्वर्ग की प्राप्ति के लिये ज्योतिष्टोम आदि यज्ञों का करना व्यर्थ ही मानने लगे ४७ ॥

तेसद्मनिगिरेर्वेगा दुन्मुखद्वाःस्थवीक्षिताः अवते रुर्जटाभारै र्लिखितानलनिश्चलैः ४८ गगनादव तीर्णासा यथावृद्धपुरःसरा तोयान्तर्भास्करालीव रेजेमुनिपरम्परा ४९ तानर्घ्यानर्घ्यमादायदूरा त्प्रत्युद्ययौगिरिः नमयन्सारगुरुभिः पादन्यासैर्व सुन्धराम् ५० धातुताम्राधरः प्रांशु र्देवदारुबृहद् भुजः प्रकृत्यैवशिलोरस्कः सुव्यक्तोहिमवानिति ५१ विधिप्रयुक्तसत्कारैः स्वयंमार्गस्यदर्शकः स तैराक्रमयामास शुद्धान्तंशुद्धकर्मभिः ५२ तत्र वेत्रासनासीनान् कृतासनपरिग्रहः इत्युवाचेश्व रान्वाचं प्राञ्जलिर्भूधरेश्वरः ५३ ॥

चित्र में लिखी अग्नि की ज्वाला की नांई निश्चल जटाओं से शोभित और ऊपर मुख उठाए द्वार पालों के देखते देखते वे ऋषीश्वर हिमालय के घर में उतर आए ४८ आकाश से उतरी क्रम से वृद्धों वृद्धों को आगे किये वह ऋषीश्वरों की पंक्ति जल में सूर्य के प्रति बिंबों की पंक्ति के समान बहुत प्रकाशित हुई ४९ बहुत भारी पाओं के फेंकने से पृथ्वी को नवाता पर्वत (हिमालय) अर्घ्य में अक्षत फूल और जल लेकर पूजा के योग्य उन ऋषियों को दूर तक आगे से लेने गया ५० धातु (गेरी) के समान रक्त ओठ, देवदारु वृक्ष के समान बड़ी भुजा और स्वभाव से ही शिला के तुल्य उर (छाती) से यथार्थ पर्वत ही जाना हुआ वह हिमालय ५१ आपही आगे आगे मार्ग दिखाता उत्तम रीति से संमान करके शुद्ध कर्म करने वाले उन महात्मा सात ऋषियों को अंतःपुर में ले गया ५२ वहां अंतःपुर मे आसन पर बैठ पर्वतों के राजा (हिमालय) ने अंजलि बांध के बेत के आसनों पर बैठे उन ऋषीश्वरों से यह कहा कि ५३ ॥

अपमेघोदयंवर्षमदृष्टकुसुमंफलम् अतर्कि
तोपपन्नंवो दर्शनंप्रतिभातिमे ५४ मूढंबुद्धमि
वात्मानं हैमीभूतमिवायसम् भूमेर्दिवमिवारू
ढं मन्येभवदनुग्रहात् ५५ अद्यप्रभृतिभूताना
मधिगम्योऽस्मिशुद्धये यदध्यासितमर्हद्भिस्त
द्धितीर्थंप्रचक्षते ५६ अवैमिपूतमात्मानं द्वये
नैवद्विजोत्तमाः मूर्ध्निगङ्गाप्रपातेन धौतपादा
म्भसाचवः ५७ जङ्गमंप्रैष्यभावेवः स्थावरंचर
णाङ्कितम् विभक्तानुग्रहंमन्येद्विरूपमपिमेव
पुः ५८ भवत्सम्भावनोत्थाय परितोषायमूर्च्छ
ते अपिव्याप्तदिगन्तानि नाङ्गानिप्रभवन्तिमे ५९

महाराज बिना विचारे यह आश्चर्य आपका दर्शन मुझे मेघों के
बिना वर्षा और फूल के बिना फल के समान बहुत दुर्लभ प्रतीत
होता है ५४ आप के अनुग्रह से मैं अपने आपको मूर्ख से बुद्धि
मान, लोहा से स्वर्ण और पृथ्वी से स्वर्ग में प्राप्त हुए के समान मा
नता हूं ५५ आज से ले कर लोग शुद्धि की कामना से मेरे हां
तीर्थ की श्रद्धा से अवश्य आया करें गे क्यों कि सज्जनोंसे सेवित
स्थान को तीर्थ कहते हैं ५६ हे द्विजोत्तमो शिखर पर गंगा का
गिरना और आपकेपाऊंधोने का जल इन दोनों की कृपा से ही मैं
अपने आप को पवित्र मानता हूं ५७ हे महाराज मैं अपने स्थाव
र और जंगम दोनों शरीरों पर बांट के दिया आप का अनुग्रह मा
नता हूं जंगम को आपके दास भाव मे स्थित होने से और स्थाव
र की पीठ पर आपके चरण पड़ने से ५८ आप के अनुग्रह
से उपजा विस्तृत आनंद दिशा ओं को छाके मेरे बड़े अंगों में
भी नहीं माता ५९ ॥ ॥

नकेवलंदरीसंस्थं भास्वतांदर्शनेनवः अन्तर्ग
तमपास्तंमे रजसोऽपिपरंतमः ६० कर्त्तव्यंवो-
नपश्यामि स्याच्चेत्किंनोपपद्यते मन्येमत्पावना
यैव प्रस्थानंभवतामिह ६१ तथापितावत्कस्मिं
श्चिदाज्ञांमेदातुमर्हथ विनियोगप्रसादाहि कि
ङ्कराःप्रभविष्णुषु ६२ एतेवयममीदाराः कन्ये
यंकुलजीवितम् ब्रूतयेनात्रवःकार्यं मनास्था
बाह्यवस्तुषु ६३ इत्यूचिवांसमेवार्थं गुहामु
खविसर्पिणा द्विरिवप्रतिशब्देन व्याजहारहि
माचलः ६४ अथाङ्गिरसमग्रण्य मुदाहरण
वस्तुषु ऋषयोनोदयामासुः प्रत्युवाचसभू
धरम् ६५ ॥

सूर्य के समान प्रकाशमान आप के दर्शनों से केवल मेरी गुफाओं का ही अंधेरा नहीं दूर हुआ किंतु अंतः करण में जो रजोगुण से परे अज्ञान का अंधेरा था वह भी दूर हो गया ६० पहिले तो निष्काम होने से आप के करने योग्य कोई काम नहीं दीखता हो भी तो सहज में अपने स्थान पर ही सिद्ध कर सकते हो इस से मैं यह जानता हूं कि केवल मुझे पवित्र करने को आप यहां आए हो ६१ तो भी किसी कार्य की आज्ञा मुझे अवश्य देनी चाहिये जिस से दास जनों में प्रभुओं की कृपा कार्य करने की आज्ञा से ही मालूम होती है ६२ अधिक क्या कहूं ये हम, ये सब स्त्रियां और सारे वंश में प्राणों के समान प्यारी यह कन्या इन में से आप का प्रयोजन जिस से सिद्ध हो उसे ले सकते हो स्वर्ण रत्न आदि पदार्थ तो आप के ही हैं ६३ ऐसे कहते हुए हिमालय ने गुफाओं के मुख से निकली प्रतिध्वनि से मानो उसी अर्थ को दृढ़ करने के लिये दो वेर कहा ६४ हिमालय की बातें सुन कर ऋषियों ने बात करने में चतुर अंगिरा को बोलने की अनुमति दी और उसने हिमालय से कहा ६५ ॥

उपपन्नमिदं सर्वं मतः परमपित्वयि मनसः शि
खराणाञ्च सदृशीतिसमुन्नतिः ६६ स्थानेत्वां
स्थावरात्मानं विष्णुमाहुस्तथाहिते चराचरा-
णांभूतानां कुक्षिराधारतांगत ६७ यमथास्य
कथंनागो मृणालमृदुभिः फणैः आरसात
लमूलात्त्व मवालम्बिष्यथानचेत् ६८ अच्छि
न्नामलसन्तानाः समुद्रोर्म्यनिवारिताः पुनन्ति
लोकान्पुण्यत्वा त्कीर्त्तयः सरितश्चते ६९ यथै
वश्लाघ्यतेगङ्गा पादेनपरमेष्ठिनः प्रभवेणा-
द्वितीयेन तथैवोच्छिरसात्वया ७० तिर्य्यगूर्द्ध
मधस्ताच्च व्यापकोमहिमाहरेः त्रिविक्रमोद्य
तस्यासीत् सतुस्वाभाविकस्तव ७१ ॥

कि जो तू ने कहा है उस से अधिक भी तुझ में योग्य है जिससे
शिखरों के समान तेरा मन भी बहुत ही ऊंचा है ६६ गीता आ
दि प्रमाण ग्रंथों में यह योग्य लिखा है कि हिमालय स्थावर
विष्णु है जिस से विष्णु की नाईं तेरे उदर में भी अनंत चर और
अचर जीव निवास करते हैं ६७ और जे कभी पाताल से लेक
र तेरा अवलंब नहो तो कमल के नाल की नाईं कोमल फ
णों से शेशनाग पृथ्वी को किस भांति धारण कर सके ६८
निरंतर विछेद रहित बहुत शुद्ध समुद्र के पार तक पहुंची
हुई अति पवित्र तेरी कीर्त्तियां और गंगा आदि नदियां लोगों
को पवित्र करती हैं ६९ जैसे विष्णु के चरणों से उत्पन्न होने कर
के गंगा की प्रशंसा होती है इसीभांति तेरे बहुत ऊंचे शिखरों
से प्रकट होना भी गंगाकी दूसरी अधिक प्रशंसा है ७० त्रिवि
क्रम (तीन पाउं फैंकने) में उद्यम करने से सर्व व्यापक जो महिमा
(महिमा) विष्णु को प्राप्त हुई वह महात्म्य सहज से ही तेरा प्रसिद्ध है ७१

यज्ञभागभुजां मध्ये पदमातन्वता त्वया उच्चैर्हि
रण्मयं शृङ्गं सुमेरोर्वितथीकृतं ७२ काठिन्यं स्था
वरे काये भवता सर्वमर्पितम् इदन्तु ते भक्ति न
म्रसतामाराधनं वपुः ७३ तदागमनकार्य्यं नः
शृणु कार्य्यं तवैव तत् श्रेयसामुपदेशात्तु वय-
मत्रांशभागिनः ७४ अणिमादिगुणोपेतमस्पृ
ष्टपुरुषान्तरम् शब्दमीश्वरइत्युच्चैः सार्द्धचन्द्रं बि
भर्त्ति यः ७५ कल्पितान्योन्यसामर्थ्यैः पृथिव्या
दिभिरात्मभिः येनेदं ध्रियते विश्वं धुर्य्यैर्यानमि
वाध्वनि ७६ योगिनो यं विचिन्वन्ति क्षेत्राभ्यन्त
रवर्तिनम् अनावृत्तिभयं यस्य पदमाहुर्मनी
षिणः ७७ ॥

इंद्र आदि कों के बीच यज्ञों के भाग लेने के वास्ते पाउं धर कर
तू ने सुमेरु के बहुत ऊंचे स्वर्ण के शृंग व्यर्थ कर दिये ७२ तू ने
सारी उद्दतता अपने पाषाणमय शरीर (पर्वत) में रख दी है
और भक्ति से नम्र मनुष्य के आकार का यह तेरा शरीर महात्मा
ओं की सेवा करने के योग्य है ७३ इस से हमारे आगमन का का
र्य सुन जो कि तेरा ही कार्य है जिससे इस उत्तम कार्य का उपदे
श देने से हम तो केवल अंश के भागी हैं फल तो तुझे ही मिल
ता है ७४ अणिमा आदि आठ सिद्धियों के साथ अन्य पुरुषों को
न प्राप्त होने योग्य ईश्वर शब्द और आधे चंद्रमा को जो धारण क
रता है ७५ परस्पर एक दूसरे के सहायक पृथिवी आदि अपने
आठ स्वरूपों से जो सारे विश्व को धारण कर रहा है जैसे मा
र्ग में घोड़े रथ को धारण करते हैं ७६ जिस अंतर्यामी परमे-
श्वर को योगीजन समाधि के द्वारा लभते हैं और विद्वान लोग
जिस के पद (स्थान) को जन्म मरण के भय से रहित कह
ते हैं ७७ ॥

सनेडुहितरं साक्षात् साक्षी विश्वस्य कर्म्मणाम्
वृणुते वरदः शम्भु रस्मत्संक्रामितैः पदैः ७८
तमर्थमिव भारत्या सुतयायोक्तुमर्हसि अ
शोच्याहि पितुः कन्या सद्भर्तृप्रतिपादिता ७९
यावन्त्येतानि भूतानि स्थावराणि चराणि च
मातरं कल्पयन्त्वेना मीशोहि जगतः पिता ८०
प्रणम्य शितिकण्ठाय विबुधास्तदनन्तरम् च
रणौ रञ्जयन्त्वस्या चूड़ामणिमरीचिभिः ८१
उमा वधूर्भवान्दाता याचितार इमे वयम् व
रः शम्भुरलं ह्येष त्वत्कुलोद्भूतये विधिः ८२
अस्तोतुः स्तूयमानस्य वन्द्यस्यानन्यवन्दिनः
सुतासम्बन्धविधिना भव विश्वगुरोर्गुरुः ८३ ॥

जगत के कर्मों का साक्षी वर देने में समर्थ वह शंभु (महादेव) हमा
रे द्वारा संदेश पहुंचा कर आप ही तेरी कन्या को वरता है ७८ अर्थ
को वाणी के साथ मिलाने की नांई तू उस महादेव को अपनी
कन्या के साथ मिला ने योग्य है जिससे उत्तम पति को कन्या देकर
माता पिता को शोक नहीं करना पड़ता ७९ जितने चर, अचर
सारे जगत के जीव सब तेरी इस कन्या को माता बनावें जिससे
ईश (महादेव) जगत का पिता है ८० देवता लोग महादेव को प्रणा
म करने से पीछे अपने मुकुटों की मणियों के किरणों से इस
पार्वती के चरणों को रंगें ८१ पार्वती वहू, तू दाता, हम सब या
चक और महादेव वर यह सामग्री तेरे कुल की वृद्धि के लिये पू
र्ण है ८२ सदा और किसी की स्तुति और बंदना करने से रहित
सब की स्तुति और बंदना के विषय सारे जगत के गुरु उस म
हादेव का अपनी कन्या के संबंध से तू भी गुरु बन ८३ ॥

एवंवादिनि देवर्षौ पार्श्वे पितुरधोमुखी लीला
कमलपत्राणि गणयामास पार्वती ८४ शै
लः सम्पूर्णकामोऽपि मेनामुखमुदैक्षत
प्रायेण गृहिणीनेत्राः कन्यार्थेषु कुटुम्बिनः
८५ मेने मेनाऽपि तत्सर्वं पत्युः कार्यमभीप्सि
तम् भवन्त्यव्यभिचारिण्यो भर्तुरिष्टे पतिव्रताः
८६ इदमत्रोत्तरं न्याय्य मिति बुद्ध्या विमृश्य सः
आददे वचसामन्ते मङ्गलालङ्कृतां सुताम्
८७ एहि विश्वात्मने वत्से भिक्षाऽसि परिकल्पि
ता अर्थिनो मुनयः प्राप्तं गृहमेधिफलं म
या ८८ ॥

देवर्षि (अंगिरा) के ऐसा कहने पर पिता के समीप नीचे मुख
किये पार्वती ने खेलने के कमल में दृष्टि देकर पत्ते गिनने से
अपने हर्ष के चिह्न छिपा लिये ८४ महादेव को कन्या देने
का निश्चय होते भी हिमालय उत्तर देने के लिये मेना की ओ
र देखने लगा जिससे गृहस्थी लोग कन्या के कार्य में प्रायः
स्त्रियों के कथन को ही प्रधान मानते हैं ८५ स्वामी (हिमा
लय) के अभिलाषित उस सम्पूर्ण कार्य को मेना ने मान लि
या जिस से पतिव्रता स्त्रियें स्वामी के अभीष्ट कार्य का निषेध
कभी नहीं करतीं ८६ मुनियों के वाक्य सुनने से पीछे चित्त
में देने के उत्तर विचार के हिमालय ने उत्तम भूषण और वस्त्रों
से शोभित अपनी कन्या (पार्वती) को उठा लिया ८७ और क
हा कि आइये मैं ने तुझे विश्वात्मा (महादेव) की भिक्षा स
मझा है जिस से ये ऋषीश्वर याचना करने आए हैं इस से गृह
स्थ आश्रम का उत्तम फल मुझे मिल गया ८८ ॥

एतावदुक्त्वा तनयामृषीनाह महीधरः इयंन
मति वः सर्वान् त्रिलोचनवधूरिति ८९ ईप्सि-
तार्थक्रियोदारं तेऽभिनन्द्य गिरेर्वचः आशी
र्भिरेधयामासुः पुरःपाकाभिरम्बिकाम् ९०
तां प्रणामादरस्रस्त जाम्बूनदवतंसकाम्
अङ्कमारोपयामास लज्जमानामरुन्धती ९१
तन्मातरंचाश्रुमुखीं दुहितृस्नेहविक्लवाम्
वरस्यानन्यपूर्वस्य विशोकामकरोद्गुणैः ९२
वैवाहिकीं तिथिं पृष्टाः तत्क्षणं हरबन्धुना ते त्र्य
हादूर्ध्वमाख्याय चेरुश्चीरपरिग्रहाः ९३ ॥

पार्वती से इतनी बात कह कर हिमालय ने ऋषियों से यह कहा
कि यह महादेव की बहू आप सब को प्रणाम करती है ८९
अपने इष्ट अर्थ के साधक हिमालय के वाक्य की प्रशंसा कर
के उन ऋषीश्वरों ने समीप ही फल देने वाले आशीर्वादों से अं-
बिका (पार्वती) को बढ़ाया अर्थात् बहुत आशीर्वाद दिये ९०
प्रणाम करने के आदर से कानों के भूषण स्वर्ण के कुंडलों को
गिराती बहुत लज्जित उस पार्वती को अरुंधती ने गोद में बैठा
लिया ९१ और आंसू बहा कर रोती पार्वती की मा मेना को अ-
रुंधती ने और किसी को न प्राप्त होने योग्य वर (महादेव) के ब-
हुत उत्तम गुणों से शोक रहित किया ९२ महादेव के संबंधी
(हिमालय) के विवाह की तिथि पूछने पर हस्तों की त्वचा
पहिने वे ऋषीश्वर तीन दिन से अनंतर का दिन निश्चित कर
के चल पड़े ९३ ॥ ✢ ✢ ॥

तदिमालयमामन्त्र्य पुनःप्रोष्य च शूलिन
म सिद्धं चास्मै निवेद्यार्थं तद्विसृष्टाःखमुद्य
युः ९४ पशुपतिरपि तान्यहानि कृच्छ्राद्ग
मयदद्रिसुतासमागमोत्कः कमपरमवशं
न विप्रकुर्युर्विभुमपि यदमी स्पृशन्ति भा
वाः ९५ ॥ ∴ ॥ ∴

इति श्रीकालिदासकृतौ कुमारसम्भवे महा
काव्य उमाप्रदानो नाम षष्ठः सर्गः ६ ॥

वे मुनि हिमालय से पूछ फिर महादेव के पास पहुंच कर सिद्ध हुआ कार्य उन्हें बता के महादेव की आज्ञा ले कर आकाश को उड़ गये ९४ पर्वत (हिमालय) की पुत्री (पार्वती) के विवाह ने में उत्कंठित पशुपति (महादेव) ने भी वे तीन दिन बहुत कष्ट से बिताए उत्कंठा आदि संचारी भावों ने जितेंद्रिय (महादेव) के चित्त में जब विकार उपजा दिया तो और सामान्य पुरुषों के विकार उपजाने में क्या आश्चर्य है ९५ ॥ ∴ ॥

इति पं॰ सुखदयालु का बनाया कुमार के छठे सर्ग का हिंदी में अनुवाद समाप्त हुआ ॥ ∴ ∴ ॥

सप्तमः सर्गः ॥

अथौषधीनामधिपस्य वृद्धौ तिथौ च जामित्रगु
णान्वितायाम् समेतबन्धुर्हिमवान्सुताया वि
वाहदीक्षाविधिमन्वतिष्ठत् १ वैवाहिकैः कौतु
कसंविधानैर्गृहे गृहे व्यग्रपुरन्ध्रिवर्गम् आसी
त्पुरं सानुमतोऽनुरागादन्तःपुरं चैककुलोपमेय
म् २ सन्तानकाकीर्णमहापथं तच्चीनांशुकैः क
ल्पितकेतुमालम् भासोज्ज्वलत्काञ्चनतोरणा-
नां स्थानान्तरं स्वर्ग इवाबभासे ३ एकैव सत्या
मपि पुत्रपङ्क्तौ चिरस्य दृष्टेव मृतोत्थितेव आस
न्नपाणिग्रहणेति पित्रोरुमा विशेषोच्छ्वसितं ब
भूव ४

तीन दिन से अनंतर शुक्लपक्ष में लग्न से सातवां स्थान शुद्ध दे-
ख के संबंधियों को इकट्ठे कर के हिमालय ने अपनी कन्या (पा-
र्वती) के विवाह का प्रारंभ किया १ हिमालय के प्रेम से घर २
में विवाह के योग्य गीत वाद्य आदि मंगल कार्यों में सब सोभा
गन स्त्रियों के प्रवृत्त होने पर सारा औषधिप्रस्थ नगर एक रनिवा
र के समान प्रतीत होता था २ राजमार्ग में मंदार के फूल बि
छे हुए चीन देश के वस्त्रों की ध्वजाओं से भरा हुआ और स्वर्ण के
तोरणों की कांति से प्रकाशमान वह औषधिप्रस्थ नगर सुमेरु
से अन्य स्थान में विद्यमान स्वर्ग की नाईं प्रतीत होता था ३
बहुत संतानों के होने पर भी विवाह की समीपता से चिर पीछे
देखी और मर के जीये हुए की नाईं वह एक कन्या (पार्वती) अ-
पने माता पिता को प्राणों के तुल्य प्यारी थी ४ ॥

अङ्काद्ययावङ्कमुदीरिताशीः सा मण्डनान्मण्ड
नमन्वभुङ्क्त सम्बन्धिभिन्नोऽपिगिरेः कुलस्य स्ने
हस्तदेकायतनं जगाम ५ मैत्रे मुहूर्ते शशलाञ्छ-
नेन योगं गतासूत्तरफल्गुनीषु तस्याः शरी
रे प्रतिकर्म चक्रुर्बन्धुस्त्रियो याः पतिपुत्रवत्यः ६
सा गौरसिद्धार्थनिवेशवद्भिर्दूर्वाप्रवालैः प्रतिभि
न्नशोभम् निर्नाभिकौशेयमुपात्तबाणमभ्यङ्ग-
नेपथ्यमलंचकार ७ बभौ च सम्पर्कमुपेत्य बा
ला नवेन दीक्षाविधिसायकेन करेण भानोर्ब-
हुलावसाने सन्धुक्ष्यमाणेव शशाङ्करेखा ८ तां
लोध्रकल्केन हृताङ्गतैलामाश्यानकालेयकृ
ताङ्गरागाम् वासो वसानामभिषेकयोग्यं नार्य
श्चतुष्काभिमुखं व्यनैषुः ९ ॥

वह पार्वती एक की गोद में बैठ आशीर्वाद लेकर दूसरे की गोद में
जा बैठती थी और साथ ही नये नये उत्तम भूषण वस्त्र भी पहिन
ती थी और यद्यपि संबंधियों में बंटा हुआ भी हिमालय के सारे कुल
का प्रेम एक पार्वती में ही जा इकट्ठा हुआ ५ सूर्य के उदय से ती-
सरे मुहूर्त में उत्तरफल्गुनी में चंद्रमा के आने पर सोभागन (जी
ते पुत्र औ स्वामीवाली) स्त्रियों ने स्नान आदि कर्मों से पार्वती का
शरीर शोभित किया ६ और सर्षप में मिले हुए दूर्वा के अंकुरों
से शोभायमान उस पार्वती ने पट्ट के वस्त्र पहिन बाण हाथ
में लिये स्नान और वेश को भी शोभित किया ७ विवाह के नये बाण
को हाथ में लेते ही वह पार्वती ऐसी शोभित हुई जैसे कृष्ण पक्ष
के अनन्तर शुक्लपक्ष में सूर्य के किरणों से बढ़ती हुई चंद्रमा
की रेखा शोभित होती है ८ लोध्र के चूर्ण का उबटन मलकर
पीछे से कुछ सूखा सुगंधि द्रव देह में लगा कर सब स्त्रियां स्ना
न के योग्य धोती पहिनाय पार्वती को स्नान के घर में ले गईं ९ ॥

विन्यस्तवैदूर्यशिलातलेऽस्मिन्नावद्धमुक्ताफल
भक्तिचित्रे आवर्जिताष्टापदकुम्भतोयैः सतूर्यमे
नांस्नपयांबभूवुः १० सामङ्गलस्नानविशुद्धगा
त्री गृहीतपत्युद्गमनीयवस्त्रा निर्वृत्तपर्जन्यजला
भिषेका प्रफुल्लकाशा वसुधेव रेजे ११ तस्मात्प्र
देशाच्च वितानवन्तं युक्तं मणिस्तम्भचतुष्टयेन
पतिव्रताभिः परिगृह्य निन्ये क्लृप्तासनं कौतुकवे
दिमध्यम् १२ तां प्राङ्मुखीं तत्र निवेश्य तन्वीं क्ष
णं व्यलम्बन्त पुरो निषण्णाः भूतार्थशोभाह्रिय-
माणनेत्राः प्रसाधने सन्निहितेऽपि नार्यः १३ धू
पोष्मणा त्याजितमार्द्रभावं केशान्तमन्तःकुसु-
मं तदीयम् पर्याक्षिपत्काचिदुदारबन्धं दूर्वावता
पाण्डुमधूकदाम्ना १४ ॥

मोतियों की माला लगाने से शोभित इस घर में सब स्त्रियों ने मरकत मणि की शिला पर बिठा के तुरी बाजों के बजने पर स्वर्ण के कलशों से जल डार डार के पार्वती को न्हिलाया १० मंगल स्नान के द्वारा सारे अंगों से शुद्ध स्वामी के पास जाने योग्य नये वस्त्र पहिने वह पार्वती फूली हुई कांसों से मेघ के जल (वर्षा) से सिंची भूमि के समान शोभित हुई ११ उस स्थान से पतिव्रता स्त्रियें पार्वती को रत्नों के चार खंभों और वितान (चंदोआ) से शोभायमान आसन बिछाए विवाह की वेदी के बीच उठा कर ले गईं १२ स्त्रियों ने सुकुमार उस पार्वती को पूर्व की ओर मुख से वेदी में बिठा कर सामने बैठे बैठे भूषण वस्त्र आदि संपूर्ण शोभा की सामग्री होने पर भी पार्वती की स्वाभाविकी शोभा देखने से चकित होके विलंब किया १३ धूप दे कर सुखाए, फूलों से भरे उस पार्वती के केश किसी स्त्री ने दूर्वा और लाल मधूक फूलों की माला से बहुत सुंदर रीति से ऊपर को बांधे १४ ॥

विन्यस्तशुक्लागुरु चक्रुरङ्गं गोरोचनापत्रविभ
ङ्गमस्याः साचक्रवाकाङ्कितसैकतायास्त्रिस्रोत
सः कान्तिमतीत्य तस्थौ १५ लग्नद्विरेफं परिभूय प
द्मं समेघरेखं शशिनश्च बिम्बम् तदाननश्रीरल
कैः प्रसिद्धैश्चिच्छेद सादृश्यकथाप्रसङ्गम् १६ क
र्णार्पितो लोध्रकषायरूक्षे गोरोचनाक्षेपनितान्त
गौरे तस्याः कपोले परभागलाभाद्बबन्ध चक्षूं-
षि यवप्ररोहः १७ रेखाविभक्तः सुविभक्तगात्र्याः
किञ्चिन्मधूच्छिष्टविमृष्टरागः कामप्यभिख्यां-
स्फुरितैरपुष्यदासन्नलावण्यफलोऽधरोष्ठः १८
पत्युः शिरश्चन्द्रकलामनेन स्पृशेति सख्या परिहा
सपूर्वम् सा रञ्जयित्वा चरणौ कृताशीर्माल्येन तां-
निर्वचनं जघान १९ ॥

स्त्रियों ने सफ़ेद अगर लगा कर गोरोचन से पत्र रचना के द्वारा पार्वती का शरीर शोभित किया और वह पार्वती चक्रवाक पक्षियों की क्रीड़ा के स्थान सिकता (रेत) के स्थलों से शोभित गंगा से भी अधिक सुंदर मालूम होती थी १५ भौरों से भरे कमल और मेघों से आधे छाए चंद्रमा को प्रसिद्ध अलकों (केशों) से तिरस्कार करके उस (पार्वती) के मुख की शोभा ने उपमा देने की बात ही जगत से उठा दी १६ कानों में पहिने यवों के अंकुरों ने लोध्र का चूर्ण लगाने से रूखे गोरोचन से निरंतर पीतवर्ण उस पार्वती के कपोलों पर अधिक शोभा पाने से लोगों के नेत्र बांध लिये १७ यौवन करके सब अंगों से पुष्ट उस पार्वती के मधु के लगने से अधिक अरुण, सौंदर्य का फल पाने के समीप पहुंचे हुए नीचले ओंठ ने हिलने से एक आश्चर्य शोभा प्रगट की १८ लाख के रंग से पाउं रंग के सखी ने परिहास से पार्वती को यह आशीर्वाद दिया कि इस पाउं से पति (महादेव) के शिर की चंद्र कला को छू और पार्वती ने चुपके से फूलों की माला के साथ उसे ताड़न किया १९ ॥

तस्याः सुजातोत्पलपत्रकान्ते प्रसाधिकाभिर्नयने निरीक्ष्य नचक्षुषोः कान्तिविशेषबुद्ध्या कालाञ्जनंमङ्गलमित्युपात्तम् २० सासम्भवद्भिः कुसुमैर्लतेव ज्योतिर्भिरुद्यद्भिरिव त्रियामा सरिद्विहङ्गैरिव लीयमानैरामुच्यमानाभरणाचकाशे २१ आत्मानमालोक्य च शोभमानमादर्शबिम्बे स्तिमितायताक्षी हरोपयाने त्वरिता बभूव स्त्रीणांप्रियालोकफलो हि वेशः २२ अथाङ्गुलिभ्यां हरितालमार्द्रं माङ्गल्यमादाय मनःशिलां च कर्णावसक्तामलदन्तपत्रं माता तदीयं मुखमुन्नमय्य २३ उमास्तनोद्भेदमनुप्रवृद्धो मनोरथोयः प्रथमंबभूव तमेवमेना दुहितुः कथञ्चिद्विवाहदीक्षातिलकंचकार २४ ॥

खिले हुए कमल के सुंदर पत्तों के तुल्य उस पार्वती के नेत्र देख के भूषण वस्त्र आदि पहिनाती सखियों ने शोभा बढ़ाने के लिये नहीं किंतु मंगल द्रव्य जान कर काला अंजन पार्वती के नेत्रों में डाला २० खिलते हुए फूलों से लता के, उदय को प्राप्त नक्षत्रों से रात्रि के और निवास करते चकवाक आदि पक्षियों से नदी के समान वह पार्वती भूषण धारण कर के बहुत शोभित हुई २१ वह पार्वती बहुत शोभित अपने स्वरूप को थमकी निश्चल दृष्टि से दर्पण में देखके महादेव के समीप जाने को बहुत उत्कंठित हुई जिससे स्त्रियोंका वेश (शृंगार) स्वामी के देखने से ही सफल होता है २२ सब शृंगार लगाने से पीछे माता मेना ने मंगलमय हरती हरिताल और मनशिल अंगुलियों से ले कर कानों में पहिने हुए दंत पत्रों से शोभित पार्वती के मुख को ऊपर उठा के २३ पार्वतीकेस्तन प्रकट होने के साथ ही बढ़े हुए मन के अभिप्राय कोही बड़े फिर से अपनी कन्या के मस्तक पर विवाहके तिलक के स्थान लगाया २४ ॥

बबन्ध चास्राकुलदृष्टिरस्याः स्थानान्तरे कल्पित
सन्निवेशम् धात्र्यङ्गुलीभिः प्रतिसार्यमाणा मूर्णा
मयं कौतुकहस्तसूत्रम् २५ क्षीरोदवेलेव सफेनपु
ञ्जा पर्याप्तचन्द्रेव शरत्त्रियामा नवं नवक्षौमनिवा
सिनी सा भूयो बभौ दर्पणमादधाना २६ तामर्चि
ताभ्यः कुलदेवताभ्यः कुलप्रतिष्ठां प्रणमय्य माता
अकारयत्कारयितव्यदक्षा क्रमेण पादग्रहणं स-
तीनाम् २७ अखण्डितं प्रेम लभस्व पत्युरित्युच्य
ते ताभिरुमा स्म नम्रा तया तु तस्यार्द्धशरीरभाजा
पश्चात्कृताः स्निग्धजनाशिषोपि २८ इच्छाविभू
त्योरनुरूपमद्रिस्तस्याः कृती कृत्यमशेषयित्वा स
भ्यः सभायां सुहृदास्थितायां तस्थौ वृषाङ्कागम-
नप्रतीक्षः २९ ॥

नेत्रों में प्रेम के आंसू अधिक आने पर दृष्टि मंद हो जाने से अन्य स्थान में बांधने से पीछे धात्री (दाई) की अंगुलियों से योग्य स्थान पर पहुंचे ऊन से रचित विवाह के कंगने को मेना ने पार्वती के हाथ में बांधा २५ नये वस्त्र धारण कर नया दर्पण हाथ में लिये वह पार्वती फेन (झाग) से लिपटी समुद्र की तीर—भूमि और पूर्ण चंद्रमा से शरद की रात्रि के समान बहुत शोभित हुई २६ संपूर्ण शुभ कार्य कराने में चतुर माता मेना ने कुल के प्रथम पार्वती को पूजित कुल देवताओं के नाईं प्रणाम करवा के क्रम से पतिव्रता सोभागिन स्त्रियों की पादवंदना करवाई २७ उन पतिव्रताओं ने नम्र पार्वती को यह आशीर्वाद दिया कि स्वामी (महादेव) के अखंडित प्रेम को प्राप्त हो परंतु स्वामी का आधा शरीर बन जाने से पार्वती संबंधियों के आशीर्वादों से भी बढ़ गई २८ अपनी इच्छा और संपत्ति के योग्य पार्वती के विवाह का संपूर्ण कार्य समाप्त कर के सज्जन संबंधियों से भरी सभा में बैठा हिमालय महादेव के आगमन का प्रतीक्षा करता था २९ ॥

तावद्भवस्यापि कुबेरशैले तत्पूर्वपाणिग्रहणानु
रूपम् प्रसाधनं मातृभिरादृताभि न्यस्तंपुरस्तात्पु
रशासनस्य ३० तद्गौरवान्मङ्गलमण्डनश्रीः सा
पस्पृशे केवलमीश्वरेण सएव वेशः परिणेतुरिष्टं
भावान्तरंतस्यविभोः प्रपेदे ३१ बभूव भस्मैवसिता
ङ्गरागः कपालमेवामलशेखरश्रीः उपान्तभागेषु
चरोचनाङ्को गजाजिनस्यैवदुकूलभावः ३२ शङ्खा
न्तरद्योति विलोचनंय दन्तर्निविष्टामलपिङ्गतारम्
सान्निध्यपक्षे हरितालमय्या स्तदेवजातंतिलकक्रि
यायाः ३३ यथाप्रदेशंभुजगेश्वराणां करिष्यतामा
भरणान्तरत्वम् शरीरमात्रंविकृतिंप्रपेदे तथैवत
स्थुःफणरत्नशोभाः ३४ ॥

इतने में ही कैलास पर्वत पर ब्राह्मी आदि माताओं ने आदर से प-
हिले विवाह के योग्य उत्तम भूषण और वस्त्र सारे महादेव के साम-
ने लेआकर रखे ३० ब्राह्मी आदि माताओं के आदर से महादेव
ने उस भूषण आदि शोभा की सामग्री को केवल हाथ से छू दि
या धारण नहीं किया किंतु ईश्वर का सर्प भस्म आदि वही वेश
सुंदर भूषण वस्त्र बनगया ३१ भस्म ही चंदन का श्वेत लेपन क
पाल ही बहुत सुंदर मुकुट और हाथी का चर्म ही हंस की नाईं
शुक्लवर्ण दुकूल (ऊपर का वस्त्र) बन गया ३२ ललाट की अ
स्थि में प्रकाशमान मध्य में स्थित पीत वर्ण की तारा से युक्त म
हादेव का तीसरा नेत्र ही हरिताल मय तिलक मालूम होने ल
गा ३३ अपने अपने पहिले स्थान में ही स्थित नागराजो आदि म
हा सर्पो ने जब कुंडल आदि भूषणों का स्वरूप धारण किया तो
केवल उन के शरीर ही मणियों से स्वर्ण बन गये और फणों के
रत्न तो उसी भांति जड़े रहे ३४ ॥

दिवापि निष्ठ्यूतमरीचिभासा बाल्यादनाविष्कृत
लाञ्छनेन चन्द्रेण नित्यं प्रतिभिन्नमौले श्चूडाम-
णेः किं ग्रहणं हरस्य ३५ इत्यद्भुतैकप्रभवः प्रभावा
त् प्रसिद्धनेपथ्यविधेर्विधाता आत्मानमासन्न-
गणोपनीते खड्गे निषिक्तप्रतिमं ददर्श ३६ सगो
पतिं नन्दिभुजावलम्बी शार्दूलचर्मान्तरितोरुपृ
ष्ठम् तद्भक्तिसंक्षिप्तबृहत्प्रमाणमारुह्य कैलास-
मिव प्रतस्थे ३७ तं मातरो देवमनुव्रजन्त्यः स्ववाह
नक्षोभचलावतंसाः मुखैः प्रभामण्डलरेणुगौ
रैः पद्माकरं चक्रुरिवान्तरीक्षम् ३८ तासां च पश्चा
त्कनकप्रभाणां काली कपालाभरणा चकाशे
बलाकिनी नीलपयोदराजी दूरं पुरः क्षिप्तशत-
ह्रदेव ३९ ॥

दिन में भी बहुत प्रकाशमान छोटी एक कला ही होने से कलंक र-
हित चंद्रमा के सदा मस्तक पर स्थित होने से महादेव को अन्य चू-
डामणि धारने की क्या अपेक्षा है ३५ इस भांति अपनी सामर्थ्य से
प्रसिद्ध उत्तम शृंगारों के कर्ता और अद्भुत सामर्थ्य के समुद्र महादेवने
खड्ग में प्रतिबिंबित अपना स्वरूप देखा ३६ नंदिकेश्वर की भुजाके
अवलंब से वह महादेव भक्ति से अपने विस्तार का बहुत संक्षेप क
रके आप कैलास पर्वत की नाईं श्वेत वहाँ बड़े बैल की पीठ के च
र्म से छाई विस्तृत पीठ पर चढ़ के चले ३७ महादेव के पीछे
पीछे जाती और अपने वाहनों के चलने से कुंडल आदि भूषणों
को चलाती ब्राह्मी आदि माताओंने तेजों के मंडल से अरुणा (लाल)
मुखों के द्वारा आकाश को कमलों का आकर (खानि) बना दिया ३८
स्वर्ण के तुल्य तेजवाली ब्राह्मी आदि माताओं से पीछे कपालों के भू
षण पहिने महाकाली बहुत दूर आगे चमकती बिजली के पीछे आ
ती, उड़ते बगलों की पंक्ति से मनोहर नीले मेघों की घटा के समा
न शोभित हुई ३९ ॥

ततोगणैः शूलभृतः पुरोगैरुदीरितोमङ्गलतूर्य-
घोषः विमानशृङ्गाण्यवगाहमानः शशंस
सेवावसरं सुरेभ्यः ४० उपाददे तस्य सहस्ररश्मि
स्त्वष्ट्रा नवं निर्मितमातपत्रम् स तद्दुकूलादवि
दूरमौलि र्बभौ पतद्गङ्ग इवोत्तमाङ्गे ४१ मूर्ते च
गङ्गायमुने तदानीं सचामरे देवमसेविषाताम्
समुद्रगारूपविपर्ययेऽपि सहंसपाते इव लक्ष्य
माणे ४२ तमभ्यगच्छत्प्रथमो विधाता श्रीवत्स
लक्ष्मा पुरुषश्च साक्षात् जयेति वाचा महिमानम
स्य संवर्धयन्तौ हविषेव वह्निम् ४३ एकैव मूर्ति
र्बिभिदे त्रिधा सा सामान्यमेषां प्रथमावरत्वम् वि
ष्णोर्हरस्तस्य हरिः कदाचित् वेधास्तयोस्तावपि
धातुराद्यौ ४४ ॥

इस से अनंतर महादेव के प्रमथ गणों से बजाए मृदंग तुरी आदि बाजों के शब्द ने आकाश जाते विमानों के शिखरों तक पहुंच के देवताओं को सेवा का समय बताया ४० विश्वकर्मा के बनाए नये छत्र को सूर्य ने आकर धारण किया और इस छत्र के सिर पर लमकते गंगा की धारा के तुल्य श्वेत (दुकूल) वस्त्रों से महादेव बहुत शोभित हुए ४१ और मनुष्य का अति सुंदर रूप धार के श्वेत चामर हाथ में लिये नदी का रूप त्यागने पर भी उड़ते हंसों से सुंदर प्रतीत होतीं गंगा और यमुना ने आकर महादेव की सेवा की ४२ घृत आदि हवन की सामग्री से आग की नाईं जय जय शब्द से महादेव की महिमा को बढ़ाते साक्षात् ब्रह्मा और विष्णु सामने आए ४३ एकही परब्रह्म की ब्रह्मा, विष्णु और महादेव ये तीन मूर्तियां सत्व, रज और तम नामी गुणों के भेद से प्रतीत होती हैं इसी से इन तीनों में न्यूनता वा अधिकता किसी में नियत नहीं है कभी विष्णु से शिव कभी शिव से विष्णु कभी इन दोनों से ब्रह्मा और कभी ब्रह्मा से ये दोनों (ब्रह्माविष्णु) प्रगट होते हैं ४४ ॥

तं लोकपालाः पुरुहूतमुख्याः श्रीलक्षणोत्सर्ग
विनीतवेशाः दृष्टिप्रदाने कृतनन्दिसंज्ञा स्तद्दर्शि
ताः प्राञ्जलयः प्रणेमुः ४५ कम्पेन मूर्ध्नः शतप
त्रयोनिं वाचा हरिं वृत्रहणं स्मितेन आलोकमा
त्रेण सुरानशेषान् सम्भावयामास यथाप्रधा-
नम् ४६ तस्मै जयाशीः ससृजे पुरस्तात् सप्तर्षि
भिस्तान् स्मितपूर्वमाह विवाहयज्ञे वितते ऽत्र यू
यमध्वर्यवः पूर्ववृता मयेति ४७ विश्वावसुप्रा
ग्रहरैः प्रवीणैः संगीयमानत्रिपुरावदानः अध्वा
नमध्वान्तविकारलङ्घ्य स्ततार ताराधिपखण्ड
धारी ४८ खे खेलगामी तमुवाह वाहः सशब्द
चामीकरकिङ्किणीकः तटाभिघातादिव लग्न
पङ्के धुन्वन्मुहुः प्रोतघने विषाणे ४९ ॥

छत्र चामर आदि राजचिह्नों के त्यागने से नम्र वेश इंद्र आदि लो
कपालों ने दर्शन के लिये नंदी की बहुत प्रार्थना करने पर उस
के साथ महादेव के सामने हाथ बांधे जा कर प्रणाम की ४५ औ
र महादेव ने सिर के कंपाने से ब्रह्मा का, वाणी से विष्णु का,
थोड़ा हंसने से इंद्र का और दृष्टि से देवताओं का यथायोग्य स
ब का आदर किया ४६ सामने आकर मरीचि आदि सात ऋषि
यों ने जय जय कह कर महादेव को आशीर्वाद दिया और म
हादेव ने हंस कर इन्हें कहा कि विस्तृत इस विवाह यज्ञ में अध्व
र्यु बनने की प्रार्थना में पहिले ही आपसे कर चुका हूं ४७ चंद्र
मा की कला धारे, मोह के राग आदि विकारों से रहित महादेव उ
त्तम, वीणा बजाते विश्वावसु आदि गंधर्वों से त्रिपुर वध के चरि
त्र का गीत सुनते सुनते मार्ग लंघ गये ४८ मृत्तिका खोदने से ल
गे पंक (कीचड़) की नाईं मेघों से लिपटे सींगों को बार बार कंपा
ता, चलने में बहुत सुंदर ठनकती सोने की किंकिणी (तड़ा
गी) पहिने नंदी महादेव को उठा कर आकाश में चला ४९ ॥

स प्रापदप्राप्तपराभियोगं नगेन्द्रगुप्तं नगरं मुहू-
र्तात् पुरोविलग्नैर्हरदृष्टिपातैः सुवर्णसूत्रैरिव कृ-
ष्यमाणः ५० तस्योपकण्ठे घननीलकण्ठः कु-
तूहलादुन्मुखपौरदृष्टः स्वबाणचिह्नादवती-
र्य मार्गादासन्नभूपृष्ठमियाय देवः ५१ तमृद्धि-
मद्बन्धुजनाधिरूढैर्वृन्दैर्गजानां गिरिचक्रवर्ती
प्रत्युज्जगामागमनप्रतीतः प्रफुल्लवृक्षैः कटकै-
रिव स्वैः ५२ वर्गावुभौ देवमहीधराणां द्वारे पु-
रस्योद्घटितापिधाने समीयतुर्दूरविसर्पिघोषौ भि-
न्नैकसेतू पयसामिवौघौ ५३ ह्रीमानभूद्भूमिधरो
हरेण त्रैलोक्यवन्द्येन कृतप्रणामः पूर्वं महिम्ना
स हि तस्य दूरमावर्जितं नात्मशिरो विवेद ५४ ॥

सुवर्ण के सूत्रों की नाईं पहिले हि नगर तक पहुंचे शिव के दृ-
ष्टि सूत्रों से खिंचा हुआ वह नदी हिमालय से रक्षित और शत्रुओं
से न प्राप्त होने योग्य ओषधिप्रस्थ को दो घड़ी में प्राप्त हुआ ५०
दर्शन की उत्कंठा से ऊपर को मुह उठाए नागर जनों से देखा औ-
र कंठ में नये मेघ की नाईं नीलवर्ण वह महादेव आकाश मार्ग
से उतर के ओषधिप्रस्थ की समीप भूमि पर प्राप्त हुआ ५१ मह-
देव का आगमन सुन के वह सब पर्वतों का राजा हिमालय
फूलों से भरे अपने शिखरों की नाईं बड़े बड़े धनी संबंधियों को
चढ़ा हाथियों की सेना साथ लिये आगे से लेने गया ५२ कपा-
ट खुले उस नगर द्वार पर एक सेतु (पुल) तोड़ने से जलों के दो
प्रवाहों की नाईं देवताओं और पर्वतों के समूह शंख नरी आदि के
बड़े बड़े शब्द करते एक बारगी वहां पहुंचे ५३ त्रिलोकी में सब
के प्रणाम करने योग्य महादेव को प्रणाम करते देख के हिमा-
लय लज्जित हुआ परंत उस की महिमा से पहिले हि बहुत
नया हुआ अपना सिर उसने नहीं जाना ५४ ॥

स प्रीतियोगाद्विकसन्मुखश्री जामातुरग्रेसरता
मुपेत्य प्रावेशयन्मन्दिरमृद्धमेन मागुल्फकीर्णा
पणमार्गपुष्पम् ५५ तस्मिन्मुहूर्ते पुरसुन्दरी-
णा मीशानसन्दर्शनलालसानाम् प्रासादमा
लासु बभूवुरित्थं त्यक्तान्यकार्याणि विचेष्टिता
नि ५६ आलोकमार्गं सहसा व्रजन्त्या कयाचि
दुद्वेष्टनवान्तमाल्यः बन्धुं न सम्भावित एव ता
वत् करेण रुद्धोऽपि च केशपाशः ५७ प्रसाधि
कालम्बितमग्रपाद माक्षिप्य काचिद्द्रवरागमे
व उत्सृष्टलीलागतिरागवाक्षा दलक्तकाङ्कां प
दवीं ततान ५८ विलोचनं दक्षिणमञ्जनेन स
म्भाव्य तद्वञ्चितवामनेत्रा तथैव वातायनसन्नि
कर्षं ययौ शलाकामपरां वहन्ती ५९ ॥

प्रेम की अधिकता से बहुत प्रसन्न वह हिमालय जामा-
ता के आगे मार्ग दिखाता दिखाता पाओं की गांठ तक फूलों
से भरे और औषधि प्रस्थ के अंदरले मार्ग में महादेव को ले
आया ५५ उस समय महादेव के दर्शन करने में बहुत अभिला-
षित नगर की स्त्रियां प्रासादों (महलों) की पंक्तियों पर सब
काम छोड़ छोड़ एक टक इस भांति महादेव को देखने ल-
गीं ५६ महादेव को देखने अति शीघ्र गवाक्ष पर जाती किसी
स्त्री ने बंधन के खुलने से फूलों के गिरने पर भी केश हा-
थों में ही पकड रक्खे और बांधे नहीं ५७ लाख के रंग से पाओं
रंगाती दासी से गीले ही पाओं छीन के अति शीघ्र गवाक्ष पर जा-
ती किसी स्त्रीने गवाक्ष तक मार्ग में लाख के रंग के चिह्नों की
पंक्ति बांधदी ५८ और एक स्त्री दहिनी आंख में अंजन डाल-
के बाईं आंख में डालने से बिना ही सलाई हाथ में लिये गवा-
क्ष पर जा पहुंची ५९ ॥

जालान्तरप्रेषितदृष्टिरन्या प्रस्थानभिन्नांनब
बन्धनीवीम् नाभिप्रविष्टाभरणप्रभेण हस्तेन
तस्थाववलम्ब्य वासः ६० अर्धाचिता सत्वरमु-
त्थितायाः पदेपदे दुर्निमिते गलन्ती कस्याश्चि
दासीद्रशना तदानी मङ्गुष्ठमूलार्पितसूत्रशेषा
६१ तासां मुखैरासवगन्धगर्भैर्व्याप्तान्तराः सान्द्र
कुतूहलानाम् विलोलनेत्रभ्रमरैर्गवाक्षाः सह
स्रपत्राभरणाइवासन् ६२ तावत्पताकाकुलमि
न्दुमौलिरुत्तोरणंराजपथंप्रपेदे प्रासादशृङ्गा-
णिदिवाऽपिकुर्वन् ज्योत्स्नाभिषेकद्विगुणद्युती
नि ६३ तमेकदृश्यंनयनैःपिबन्त्यो नार्योनजग्मु
र्विषयान्तराणि तथाहिशेषेन्द्रियवृत्तिरासां स
र्वात्मना चक्षुरिवप्रविष्टा ६४ ॥

और दूसरी स्त्री खुल के स्थान से ढिली हुई धोती की गांठ को ना
भि में भूषणों के किरण पहुंचाते हाथ से पकड़े बिना बांधे ही
गवाक्ष में देखती खड़ी रही ६० उस समय अति शीघ्र उठ के देख
ने जाती किसी स्त्री की आधी पोई माला का वेग से पाउं पाउं के
फेंकने से मणियों के गिरने पर पाउं के अंगूठे में बंधा सूत ही
शेष रह गया ६१ बहुत उत्कंठित उन स्त्रियों के मद्य के गंध से भ
रे, भौरों के तुल्य चंचल नेत्रों से शोभित,, मुखों से भरे हुए गवा
क्ष खिले हुए कमलों से भूषित मालूम होते थे ६२ इतने में ही
दिन में भी चंद्रमा की किरणों से प्रासादों (महलों) के शिखरों की
दूनी शोभा बढ़ाते महादेव बहुत ऊंची ध्वजाओं और तोरणों से
शोभायमान राजमार्ग में पहुंचे ६३ अति सुंदर उस महादेव को
नेत्रों से पान करती स्त्रियों ने उस समय और कोई विषय शब्द स्प
र्श आदि नहीं ग्रहण किया इस से प्रतीत हुआ कि श्रोत्र आदि स
ब इंद्रियों के व्यापार चक्षु में ही आगये थे ६४ ॥

स्थाने तपो दुश्चरमेतदर्थं मपर्णया पेलवयापि तप्तम् यादास्यमप्यस्य लभेत नारी सास्यात्कृतार्था किमुताङ्कशय्याम् ६५ परस्परेण स्पृहणीयशोभं न चेदिदं द्वन्द्वमयोजयिष्यत् अस्मिन्द्वये रूपविधानयत्नः पत्युःप्रजानां विफलोऽभविष्यत् ६६ न नूनमारूढरुषा शरीरमनेन दग्धं कुसुमायुधस्य व्रीडादमुं देवमुदीक्ष्य मन्ये सन्यस्तदेहः स्वयमेव कामः ६७ अनेन सम्बन्धमुपेत्य दिष्ट्या मनोरथप्रार्थितमीश्वरेण मूर्द्धानमालि क्षितिधारणोच्च मुच्चैस्तरं वक्ष्यति शैलराजः ६८ इत्यौषधिप्रस्थविलासिनीनां शृण्वन्कथाः श्रोत्रसुखास्त्रिनेत्रः केयूरचूर्णीकृतलाजमुष्टिं हिमालयस्यालयमाससाद ६९ ॥

अति सुकुमार शरीर से भी पार्वती ने महादेव के लिये बहुत कठिन तपस्या की यह बात योग्य ही थी क्यों कि जो स्त्री इन की दासी बन जावे तो वह कृतार्थ होजाती है और जो इनके अंक (गोद) में सोती है उस के कृतार्थ होने में क्या संदेह है ६५ परस्पर प्रशंसा के योग्य यह स्त्री पुरुष का संबंध जो कभी ब्रह्मा न करवाता तो इन दोनों के अति सुंदर रूप उपजाने में ब्रह्मा का यत्न व्यर्थ होजाता ६६ यह बात हमें निश्चित प्रतीत होती है कि कामदेव के शरीर को महादेव ने क्रोध की अग्नि से नहीं भस्म किया किंतु शिवजी का सौंदर्य देख के काम ने लज्जा से आप ही देह त्याग दिया है ६७ कोई बोली कि यह बहुत आनंद हुआ है जो इस परमेश्वर के साथ वांछित संबंध को प्राप्त होके हिमालय आज से पृथ्वी धारने से ऊंचे शिखरों को बहुत ही ऊंचे धारेगा ६८ इस भांति औषधिप्रस्थ में कानों को सुख देती स्त्रियों की बातें सुनते २ महादेव कन्याओं से फेंकी लाजा भी जहां केयूरों से चूर्ण हुए बिना भूमि पर नहीं गिरतीं ऐसे देवताओं और भक्तों से भरे हिमालय के घर में पहुंचे ६९ ॥

तत्रावतीर्य्याच्युतदत्तहस्तः शरद्घनाद्दीधितिमा
निवोत्तः क्रान्तानि पूर्वं कमलासनेन कक्ष्यान्तरा
ण्यद्रिपतेर्विवेश ७० तमन्वगिन्द्रप्रमुखाश्च देवाः
सप्तर्षिपूर्व्वाः परमर्षयश्च गणाश्च गिर्य्यालयमभ्य
गच्छन् प्रशस्तमारम्भमिवोत्तमार्थाः ७१ तत्रेश्वरो वि
ष्टरभाग्यथावत् सरत्नमर्घ्यं मधुमच्च गव्यम् नवेदु
कूले च नगोपनीतं प्रत्यग्रहीत्सर्वममन्त्रवर्जम् ७२
दुकूलवासाः स वधूसमीपं निन्ये विनीतैरवरोधद
क्षैः वेलासमीपं स्फुटफेनराजि र्नवैरुदन्वानिव च
न्द्रपादैः ७३ तया प्रवृद्धाननचन्द्रकान्त्या प्रफुल्लच-
क्षुः कुमुदः कुमार्य्या प्रसन्नचेतः सलिलः शिवोऽभू
त् संसृज्यमानः शरदेव लोकः ७४ ॥

वहां शरत् ऋतु के मेघ से सूर्य की नाईं विष्णु भगवान का हाथ प-
कड़े नंदी से उतर के महादेव ब्रह्मा जी के पीछे २ सब द्वार लंघ के हि
मालय के अंदर गये ७० महादेव से पीछे इंद्रादि देवता उनके पीछे
सप्तर्षि आदि बड़े बड़े ऋषीश्वर और इन के पीछे सारे प्रमथ गण सफ
ल प्रारंभ में उत्तम अर्थों की नाईं हिमालय के घर में सब गये ७१
वहां आसन पर बैठ के महादेव ने विधिपूर्वक मंत्र पढ़ के हिमा-
लय के अर्पण किये रत्नों से भरा अर्घ, मधुपर्क और नये दो वस्त्र
ले लिये ७२ अंतःपुर के कामों में चतुर भलीभांति शिक्षित भृ-
त्य महादेव को पार्वती के पास ले गये जैसे नये चंद्रमा के किरण
जाल से भरे समुद्र को तीर पर पहुंचाते हैं ७३ पूर्ण चंद्रमा के समा
न अतिसुंदर पार्वती का मुख देख के महादेव के कुमुद के तुल्य
नेत्र खिल गये और शरद ऋतु से जलों की नाईं शिवजी का
अंतःकरण अतिनिर्मल (प्रसन्न) हुआ ७४ ॥

तयोः समापत्तिषुकातराणि किञ्चिद्व्यवस्थापि
तसंहृतानि ह्रीयन्त्रणांतत्क्षणमन्वभूव न्नन्योन्य
लोलानिविलोचनानि ७५ तस्याः करंशैलगुरू
पनीतं जग्राहताम्राङ्गुलिमष्टमूर्त्तिः उमातनौगू
ढतनोःस्मरस्य तच्छङ्किनःपूर्वमिवप्ररोहम्
७६ रोमोद्गमःप्रादुरभूदुमायाः स्विन्नाङ्गुलिःपुङ्ग
वकेतुरासीत् वृत्तिस्तयोःपाणिसमागमेन सम-
विभक्तेवमनोभवस्य ७७ प्रयुक्तपाणिग्रहणंय
दन्य द्वधूवरंपुष्यतिकान्तिमग्र्याम् सान्निध्ययो
गादनयोस्तदानीं किंकथ्यतेश्रीरुभयस्यतस्य
७८ प्रदक्षिणप्रक्रमणात्कृशानो रुदर्चिषस्तन्मि
थुनंचकाशे मेरोरुपान्तेष्विववर्त्तमान मन्योन्यसं
सक्तमहस्त्रियाम् ७९ ॥

स्वभाव से मिलजाने में कातर थोड़े स्थिर कर के हटाए हुए महा
देव और पार्वती के चंचल नेत्र परस्पर लज्जा से संकुचित हुए ७५
महादेव से डर कर पार्वती के शरीर में छिपे हुए कामदेव के पहि
ले अंकुर की नाईं दान कर दिया पार्वती का ताम्रवर्ण पाणि (हा-
थ) पुरोहित की आज्ञा से महादेव ने ग्रहण किया ७६ पाणिग्र-
हण (विवाह) के समय पार्वती का शरीर रोमांचित हुआ और महा
देव के हाथ में अंगुलियों तक पसीना आगया मानों एक क्षण में
ही दोनों के चित्तों में काम की अवस्था प्रगट हुई ७७ विवाह के स
मय महादेव और पार्वती की समीपता से साधारण वहू वर भी अ-
ति मनोहर शोभा को प्राप्त होते है तो साक्षात् गौरी वहू और शंक-
र वर इन की शोभा क्या ही कहें ७८ बड़ी बड़ी ज्वालाओं से व्याप्त
अग्नि की परिक्रमा करने से महादेव और पार्वती सुमेरु पर्वत के
पास वर्तमान आपस में मिले हुए दिन रात की नाईं शोभित
हुए ७९ ॥

तौ दम्पती त्रिः परिणीय वह्नि मन्योन्यसंस्पर्शनिमीलिताक्षौ स कारयामास वधूं पुरोधास्तस्मिन्समिद्धार्चिषि लाजमोक्षम् ८० सा लाजधूमाञ्जलिमिष्टगन्धं गुरूपदेशाद्वदनं निनाय कपोलसंसर्पिशिखः स तस्या मुहूर्तकर्णोत्पलतां प्रपेदे ८१ तदीषदार्द्रारुणगण्डलेख मुच्छ्वासिकालाञ्जनरागमक्ष्णोः वधूमुखं क्लान्तयवावतंस माचारधूमग्रहणाद्बभूव ८२ वधूं द्विजः प्राह तवैष वत्से वह्निर्विवाहं प्रति कर्मसाक्षी शिवेन भर्त्रा सह धर्मचर्या कार्या त्वया मुक्तविचारयेति ८३ आलोचनान्तं श्रवणे वितत्य पीतं गुरोस्तद्वचनं भवान्या निदाघकालोल्बणतापयेव माहेन्द्रमम्भः प्रथमं पृथिव्या ८४ ॥

परस्पर स्पर्श के सुख से आंखें मीचे वे स्त्री पुरुष जब अग्नि की तीन परिक्रमा कर चुके तो पुरोहित ने उस प्रज्वलित अग्नि में बहू (पार्वती) से लाजा (खीलिया) फेंकवाई ८० पुरोहित की आज्ञा से पार्वती ने अपना मुख मनोहर गंधि से युक्त लाजा के धूम के सामने किया कपोलों तक शिखा पहुंचने से वह धूम दो घड़ी कान में पहिने नीलकमल की नाईं शोभित हुआ ८१ इस आचार धूम के लेने से पार्वती के कपोलों पर पसीने में लाल रेखा मालूम हुई, आंखों से काला अंजन बह पड़ा और कानों में पहिने यवों के अङ्कुर मुरझाये ८२ पुरोहित ने पार्वती से कहा कि हे पुत्रि यह अग्नि तेरे विवाह कर्म में साक्षी है इससे अपने स्वामी महादेव के साथ तुझे सब विचार छोड़ के धर्म आचरण करना चाहिये ८३ पार्वती ने गुरु (पुरोहित) की यह बात आंखों तक कान फैला के भली भांति सुनी जैसे ग्रीष्म के समय बहुत तपी भूमि वर्षा के पहिले जल को पी जाती है ८४ ॥

ध्रुवेण भर्त्रा ध्रुवदर्शनाय प्रयुज्यमाना प्रिय
दर्शनेन सा दृष्ट इत्याननमुन्नमय्य ह्रीसन्नक
ण्ठी कथमप्युवाच ८५ इत्थं विधिज्ञेन पुरोहितेन
प्रयुक्तपाणिग्रहणोपचारौ प्रणेमतुस्तौ पितरौ
प्रजानां पद्मासनस्थाय पितामहाय ८६ वधूर्वि
धात्रा प्रतिनन्द्यते स्म कल्याणि वीरप्रसवा भवेति
वाचस्पतिः सन्नपि सोऽष्टमूर्तौ त्वाशास्यचिन्ता-
स्तिमितो बभूव ८७ क्लृप्तोपचारां चतुरस्रवेदीं
तावेत्य पश्चात्कनकासनस्थौ जायापती लौकि
कमेषणीय मार्द्राक्षतारोपणमन्वभूताम् ८८
पत्रान्तलग्नैर्जलबिन्दुजालै राकृष्टमुक्ताफल
जालशोभम् तयोरुपर्यायतनालदण्ड माध
त्तलक्ष्मीः कमलातपत्रम् ८९ ॥

मनोहर मूर्ति उत्पत्ति और विनाश से रहित भर्त्ता (महादेव) की प्रे
रणा से ध्रुव देखने के लिये मुख को ऊपर उठाके लज्जा करके कुं
ठे कण्ठ से पार्वती ने बहुत श्रम से यह कहा कि देख लिया ८५ वि
वाह आदि कर्म कराने में चतुर पुरोहित ने जब इस भांति विवाह सम
प्त किया तो जगत के माता और पिता गौरी शंकर ने पद्मासन पर बै
ठे ब्रह्मा को प्रणाम की ८६ ब्रह्मा ने बहू (पार्वती) को यह आशी
र्वाद दिया कि तू शूर वीर पुत्र को उत्पन्न कर परन्तु वाणी का स्वामी
भी ब्रह्मा महादेव को आशीर्वाद देने के लिये कुछ न विचार सका ८७ इस
के अनंतर पुष्पों की अनेक रचनाओं से शोभित चार कोण की वेदी
में आ के स्वर्ण के आसन पर बैठे स्त्री और पुरुष (गौरी शंकर) ने हर्षे
से लौकिक आशीर्वाद पढ़ के दिये आर्द्र (गीले) अक्षत ग्रहण किये
८८ पत्तों की सीमाओं पर लगे बिंदुओं से मोतिओं की डोर लंबे नाल
से दंड की शोभा को खेंचते कमल को पार्वती और महादेव के
ऊपर छत्र की नांई लक्ष्मी ने अपने हाथ से धारण किया ८९ ॥

द्विधाप्रयुक्तेन च वाङ्मयेन सरस्वती तन्मिथुनं
नुनाव संस्कारपूतेन वरं वरेण्यं वधूं सुखग्राह्य
निबन्धनेन ९० तौ सन्धिषु व्यञ्जितवृत्तिभेदं र
सान्तरेषु प्रतिबद्धरागम् अपश्यतामप्सरसां मु
हूर्तं प्रयोगमाद्यं ललिताङ्गहारम् ९१ देवास्त
दन्ते हरमूढभार्यं किरीटबद्धाञ्जलयो निपत्य
शापावसाने प्रतिपन्नमूर्तेर्ययाचिरे पञ्चशरस्य
सेवाम् ९२ तस्यानुमेने भगवान्विमन्युर्व्यापारमा
त्मन्यपि सायकानाम् काले प्रयुक्ता खलु कार्यवि
द्भिर्विज्ञापना भर्तृषु सिद्धिमेति ९३ अथ विबुध-
गणांस्तानिन्दुमौलिर्विसृज्य क्षितिधरपतिकन्या
माददानः करेण कनककलशरक्षाभक्तिशोभासना
थं क्षितिविरचितशय्यं कौतुकागारमागात् ९४

सरस्वती ने दो भांति की वाणी से इन दोनों (स्त्रीपुरुष) की स्तुति की
अर्थात् प्रकृति प्रत्यय से सिद्ध संस्कृत वाणी से वर (महादेव) को और
सुख से समझने योग्य प्राकृत से वधू (पार्वती) का स्तव किया ९०
मुख प्रतिमुख आदि संधियों में कैशिकी आदि वृत्तियों को प्रकट करते
शृंगार आदि रसों के योग्य पृथक् पृथक् राग मनोहर अंग फेंक
फेंक गाती अप्सराओं का नाटक दो घड़ी गौरी और महादेव ने देखा
९१ नाटक से पीछे सारे देवताओं ने सिर पर अंजलियें बांध विवाही
वधू लिये जाते महादेव को प्रणाम कर के शाप के अंत में शरीर
धारी काम की सेवा का स्वीकार शिव जी से मांगा ९२ क्रोध रहित
महादेव ने कामदेव के बाणों का व्यापार अपने में भी मान लिया क्यों-
कि बुद्धिमान पुरुष अवसर देख के जो प्रार्थना स्वामी के पास करते
हैं वह सफल ही हो जाती है ९३ इतने में ही सब देवताओं को विदा
कर के पार्वती का हाथ पकड़ चंद्रमौलि (महादेव) स्वर्ण के कल
शों, अनेक भांति की फूलों की रचनाओं और भूमि पर बिछी शय्या
से शोभायमान कौतुकागार (सोने के घर) में गये ९४ ॥

नवपरिणयलज्जाभूषणांतत्रगौरीं वदनमप
हरन्तींतत्कृताक्षेपमीशः अपिशयनसखीभ्यो
दत्तवाचंकथंचित् प्रमथमुखविकारैर्हासया
मासगूढम् ९५ ॥ इतिश्रीकालिदासकृ-
तौमहाकाव्येउमाप्रदानोनामसप्तमः सर्गः ७ ॥

उस कौतकागार में ईश्वर (महादेव) ने नये विवाह की लज्जा से भूषित, स्वामि के हाथ से ऊपर उठाए मुख को तिरछे घुमाय कर प्यारी सखियों को बड़े क्लेश से उत्तर देती पार्वती को गणों के अति विलक्षण टेढ़े मेढ़े मुंह दिखा कर छल से हंसा दिया ९५ ॥ इति पं. सरबदयालु का बनाया कुमारसंभव के सातवें सर्ग का हिंदी में अनुवाद समाप्त हुआ ॥